مَا كَانَ مُحَمَّدٌ أَبَا أَحَدٍ مِنْ رِجَالِكُمْ وَلَكِنْ رَسُولَ اللَّهِ وَخَاتَمَ النَّبِيِّينَ (سورة الأحزاب 40)

सीरतुन नबी के मुख्तलिफ पहलू

डाक्टर मौलाना मोहम्मद नजीब क़ासमी

Dr. Maulana Mohammad Najeeb Qasmi

www.najeebqasmi.com

ما كانَ مُحَمَّدٌ أَبا أَحَدٍ مِنْ رِجالِكُمْ وَلكِنْ رَسُولَ اللَّهِ وَخاتَمَ النَّبِيِّينَ

(سورة الأحزاب 40)

सीरतुन नबी के मुख्तलिफ पहलू

डाक्टर मौलाना मोहम्मद नजीब क़ासमी

www.najeebqasmi.com

All rights reserved
सभी अधिकार लेखक के लिये सुरक्षित हैं

सीरतुन नबी के मुख्तलिफ पहलू
Diverse Aspects of Seerat-un-Nabi

By
डाक्टर मौलाना मोहम्मद नजीब क़ासमी
Dr. Mohammad Najeeb Qasmi

http://www.najeebqasmi.com/
MNajeeb Qasmi - Facebook
Najeeb Qasmi - YouTube
Skype: najeebqasmi
Whatsapp: 00966508237446

पहला हिंदी संस्करण: मार्च 2016

Address for Gratis Distribution मुफ़्त मिलने का पताः
Dr. Mohammad Mujeeb, Deepa Sarai, Sambhal, UP (2044302) India
डा. मोहम्मद मुजीब, दीपा सराय, सभंल, यूपी, इण्डिया (244302)

विषय-सूची

क्र.	विषय	पेज नं
1	प्रस्तावना: मोहम्मद नजीब क़ासमी संभली	5
2	मुखबंध: हज़रत मौलाना अबुल क़सिम नोमानी	8
3	मुखबंध: मौलाना मोहम्मद असरारूल हक़ क़ासमी	9
4	मुखबंध: प्रोफेसर अखतरूल वासे साहब	10
5	वह नबियों में रहमत लक़ब पाने वाला	11
6	रहमतुल लिल आलमीन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सीरत रब्बुल आलमीन की ज़बानी	24
7	क़ुरान करीम में चार जगह हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नाम (मोहम्मद) का ज़िक्र	25
8	क़ुरान करीम में एक जगह हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नाम (अहमद) का ज़िक्र	26
9	हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम साहबे हौज़े कौसर	27
10	हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दरूद व सलाम	27
11	हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का फरमान अल्लाह का फरमान है	28
12	हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की लोगों की हिदायत की फिक्र	29
13	हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का उसवए हसना बनी नौए इंसान के लिए	31

14	हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नमाज़	34
15	हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अखलाक़	36
16	हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की घरेलू ज़िन्दगी	37
17	हुज़ूर अकरम सललल्लाहु अलैहि वसल्लम आखिरी नबी है	41
18	बेमिसाल अदीब अरबी हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जवामिउल कलिम (अकवाले ज़र्रीं)	47
19	मुख्तसर सीरते नबवी	58
20	नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अज़वाजे मुतहहरात	63
21	50 से 60 साल की उम्र में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने चंद निकाह किए जिनके सियासी व दीनी व इजतिमाई चंद असबाब यह हैं।	74
22	नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की औलाद	77
23	लिबासुन नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम	83
24	अमामा अमामा या टोपी पहनना नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत व आदते करीमा	102
25	हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शान में गुस्ताखी नाकाबिले बर्दाश्त	120
26	लेखक का परिचय	126

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمنِ الرَّحِيْم
اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْن،وَالصَّلاة وَالسَّلامُ عَلَى النَّبِيِّ الْكَرِيم وَعَلىٰ آله وَاَصْحَابه اَجْمَعِيْن.

प्रस्तावना

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम न सिर्फ आखरी नबी हैं बल्कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत अंतरराष्ट्रीय भी है, यानी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम क़बिला कुरैश या अरबों के लिए नहीं बल्कि पुरी दुनिया के लिए, इसी तरह सिर्फ उस ज़माना के लिए नहीं जिसमें आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पैदा हुए बल्कि क़ियामत तक आने वाले तमाम इंसान व जिन्नात के लिए नबी व रसूल बना कर भेजे गए। क़ुरान व हदीस की रौशनी में उम्मते मुस्लिमा खास कर उलमा-ए-दीन की ज़िम्मेदारी है कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफात के बाद दीने इस्लाम की हिफाज़त करके क़ुरान व हदीस के पैगाम को दुनिया के कोने कोने तक पहुंचाऐं। चूनांचे उलमा-ए-कराम ने अपने अपने ज़माने में मुख़्तलिफ़ तरीक़ों से इस ज़िम्मेदारी को अंजाम दिया। उलमा-ए-कराम की क़ुरान व हदीस की खिदमात को भुलाया नहीं जा सकता है और इंशा अल्लाह उलमा-ए-कराम की इल्मी खिदमात से कल क़ियामत तक इस्तिफादा किया जाता रहेगा। अब नई टेक्नोलॉजी (वेबसाइट, वाटस ऐप, मोबाइल ऐप, फेसबुक और यूट्यब वगैरह) को दीने इस्लाम की खिदमात के लिए उलमा-ए-कराम ने इस्तेमाल करना शुरू तो कर दिया है मगर इसमें मज़ीद काम करने की सख्त ज़रूरत है।

अलहमदु लिल्लाह बाज़ दोस्तों की टेक्निकल समर्थन और बाज़ मुहसिनीन के माली योगदान से हमने भी दीने इस्लाम की खिदमात के लिए नई टेक्नोलॉजी के मैदान में घोड़े दौड़ा दिए हैं ताकि इस

अंतरिक्ष (जगह) को एसी ताक़तें पुर न कर दें जो इस्लाम और मुस्लमानों के लिए नुक़सानदेह साबित हों। चूनांचे 2013 में वेबसाइट (www.najeebqasmi.com) लांच की गई, 2015 में तीन ज़बानों में दुनिया की पहली मोबाइल ऐप (**Deen-e-Islam**) और फिर दोस्तों के तक़ाजा पर हाजियों के लिए तीन ज़बानों में खुसूसी ऐप (**Hajj-e-Mabroor**) लांच की गई। हिंदुस्तान और पाकिस्तान के बहुत से उलमा ने दोनों ऐपस के लिए प्रशंसापत्र लिख कर अवाम व ख्वास से दोनों ऐपस से इस्तिफादा करने की दरखास्त की। यह प्रशंसापत्र दोनों ऐपस का हिस्सा हैं। ज़माने की रफ्तार से चलते हुए क़ुरान व हदीस की रौशनी में मुख्तसर दीनी पैगाम खुबसूरत इमेज की शकल में मुख्तलिफ सूत्रों से हज़ारों दोस्तों को पहुंच रहे हैं जो अवाम व ख्वास में काफी मक़बूलियत हासिल किए हुए हैं।

इन दोनों ऐपस (दीने इस्लाम और हज्जे मब्रूर) को तीन ज़बानों में लांच करने के लिये मेरे तक़रीबन 200 मज़ामीन का अंग्रेज़ी और हिन्दी में तर्जुमा करवाया गया। तर्जुमा के साथ ज़बान के माहिरीन से एडिटिंग भी कराई गई। हिन्दी के तर्जुमा में इस बात का ख्याल रखा गया कि तर्जुमा आसान ज़बान में हो ताकि हर आम व खास के लिए इस्तिफादा करना आसान हो।

अल्लाह के फज़ल व करम और उसकी तौफीक़ से अब तमाम मज़ामीन के अंग्रेज़ी और हिन्दी अनुवाद को विषय के एतेबार से किताबी शकल में तरतीब दे दिया गया है ताकि इस्तिफादा आम किया जा सके, जिसके ज़रिया 14 किताबें अंग्रेज़ी में और 14 किताबें हिन्दी में तय्यार हो गई हैं। उर्दू में प्रकाशित 7 किताबों के अलावा 10 नई किताबें छपने के लिए तय्यार कर दी गई हैं।

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सीरत से मुतअल्लिक़

बहुत से मज़ामीन (वह नबियों में रहमत लक़ब पाने वाला, रहमतुल लिल आलमीन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सीरत अल्लाह की ज़बानी, हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आखरी नबी हैं, हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जवामेउल कलिम, हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शान में गुस्ताखी नाक़ाबिले बर्दाशत, मुख्तसर सीरतुन नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम, नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की औलाद व पत्नियों और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का लिबास) किताबी शकल (सीरतुन नबी के मुख्तलिफ पहलू) में तरतीब दिए गए हैं ताकि इस्तिफादा आम हो सके।

अल्लाह तआला से दुआ करता हूं कि इन सारी खिदमात को क़ुबूलियत व मक़बूलियत से नवाज़ कर मुझे, ऐपस की तायीद में लेटर लिखने वाले उलमा-ए-कराम, टेक्निकल सपोर्ट करने वाले अहबाब, माली योगदान पेश करने वाले मुहसिनीन, मुतर्जिमीन, एडिटिंग करने वाले हज़रात खास कर जनाब अदनान महमूद उसमानी साहब, डिज़ाइनर और किसी भी क़िसम से तआवुन पेश करने वाले हज़रात को दोनों जहां की कामयाबी व कामरानी अता फरमाये। आखिर में दारूल उलूम देवबन्द के मुहतमिम हज़रत मौलाना मुफ्ती अबुल क़ासिम नुमानी साहब, मौलाना मोहम्मद असरारूल हक़ क़ासमी साहब (मेंबर ऑफ़ पार्लियामेंट) और प्रोफेसर अखतरूल वासे साहब (लेसानियात के कमिशनर, मंत्रालय अक़लियती बहबूद) का शुक्र गुज़ार हूं कि उन्होंने अपनी मसरूफियात के बावजूद प्रस्तावना लिखा। डॉक्टर शफाअतुल्लाह खान साहब का भी मशकूर हूं जिनकी मेहनतों से यह प्रोजेक्ट मुकम्मल हूआ।

मोहम्मद नजीब क़ासमी संभली (रियाज़)

14 मार्च, 2016 ई॰

(Mufti) Abul Qasim Nomani
Mohtamim (VC) Darul Uloom Deoband

(مفتی) ابو القاسم نعمانی
مہتمم دار العلوم دیوبند، الہند

PIN- 247554 (U.P.) INDIA Tel: 01336-222429, Fax: 01336-222768 E-mail: info@darululoom-deoband.com

Ref. No.....

Date:.....

باسمہ سبحانہ وتعالیٰ

جناب مولانا محمد نجیب قاسمی سنبھلی مقیم ریاض (سعودی عرب) نے دینی معلومات اور شرعی احکام کو زیادہ سے زیادہ اہل ایمان تک پہونچانے کے لئے جدید وسائل کا استعمال شروع کرکے، دینی کام کرنے والوں کے لیے ایک اچھی مثال قائم فرمائی ہے۔

چنانچہ سعودی عرب سے شایع ہونے والے اردو اخبار (اردو نیوز) کے دینی کالم (روشنی) میں مختلف عنوانات پر ان کے مضامین مسلسل شایع ہوتے رہتے ہیں۔ اور موبائل ایپ اور ویب سائٹ کے ذریعہ بھی وہ اپنا دینی پیغام زیادہ سے زیادہ لوگوں تک پہونچا رہے ہیں۔ ایک اچھا کام یہ ہوا ہے کہ زمانہ کی ضرورت کے تحت مولانا نے اپنے اہم اور منتخب مضامین کے ہندی اور انگریزی میں ترجمے کرادیئے ہیں، جو الیکٹرونک بک کی شکل میں جلد ہی لانچ ہونے والے ہیں۔

اور امید ہے کہ مستقبل میں یہ پرنٹ بک کی شکل میں بھی دستیاب ہوں گے۔

اللہ تعالیٰ مولانا قاسمی کے علوم میں برکت عطا فرمائے اور ان کی خدمات کو قبول فرمائے۔ مزید علمی افادات کی توفیق بخشے۔

ابوالقاسم نعمانی غفرلہ
مہتمم دارالعلوم دیوبند
۱۴۳۷/۶/۳ھ

مولانا محمد اسرار الحق قاسمی
Mohammad Asrarul Haque
Member of Parliament
(Lok Sabha)
Ref. No. MP/19/KNR/2016

16, South Avenue, New Delhi-110011
Ph.: 011-23785046 Telefax: 011-23795314
E-mail: mahaqqasm@gmail.com

Date 19/03/2016

تاثرات

عصر حاضر میں دینی تعلیمات کو جدید آلات و وسائل کے ذریعہ عوام الناس تک پہنچانا وقت کا اہم تقاضہ ہے، اللہ کا شکر ہے کہ بعض دینی، معاشرتی اور اصلاحی فکر رکھنے والے حضرات نے اس سمت میں کام کرنا شروع کر دیا ہے، جس کے سبب آج انٹرنیٹ پر دین کے تعلق سے کافی مواد موجود ہے۔ اگر چہ اس میدان میں زیادہ تر مغربی ممالک کے مسلمان سرگرم ہیں لیکن اب ان کے نقشِ قدم پر چلتے ہوئے مشرقی ممالک کے علماء و داعیان اسلام بھی اس طرف متوجہ ہو رہے ہیں جن میں عزیزم ڈاکٹر محمد نجیب قاسمی صاحب کا نام سرفہرست ہے۔ وہ انٹرنیٹ پر بہت سا دینی مواد ڈال چکے ہیں، باضابطہ طور پر ایک اسلامی و اصلاحی ویب سائٹ بھی چلاتے ہیں۔

ڈاکٹر محمد نجیب قاسمی کا قلم رواں دواں ہے۔ وہ اب تک مختلف اہم موضوعات پر سینکڑوں مضامین اور کئی کتابیں لکھ چکے ہیں۔ ان کے مضامین پوری دنیا میں بڑی دلچسپی کے ساتھ پڑھے جاتے ہیں۔ وہ جدید ٹکنالوجی سے بخوبی واقف ہونے کی وجہ سے اپنے مضامین اور کتابوں کو بہت جلد دنیا بھر میں ایسے ایسے لوگوں تک پہنچا دیتے ہیں جن تک رسائی آسان کام نہیں ہے۔ موصوف کی شخصیت علوم دینی کے ساتھ علوم عصری سے بھی آراستہ ہے۔ وہ ایک طرف عالم دین ہیں، تو دوسری طرف ڈاکٹر و محقق بھی اور کئی زبانوں میں مہارت بھی رکھتے ہیں اور اس پر مستزاد یہ کہ وہ فعّال و متحرک نوجوان ہیں۔ جس طرح وہ اردو، ہندی، انگریزی اور عربی میں دینی و اصلاحی مضامین اور کتابیں لکھ کر عوام کے سامنے لا رہے ہیں، وہ اس کے لئے تحسین اور مبارک باد کے مستحق ہیں۔ ان کی شب و روز کی مصروفیات و جدوجہد کو دیکھتے ہوئے ان سے یہ امید کی جا سکتی ہے کہ وہ مستقبل میں بھی اسی مستعدی کے ساتھ مذکورہ تمام کاموں کو جاری رکھیں گے۔ میں دعا گو ہوں کہ باری تعالیٰ ان سے مزید دینی، اصلاحی اور علمی کام لے اور وہ اکابرین کے نقش قدم پر گامزن رہیں۔ آمین!

مخلص

(مولانا) محمد اسرار الحق قاسمی
ایم. پی. لوک سبھا (انڈیا)
وصدر آل انڈیا تعلیمی و ملی فاؤنڈیشن، نئی دہلی
Email:asrarulhaqqasmi@gmail.com

प्रो. अख़्तरूल वासे
आयुक्त
PROF. AKHTARUL WASEY
Commissioner

सत्यमेव जयते

भाषाजात अल्पसंख्यकों के आयुक्त
अल्पसंख्यक कार्य मंत्रालय
भारत सरकार
Commissioner for Linguistic Minorities in India
Ministry of Minority Affairs
Government of India

تقریظ

اطلاعاتی انقلاب برپا ہونے کے بعد جس طرح ہر قسم کی معلومات انٹرنیٹ کے ذریعہ آنکھوں کی دو پتلیوں میں سما گئی ہیں۔ اس نے ''گاگر میں ساگر'' اور ''کوزے میں دریا'' کے تخیلاتی تصورات کو نہ صرف حقیقت بنا دیا ہے بلکہ ان پر ہمارا انحصار روز بروز ناگزیر ہوتا جا رہا ہے۔ گوگل (Google) ہو یا وکی پیڈیا (Wikipaedia) یا پھر دوسری سوشل سائٹس انہوں نے ترسیل وابلاغ کو وہ ہمہ جہت رخ اور رفتار کی تیزی عطا کی ہے کہ فراق وفصل کے تمام تصورات بے معنیٰ ہو کر رہ گئے ہیں۔ لیکن اس اطلاعاتی انقلاب نے ایک پیچیدہ مسئلہ یہ پیدا کر دیا ہے کہ اطلاعات رسانی اور خبروں تک رسائی میں حقائق سے گریز یا ان کو مسخ کرنے کا چلن بھی اس طرح شامل ہو گیا ہے اور اس سچائی کو اسلام اور مسلمانوں سے بہتر کون جانتا ہے۔ دوسرا سنگین مسئلہ یہ ہے کہ باخبر ہونے اور معلومات حاصل کرنے کے لئے اب مطالعہ کی عادت لوگوں میں خاصی کم ہوتی جا رہی ہے۔ کیونکہ موبائیل کے روپ میں دنیا ان کی مٹھی میں سمائی رہتی ہے اور وہ سب کچھ اسی کے ذریعہ جاننا چاہتے ہیں۔ اس چیلینج اور مسئلے کے حل کے لئے ضروری ہے کہ ہم غلط بیانیوں اور حقائق کو دنیا پر آشکار کرنے کے لئے اور اپنے ہم مذہبوں خاص طور پر نئی نسل کو صحیح معلومات فراہم کرنے، انہیں رہنمائی دینے اور ان کے شعور میں بالیدگی اور پختگی لانے کے لئے اس اطلاعاتی انقلاب کے جتنے بھی وسائل وذرائع ہیں ان کا بھرپور استعمال کریں۔

مجھے خوشی ہے کہ ہمارے ایک موقر اور معتبر عالم حضرت دین مولانا محمد نجیب قاسمی نے جو از ہر ہند دارالعلوم دیوبند کے قابل فخر ابنائے قدیم میں سے ہیں اور عرصہ سے مملکت سعودی عرب کی راجدھانی ریاض میں برسر کار ہیں، انہوں نے اس ضرورت کو بخوبی سمجھا اور دنیا کی پہلی اسلامی موبائیل ایپ ''دین اسلام'' اور ''حج مبرور'' اردو، انگریزی اور ہندی میں تیار کیا تھا اور اب وقت گزرنے کے ساتھ نئے سوالات کی روشنی اور علمی ضرورتوں کے تحت نئے مضامین اور نئے بیانات شامل کر کے ایک دفعہ پھر نئے انداز کے ساتھ پیش کرنے جا رہے ہیں۔ مزید برآں زندگی کے مختلف پہلوؤں پر دین کے حوالہ سے دو سو مضامین کے الیکٹرونک ایڈیشن کو بھی منظر عام پر لایا جا رہا ہے۔ مجھے وقتاً فوقتاً محترم مولانا محمد نجیب قاسمی صاحب کے مقالے، الیکٹرانک مضامین اور علمی فتوحات سے استفادہ کرنے کا موقعہ ملتا رہا ہے۔ مجھے ان کے متوازن، اعتدال پسند اور عالمانہ اندازِ تحریر نے ہمیشہ متاثر کیا۔ میں مولانا نجیب قاسمی کی خدمت میں ہدیۂ تبریک وتشکر پیش کرتا ہوں اور خدا سے دعا کرتا ہوں کہ وہ ان کی عمر میں درازی، علم میں اضافہ اور قلم میں مزید پختگی عطا فرمائے۔ کیونکہ:

ستاروں سے آگے جہاں اور بھی ہیں
ابھی عشق کے امتحاں اور بھی ہیں

(پروفیسر اختر الواسع)
سابق ڈائریکٹر: ذاکر حسین انسٹی ٹیوٹ آف اسلامک اسٹڈیز
سابق صدر: شعبہ اسلامک اسٹڈیز جامعہ ملیہ اسلامیہ، نئی دہلی
سابق وائس چیرمین: اردو اکادمی، دہلی

14/11, जाम नगर हाउस, शाहजहाँ रोड, नई दिल्ली–110011
14/11, Jam Nagar House, Shahjahan Road, New Delhi-110011
Tel: (O) 011-23072651-52 Email: wasey27@gmail.com Website: www.nclm.nic.in

वह नबियों में रहमत लक़ब पाने वाला

नबूवत ऐसा मन्सब है जो हर किसी को अता नहीं किया जाता है और न कोई शख्स अपनी ख्वाहिश और कोशिश से इस मन्सब पर फाएज़ हो सकता है। यह सिर्फ और सिर्फ अल्लाह तआला का अतिया है जिसको चाहता है उसे अपने फज़्ल व करम से नवाज़ता है जैसा कि अल्लाह तआला क़ुरान करीम में इरशाद फरमाता है। "**अल्लाह तआला जिसको चाहता है रसूल चुन लेता है फरिशतों में से और लोगों में से, बेशक अल्लाह तआला सुनने वाला और देखने वाला है।**" (सूरह हज 75)

हम सबका यह ईमान है कि तमाम अम्बिया-ए-किराम आम लोगों के मुक़ाबले में बहुत ज़्यादा अफज़ल व बेहतर हैं, मगर खुद अम्बिया-ए-किराम यकसां फज़ीलत के हामिल नहीं है, बाज़ अम्बिया-ए-किराम का दर्जा दूसरे अम्बिया-ए-किराम से बढ़ा हुआ है। अल्लाह तआला का इरशाद है "**यह हज़राते अम्बिया ऐसे हैं कि हमने इनमें से बाज़ को बाज़ पर फज़ीलत दी है। बाज़ इनमें वह हैं जिनसे अल्लाह तआला ने कलाम फरमाया और बाज़ इनमें से बहुत दर्जा पर सरफराज किया है।**" (सूरह बक़रह 253)

इस दुनिया में अल्लाह तआला ने बन्दों की हिदायत व रहनुमाई के लिए तक़रीबन एक लाख चैबीस हज़ार अम्बिया-ए-किराम भेजे गए जो सब लाइक़े ताज़ीम और इंतिहाई फज़ीलत के हामिल हैं, मगर आखिरी नबी हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सबसे

अफ़ज़ल व बुलंद मरतबा वाले हैं। अगरचे हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सबसे आखिर में नबी व रसूल बना कर भेजे गए, मगर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तमाम अम्बिया व रसूल बल्कि सारी मखलूक़ात में सबसे अफ़ज़ल व आला हैं। अब तक तमाम अम्बिया-ए-किराम व रसूल को खास ज़माना और खास लोगों के लिए भेजा गया, मगर ताजदारे मदीना हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पूरी दुनिया में क़यामत तक आने वाले तमाम इंसान और जिन्नात के लिए नबी और रसूल बना कर भेजा गया।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अज़मत व फज़ीलत पर बहुत कुछ लिखा और बोला गया है और जब तक दुनिया बाक़ी है हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अच्छे सिफात बयान किए जाते रहेंगे। अल्लाह तआला की आखिरी किताब जिसे अल्लाह तआला ने 23 साल के अरसे में हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर बज़रिया वही नाज़िल फरमाई सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के महासिन व फज़ाइल और कमालात का एक हसीन गुल्दस्ता भी है और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अखलाक़े आलिया व औसाफे हसना का एक खूबसूरत और साफ शफ्फाफ आईना भी। क़ुरान करीम में बहुत से मक़ामात पर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का ज़िक्रे खैर मौजूद है, कहीं आपको अल्लाह का रसूल कहा गया है, कहीं लोगों को खुशखबरी सुनाने वाला और डराने वाला बतलाया गया है, कहीं कहा गया है कि ऐ मोहम्मद आप की रिसालत पूरी कायनात के लिए है, कहीं कहा आप आखिरी नबी हैं, कहीं फरमाया "**हमने तुम्हारे सीने को खोल दिया**"

और कहीं फरमया “सुबहानल लजी असरा आखिर तक” कहीं फरमाया “‘इन्ना आतैना कलकौसर” कहीं फरमाया “लक़द कानलकुम आखिर तक” कहीं फरमाया “इन्नल्लाह व मला इकतहू आखिर तक” गरज़ ये कि क़ुरान करीम में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बेशुमार औसाफ बयान किए गए हैं मगर “वमा अरसलनाक आखिर तक” (सूरह अम्बिया 107) के ज़रिये अल्लाह तआला ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इमतियाज़ी वस्फ बयान किया है। और वह है कि हमने आपको दुनिया जहां के लोगों के लिए रहमत बना कर भेजा। यानी आप सल्लललाहु अलैहि वसल्लम की ज़ात सरापा रहमत, न सिर्फ उस ज़माना के लिए जिसमें आप भेजे गए और न सिर्फ उन लोगों के जिनके सामने आप मबऊस फरमाए गए, बल्कि क़यामत तक आने वाले तमाम इंसानों के लिए आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को नबी रहमत यानी सरापा रहमत बना कर भेजा है।

सीरतुन नबी की किताबों के मुताला से मालूम होता है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कुफ्फारे मक्का के हाथों क्या कुछ तकलीफें और अज़िय्यतें न बर्दाशत कीं, लेकिन कभी न किसी के लिए बददुआ फरमाई और न किसी पर नुज़ूले अज़ाब की तमन्ना की, बल्कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अज़ाब का इख्तियार भी दिया गया तब भी रहमत व शफक़त की वजह से आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हर तकलीफ नज़र अंदाज की और ज़ालिमों से दरगुज़र किया, हालांकि उनका जुर्म कुछ कम न था कि वह अल्लाह के प्यारे रसूल को ईज़ा देने के गुनाह में मुबतला हुए थे,

उन पर अल्लाह तआला का अज़ाब क़हर बन कर नाज़िल होना चाहिए था, लेकिन आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हमेशा अफ व करम से काम लिया और महज़ आपकी सिफते रहमत के बाइस वह क़हरे खुदावंदी से महफूज़ रहे।

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शख्सियत सरापा रहमत है आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की यह खुसूसियत आपकी शख्सियत के हर पहलू में बतमाम व कमाल मौजूद है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपनी घरेलू ज़िन्दगी में, घर से बाहर के मामलात में, अपनों और गैरों के साथ, बड़ों और बच्चों के साथ, एक नासेह मुशफिक़ और हमदर्द व गमगुसार की हैसियत से नुमायां नज़र आते हैं। अल्लाह तआला ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को रहमत से मामूर दिल अता फरमाया जो कमज़ोरों के लिए तड़प उठता था, जो मिसकीनों और यतीमों की हालते ज़ार पर गम से भर जाता था। सारे जहां का दर्द आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दिल में सिमट आया था। यहां तक कि रहमत का वस्फ आपकी तबीयते सानिया बन गया था, क्या छोटा क्या बड़ा, क्या मुसलमान क्या काफिर सब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के रहम व करम से बहरावर रहा करते थे।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की साहबज़ादियों को तलाक़ दी गई, हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा के अलावा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तमाम औलाद का इंतिक़ाल आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िन्दगी में हुआ, आप सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम को बुरा भला कहा गया, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ऊपर घर का कूड़ा डाला गया, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के रास्तों पर कांटे बिछाए गए, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आपके खानदान व सहाबा-ए-किराम का तक़रीबन तीन साल का बाइकाट किया गया, आप सल्लललाहु अलैहि वसल्लम को तरह तरह से सताया गया, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दांत मुबारक शहीद हुए, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अपने वतने अज़ीज़ से निकाला गया, मगर क़ुर्बान जाइए उस नबी रहमत पर कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उफ तक न कहा।

बच्चों पर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शफक़त का नजारा क़ाबिले दीद था, मदीना की गलियों में कोई बच्चा आपको खेलता कूदता नज़र आता तो आप खुशी में उसको लिपटा लिया करते थे, उसको बोसे देते, उसके साथ हंसी मज़ाक़ करते, एक मरतबा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने नवासे हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु को प्यार कर रहे थे कि एक देहाती को यह मंज़र देख कर बड़ी हैरत हुई और कहने लगा कि क्या आप अपने बच्चों को प्यार करते हो, हम तो नहीं करते, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया क्या अल्लाह ने तुम्हारे दिल से रहमत का जज़्बा खत्म कर दिया है?

एक मरतबा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपनी नवासी उमामा बिन्ते ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा को उठाए हुए नमाज़ पढ़ रहे थे, जब आप सजदा में तशरीफ ले जाते तो उमामा को ज़मीन पर बैठा देते

और खड़े होते तो उन्हें गोद में उठा लेते। इसी तरह एक मरतबा नमाज़ के दौरान बच्चे के रोने की आवाज़ सुनी तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने नमाज़ मुख्तसर कर दी, ताकि बच्चे को ज़्यादा तकलीफ न हो।

हज़रत अबू क़तादा रज़ियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि सरकारे दो आलम सल्लललाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि मैं नमाज़ की नियत बांध कर लम्बी किरात करना चाहता हूं कि अचानक बच्चे के रोने की आवाज़ सुन कर मुख्तसर कर देता हूं ताकि उसकी मां को परेशानी न हो।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बच्चों को बड़ी मोहब्बत से गोद में ले लिया करते थे, कभी बच्चे आप के कपड़े भी खराब कर देते लेकिन आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को नागवारी न होती। उम्मुल मोमेनीन हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फरमाती हैं कि एक मरतबा एक बच्चा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में लाया गया, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसको गोद में ले लिया तो उसने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कपड़ों पर पेशाब कर दिया। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पानी मंगवाकर कपड़े पाक किए और उस बच्चे को फिर गोद में ले लिया।

फसल का नया मेवा जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आता तो सबसे कम उम्र बच्चे को जो उस वक़्त मौजूद होता अता फरमाते। गरज़ ये कि आज से चौदह सौ साल पहले रहमतुल लिल

आलमीन ने ऐसे वक़्त बच्चों को अल्लाह तआला की रहमत और आराम का ज़रिया क़रार दिया जब नाक ऊंची करने के लिए बच्चियों को ज़िन्दा दफन कर देने का रिवाज था। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उस वक़्त उन पर तहफ्फुज़ व सलामती और शफक़त व मोहब्बत की एक ऐसी चादर तान दी थी जब दुनिया के दूसरे हिस्सों में भी बच्चियों के तहफ्फुज़ व सलामती के लिए कोई क़ानून न था। रहमतुल लिल आलमीन ने बच्चों और बच्चियों को न सिर्फ दायमी तहफ्फुज़ बख्शा बल्कि उन्हें गोद में लेकर उन्हें कंधों पर बैठा कर अपने सीने मुबारक से लगा कर उन्हें मुआशरा में ऐसा मक़ाम दिया जिसकी मिसाल दुनिया में नहीं मिलती।

बशरीयत के तकाज़े की बिना पर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी रंज व गम की कैफियात से गुज़रते थे और फरते गम से आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आंखें भी छलक उठती थीं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साहबज़ादे हज़रत इब्राहिम रज़ियल्लाहु अन्हु की वफात हुई तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आंखों से आंसू जारी हो गए। हज़रत साद बिन उबादा रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! आप रो रहे हैं? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया वह रहम है जो अल्लाह तआला ने अपने बन्दों के दिलों में पैदा फरमा दिया है। अल्लाह तआला अपने उन बन्द पर रहम करता है जिनके दिलों में रहम होता है।

औरतें फितरतन कमज़ोर होती हैं, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बार बार सहाबा को तलक़ीन फरमाई कि वह औरतों के साथ नर्मी

का मामला करें, उनकी दिल जोई करें, उनकी तरफ से पेश आने वाली नागवार बातों पर सब्र का मुज़ाहरा करें। एक मरतबा हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया खबदार! औरतों के साथ हुस्ने सुलूक करो, इसलिए कि यह औरतें तुम्हारी निगरानी में हैं।

एक मरतबा लड़कियों की तालीम व तरबियत के सिलसिले में हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया जिस शख्स ने किसी लड़की की सही सरपरस्ती और उसकी अच्छी तरबियत की तो यह लड़की क़यामत के दिन उसके लिए दोज़ख की आग से रुकावट बन जाएगी।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने खुद अपने तर्ज़े अमल से सहाबा-ए-किराम के सामने औरतों के साथ हुस्ने सुलूक की आला मिसालें क़ायम कीं, एक मरतबा उम्मुल मोमेनीन हज़रत सफिया रज़ियल्लाहु अन्हा ऊंटनी पर सवार होने लगीं तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सवारी के पास बैठ गए और हज़रत सफिया रज़ियल्लाहु अन्हा आपके घुटनों के ऊपर पांव रख कर ऊंटनी पर सवार हुईं।
आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की लख्ते जिगर हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा तशरीफ लातीं तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बहुत खुश होते और उन्हें अपने साथ बैठा कर उनका बहुत एहतेराम करते।

एक मरतबा औरतों ने इजतिमाई तौर पर हाज़िर हो कर अर्ज़ किया कि मर्द को आप से इस्तिफादा का खूब मौक़ा मिलता है, हम औरतें महरूम रह जाती हैं, आप हमारे लिए कोई खास दिन और वक़्त मुतअय्यन फरमा दें। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनकी दरख्वास्त क़बूल फरमाई और उनके लिए एक दिन मुतअय्यन फरमा दिया। उस दिन आप औरतों के इजतिमा में तशरीफ ले जाते और उनको वाज़ व नसीहत फरमाते। हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बेवाओं से निकाह करके दुनिया को यह पैगाम दिया कि बेवाओं को तन्हा न छोड़ो बल्कि उन्हें भी अपने मुआशरा में इज़्ज़त दो।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को खादिमों और नौकरों का भी बड़ा खयाल था चुनांचे आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि यह खादिम तुम्हारे भाई हैं, इन्हें अल्लाह तआला तुम्हारा मातहत बना दिया है, अगर किसी का भाई उसका मातहत बन जाए तो उसे अपने खाने में से कुछ खिलाए, उसको ऐसा लिबास पहनाए जैसा वह खुद पनता है, उसकी ताक़त व हिम्मत से ज़्यादा काम न ले, अगर कभी कोई सख्त काम ले तो उसके साथ तआवुन (मदद) भी करे। इसी तरह हूजुर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि अगर तुम्हारा नौकर तुम्हारे लिए खाना बना कर लाए तो उसे अपने साथ बैठा कर खिलाओ, उस खाने में से उसे कुछ दे दो। इसलिए कि आग की तपिश और धुएं की तकलीफ तो उसने बरदाशत की है।

यतीमों के लिए भी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दिल में बड़ी हमदर्दी थीं, इसलिए आप सहाबा को यतीमों की किफालत करने पर उकसाया करते थे। एक मरतबा हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया मैं और यतीम की किफालत करने वाला दोनों जन्नत में इस तरह होंगे, आपने क़ुरबत बयान करने के लिए बीच और शहादत की उंगली से इशारा फरमाया। यानी यतीम की किफालत करने वाला हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ जन्नत में होगा। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रमहत का दायरा सिर्फ इंसानों तक महदूद न था बल्कि बेज़बान जानवर भी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रमहत से फायदा हासिल करते थे। अहादीस शरीफ में है कि एक मरतबा हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम किसी अंसारी सहाबी के बाग में तशरीफ ले गए, वहां एक ऊंट मौजूद था, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देख कर ऊंट की आंखों से आंसू बहने लगे। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम यह मंज़र देख उस ऊंट के पास तशरीफ ले गए, उसके बदन पर हाथ फेरा, यहां तक कि ऊंट पूरसुकून हो गया। उसके बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दरयाफ्त किया ऊंट किस का है? एक अंसारी नौजवान ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! मेरा है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनसे फरमाया कि क्या तुम अल्लाह से नहीं डरते जिसने तुम्हें इस जानवर का मालिक बनाया है। इसने मुझसे तुम्हारी शिकायत की है कि तुम इसे भूखा रखते हो और इससे ज़्यादा काम लेते हो।

एक मरतबा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि अल्लाह तआला ने हर चीज़ के साथ हुस्ने सुलूक का हुकुम दिया है। अगर तुम ज़बह करो तो अच्छे तरीक़े पर ज़बह करो, ज़बह करने से पहले अपनी छुरी तेज़ कर लिया करो, ताकि जानवर को ज़्यादा तकलीफ न हो।

बेज़बान चीजें भी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दायरए रहमत में शामिल थीं, सीरत की किताबों में एक हैरत अंगेज वाक़या मौजूद है जिससे पता चलता है कि बेज़बान चीजों से भी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कितना तअल्लुक़ था। मस्जिदे नबवी में जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम खुतबा देते देते थक जाते तो एक सुतून से टेक लगा लिया करते थे। बाद में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए मिम्बर तैयार कर दिया गया। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उस पर तशरीफ रखने लगे। ज़ाहिर है कि वह सुतून आपके जिस्मे अतहर के छूने से महरूम हो गया। उस बेज़बान सुतून को इस वाक़या से इस क़दर सदमा पहुंचा कि वह तड़प उठा यहां तक कि उसके रोने की आवाज़ आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी सुनी और सहाबा-ए-किराम के कानों तक भी पहंची। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मिम्बर से उतर कर सुतून के पास तशरीफ ले गए और उसपर दस्ते शफक़त रख कर उसको पुरसकून किया। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहाबा-ए-किराम से इरशाद फरमाया कि अगर मैं इसे गले न लगाता तो यह सुतून क़यामत तक इसी तरह रोता रहता।

मक्की दौर में क़ुरैशे मक्का ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कितना सताया, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आपके साहाबा पर कितने मज़ालिम ढाए गए यहां तक कि आपको अपना अज़ीज़ वतन भी छोड़ना पड़ा। इससे बढ़कर तकलीफदह वाक़या इंसान के किया हो सकता है कि वह अपने हम वतनों के ज़ुल्म व सितम से आजिज़ आ कर अपना घर बार सब कुछ छोड़ कर दयारे गैर में जा कर फरूकश हो जाए। इसके बावजूद जब चंद साल बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फातेहाना मक्का में दाखिल हुए तो इंकिसारी से आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की गरदन मुबारक झुकी हुई थी और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़बाने मुबारक पर यह अल्फाज़ थे "तुम पर आज कोई गिरिफ्त नहीं है।" हालांकि उस दिन चाहते तो अपने तमाम दुशमनों से गिन गिन कर बदला ले सकते थे, मगर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इंतिकाम पर माफी को तरजीह दी और फरमाया "आज रहमत का दिन है।"

क़ुरान करीम में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को रहमते कायनात का लक़ब दिया है जिसमें सारी मखलूक़ात इंसान, जिन्नात, नबातात, जमादात सभी दाखिल हैं। हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इन सब चीजों के लिए रहमत होना इस तरह है कि तमाम कायनात की हक़ीक़ी रूह अल्लाह तआला का ज़िक्र और उसकी इबादत है, यही वजह है कि जिस वक़्त ज़मीन से यह रूह निकल जाएगी और ज़मीन पर कोई अल्लाह अल्लाह कहने वाला न रहेगा तो इन सब चीजों की मौत यानी क़यामत परबा हो जाएगी।

जब अल्लाह का ज़िक्र इन सब चीजों की रूह होना मालूम हो गया तो रसूलुल्ला सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इन सब चीजों के लिए रमहत होना खुद बखुद ज़ाहिर हो गया, क्यूंकि इस दुनिया में क़यामत तक अल्लाह का ज़िक्र और इबादत आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ही की तालीमात से क़ायम है।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के रहमतुल लिल आलमीन होने का यह मफहूम भी लिया गया है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जो शरीअत लेकर दुनिया में तशरीफ लाए हैं वह इंसानों की भलाई और खैर खाही के लिए है। आपकी हर तालीम और शरीअते मोहम्मदिया का हर हुकुम इंसानियत के लिए बाइसे खैर है।

वह नबियों में रहमत लक़ब पाने वाला ऐसा अज़ीम मौज़ू है कि रहमतुल लिल आलमीन के रहम व करम और शफक़त पर दिन रात भी लिखा जाए तो इस मौज़ू का हक़ अदा नहीं किया जा सकता। अल्लाह तआला हमें अपनी बीवी, बच्चे, घर के अफराद और घर के बाहर लोगों के साथ वैसा ही मामला करने वाला बनाए जो रहमतुल लिल आलमीन ने अपने क़ौल व अमल से क़यामत तक आने वाले इंसानों के लिए पेश फरमाए, आमीन।

रहमतुल लिल आलमीन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सीरत रब्बुल आलमीन की ज़बानी

क़ुरान करीम अल्लाह तआला का वह अज़ीमुशशान कलाम है जो इंसानों की हिदायत के लिए खालिक़े कायनात ने अपने आखिरी रसूल हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर नाज़िल फरमाया। क़ुरान करीम अल्लाह तआला की वह अज़ीम किताब है जिसकी हिफाज़त अल्लाह तआला ने खुद अपने ज़िम्मे ली है जैसा कि अल्लाह तआला का फैसला क़ुरान करीम में मौजूद है "यह ज़िक्र (यानी क़ुरान) हमने ही उतारा है और हम ही इसकी हिफाज़त करने वाले हैं।" (सूरह हजर 9)

क़ुरान करीम की सबसे पहली जो आयतें हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर गारे हिरा में नाज़िल हुईं वह सूरह अलक़ की इब्तिदाई आयात हैं "पढ़ो अपने उस परवरदिगार के नाम से जिसने पैदा किया, जिसने इंसान को जमे हुए खून से पैदा किया। पढ़ो और तुम्हारा परवरदिगार सबसे ज़्यादा करीम है।" इस पहली वही के नुज़ूल के बाद तक़रीबन तीन साल तक वही के नुज़ूल का सिलसिला बंद रहा। तीन साल के बाद वही फरिशता जो गारे हिरा में आया था आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आया और सूरह मुदस्सिर की इब्तिदाई चंद आयात आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर नाज़िल फरमाईं "ऐ कपड़े में लिपटने वाले उठो और लोगों को खबरदार करो और अपने परवरदिगार की तकबीर कहो, अपने कपड़ों को पाक रखो और गंदगी से किनारा कर लो।" इसके बाद हुज़ूर

अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफात तक वही के नुज़ूल का तदरीजी सिलसिला जारी रहा।

खालिक़े कायनात ने अपने हबीब हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को क़ुरान करीम में आम तौर पर या अय्युहन्नबी, या अय्युहररसूल, या अय्युहल मुद्दसिर और या अय्युहल मुज़्ज़म्मिल जैसे सिफात से खिताब फरमाया है, हालांकि दूसरे अम्बिया-ए-किराम को उनके नाम से भी खिताब फरमाया है। सिर्फ चार जगहों पर इसमे मुबारक मोहम्मद और एक जगह इसमे मुबारक अहमद क़ुरान करीम में आया है।

क़ुरान करीम में चार जगह हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नाम (मोहम्मद) का ज़िक्र

“**और मोहम्मद एक रसूल ही तो हैं, इनसे पहले बहुत से रसूल गुज़र चुके हैं।**” (सूरह आले इमरान 144)

“**मुसलमानो! मोहम्मद तुम मर्द में से किसी के बाप नहीं हैं, लेकिन वह अल्लाह के रसूल हैं और तमाम नबियों में सब से आखिरी नबी हैं।**” (सूरह अहज़ाब 4)

“**और जो लोग ईमान ले आए हैं और उन्होंने नेक अमल किए हैं और हर उस बात को दिल से माना है जो मोहम्मद पर नाज़िल की गई है और वही हक़ है जो उनके परवादिगार की तरफ से आया है अल्लाह ने उनकी बुराईयों को माफ कर दिया है और उनकी हालत संवार दी है।**” (सूरह मोहम्मद 2)

“मोहम्मद अल्लाह के रसूल हैं और जो लोग उनके साथ हैं वह काफिरों के मुक़ाबला में सख्त हैं और आपस में एक दूसरे के लिए रहम दिल हैं।”

(सूरह फतह 29)

क़ुरान करीम में एक जगह हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नाम (अहमद) का ज़िक्र

“ऐ बनू इसराईल! मैं तुम्हारे पास अल्लाह का ऐसा पैगम्बर बन कर आया हूं कि मुझसे पहले जो तौरात (नाज़िल हुई) थी मैं इसकी तसदीक़ करने वाला हूं और उस रसूल की खुशखबरी देने वाला हूं जो मेरे बाद आएगा जिसका नाम अहमद है।” (सूरह सफ 6) मालूम हुआ कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने अपने ज़माना ही में हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नबी होने की तसदीक़ फरमा दी थी।

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने नबी को ऐसा अजीमुशशान मक़ाम अता फरमाया कि कोई इंसान यहां तक कि नबी या रसूल भी इस मक़ाम तक नहीं पहुंच सकता, चुनांचे अल्लाह तआला अपने पाक कलाम में इरशाद फरमाता है **“ऐ पैगम्बर! क्या हमने तुम्हारी खातिर तुम्हारा सीना खोल नहीं दिया? और हमने तुमसे तुम्हारा वह बोझ उतार दिया है जिसने तुम्हारी कमर तोड़ रखी थी और हमने तुम्हारी खातिर तुम्हारे तज़किरे को ऊंचा मक़ाम अता कर दिया।”** (सूरह अशशरह 1,4) दुनिया में कोई लम्हा ऐसा नहीं गुज़रता जिसमें हज़ारों मस्जिदों के मीनारों से अल्लाह की वहदानियत की शहादत के साथ हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नबी होने की शहादत हर वक़्त न दी जाती हो और

लाखों मुसलमान नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दरूद न भेजते हों। गरज़ ये कि अल्लाह तआला के बाद सबसे ज़्यादा हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नाम नामी इस दुनिया में लिखा, बोला, पढ़ा और सुना जाता है।

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम साहबे हौज़े कौसर

खालिक़े कायनात ने सिर्फ दुनिया ही में नहीं बल्कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हौज़े कौसर अता फरमा कर क़यामत के रोज़ भी ऐसे बुलंद व आला मक़ाम से सरफराज फरमाया है जो सिर्फ और सिर्फ हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हासिल है, अल्लाह तआला इरशाद फरमाता है "**ऐ पैगम्बर! यक़ीन जानो हमने तुम्हें कौसर अता करदी है, लिहाज़ा तुम अपने परवरदिगार (की खुशनूदी) के लिए नमाज़ पढ़ो और क़ुर्बानी करो। यक़ीन जानो तुम्हारा दुशमन वही है जिसकी जड़ कटी हुई है। (यानी जिसकी नसल आगे नह चलेगी)**" (सूरह कौसर 1-3) कौसर जन्नत के उस हौज़ का नाम है जो हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के क़ब्ज़े में दी जाएगी और आपकी उम्मत के लोग क़यामत के दिन उससे सैराब होंगे। हौज़ पर रखे हुए बरतन आसमान के सितारों की तरह बहुत ज़्यादा होंगे।

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दरूद व सलाम

अल्लाह तआला न सिर्फ ज़मीन बल्कि आसमानों पर भी अपने नबी को बुलंद मक़ाम से नवाज़ा है, चुनांचे अल्लाह तआला फरमाता है "**अल्लाह तआला नबी पर रहमतें नाज़िल फरमाता है और फरिशते**

नबी के लिए दुआए रहमत करते हैं। ऐ ईमान वालो! तुम भी नबी पर दरूद व सलाम भेजा करो।" (सूरह अहज़ाब 56) इस आयत में नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के उस मक़ाम का बयान है जो आसमानों में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हासिल है और वह यह है कि अल्लाह तआला फरशितों में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का ज़िक्र फरमाता है और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर रहमतें भेजता है और फरिशते भी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दरजात की बुलंदी के लिए दुआएं करते हैं। इसके साथ अल्लाह तआला ने ज़मीन वालों को हुकुम दिया कि वह भी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दरूद व सलाम भेजा करें। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया जिसने मुझ पर एक मरतबा दरूद भेजा अल्लाह तआला उसपर दस मरतबा रहमतें नाज़िल फरमाएगा। (मुस्लिम)

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का फरमान अल्लाह का फरमान है

कैसा आलीशान मक़ाम हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मिला कि आपका कलाम अल्लाह तआला के हुकुम से ही होता है जैसा कि अल्लाह तआला खुद इरशाद फरमाता है "**और यह अपनी ख्वाहिश से कुछ नहीं बोलते, यह तो खालिस वही है जो उनके पास भेजी जाती है।**" (सूरह नजम 3-4)

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की लोगों की हिदायत की फिक्र

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम लोगों की हिदायत की इस क़दर फिक्र फरमाते कि अल्लाह तआला इरशाद फरमाता है "**ऐ पैगम्बर! शायद तुम इस गम में अपनी जान हलाक किए जा रहे हो कि यह लोग ईमान (क्यूं) नहीं लाते।**" (सूरतुश शूरा 3) हमारे नबी काफिरों और मुशरिकों को ईमान में दाखिल करने की दिन रात फिक्र फरमाते और इसके लिए हर मुमकिन कोशिश फरमाते, लेकिन आज बाज़ मुसलमान अपने ही भाइयों को उनकी बाज़ गलतियों की वजह से उनको काफिर और मुशरिक क़रार देने में बड़ी जल्दी से काम लेते हैं।

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नबी रहमत बना कर भेजे गए

रब्बुल आलमीन ने अपने नबी को रहमतुल लिल मुस्लेमीन नहीं बनाया बल्कि रहमतुल लिल आलमीन बनाया है जैसा कि फरमाने इलाही है "**ऐ पैगम्बर! हमने तुम्हें सारे जहानों के लिए रहमत ही रहमत बना कर भेजा है।**" (सूरह अम्बिया 107) जिस नबी को सारे जहां के लिए रहमत बना कर भेजा गया हो उस नबी की तालीमात में दहशत गर्दी कैसे मिल सकती है? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हमेशा अमन व आमान क़ायम करने की तालीम दी है।

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आखिरी नबी हैं

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नबी होने के साथ आखिरी नबी भी हैं, हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से जारी नबूवत का सिलसिला आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर खत्म हो गया, यानी अब कोई नई शरीअत नहीं आएगी, अल्लाह तआला का फरमान है "**मुसलमानो! मोहम्मद तुम मर्द में से किसी के बाप नहीं हैं, लेकिन वह अल्लाह के रसूल हैं और तमाम नबियों में सब से आखिरी नबी हैं।**" (सूरह अहज़ाब 40) हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया मैं आखिरी नबी हूं मेरे बाद कोई नबी पैदा नहीं होगा। (सही बुखारी व मुस्लिम)

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को आलमी रिसालत से नवाज़ा गया

जैसा कि क़ुरान व हदीस की रौशनी में बयान किया गया कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आखिरी नबी हैं, यानी आपको क़यामत तक आने वाले तमाम इंसानों के लिए नबी बनाया गया, गरज़ ये कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को आलमी रिसालत से नवाज़ा गया। बहुत सी आयात में अल्लाह तआला ने आपकी आलमी रिसालत को बयान किया है, यहां सिर्फ दो आयात पेश हैं।

"**ऐ रसूल! इनसे कहो कि ऐ लोगो! मैं तुम सबकी तरफ उस अल्लाह का भेजा हुआ रसूल हूं जिसके क़ब्ज़े में तमाम आसमानों और जमीनों की सलतनत है।**" (सूरह आराफ 158) इसी तरह अल्लाह तआला फरमाता है "**और ऐ पैगम्बर! हमने तुम्हें सारे ही इंसानों के**

लिए ऐसा रसूल बना कर भेजा है जो खुशखबरी भी सुनाए और खबरदार भी करे।" (सूरह सबा 28)

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का उसवए हसना बनी नौए इंसान के लिए

चूंकि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को आलमी रिसालत से नवाज़ा गया है, इसलिए आपकी ज़िन्दगी क़यामत तक आने वाले तमाम इंसानों के लिए नमूना बनाई गई जैसा कि अल्लाह तआला बयान फरमाता है "हक़ीक़त यह है कि तुम्हारे रसूल की ज़ात में एक बेहतरीन नमूना है हर उस शख्स के लिए जो अल्लाह से और आखिरत के दिन से उम्मीद रखता हो और कसरत से अल्लाह का ज़िक्र करता हो।" (सूरह अहज़ाब 21) हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िन्दगी का एक एक लम्हा क़यामत तक आने वाले इंसानों के लिए नमूना है लिहाज़ा हमें चाहिए कि हम हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नतों पर अमल करें। आज हम सुन्नतों पर यह कह कर अमल नहीं करते कि वह फ़र्ज़ नहीं हैं। सुन्नत का मतलब हरगिज़ यह नहीं कि हम उस पर अमल न करें बल्कि हमें अपने नबी की सुन्नतों पर क़ुर्बान हो जाना चाहिए, मगर अफसोस व फिक्र की बात है कि आज हमारे बाज़ भाई सुन्नत पर अमल करना तो दरकिनार बाज़ मरतबा सुन्नत का मज़ाक़ उड़ा जाते हैं। याद रखें कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत के मुतअल्लिक़ मज़ाक़ करना इंसान की हलाकत व बरबादी का सबब है। अल्लाह तआला ने अपने हबीब मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तमाम सुन्नतों को आज ज़िन्दा कर रखा है,

अगर इजतिमाई तौर पर नही तो इंफिरादी तौर पर ज़रूर अमल हो रहा है। दाढ़ी रखना न सिर्फ हमारे नबी की सुन्नत है बल्कि नबी के अक़वाल व अफआल की रौशनी में पूरी उम्मते मुस्लिमा का इत्तिफाक़ है कि दाढ़ी रखना ज़रूरी है, मगर आज बाज़ हमारे भाई दाढ़ी रखना तो दरकिनार बाज़ मरतबा दाढ़ी का मज़ाक़ उड़ा कर अपनी हलाकत व बरबादी का सामान तैयार करते हैं।

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इत्तिबा

अल्लाह तआला ने अपने हबीब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के उसवा में दोनों जहां की कामयाबी व कामरानी पोशीदा रखी है, लिहाज़ा अल्लाह तआला ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इत्तिबा को लाज़िम क़रार दिया, फरमाने इलाही, "**ऐ पैगम्बर! लोगों से कह दो अगर तुम अल्लाह से मोहब्बत रखते हो तो मेरी इत्तिबा करो, अल्लाह तुमसे मोहब्बत करेगा और तुम्हारी खातिर तुम्हारे गुनाह माफ फरमा देगा।**" (सूरह आले इमरान 31) अल्लाह तआला ने क़ुरान करीम की सैकड़ों आयात में अपनी इताअत के साथ रसूल की इताअत का भी हुकुम दिया है। कहीं फरमाया अल्लाह और अल्लाह के रसूल की इताअत करो, और कहीं फरमाया अल्लाह और उसके रसूल की इताअत करो। इन सब जगहों पर अल्लाह तआला की तरफ से बन्दों से एक ही मुतालबा है कि फरमाने इलाही की तामील करो और इरशादे नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इताअत करो। गरज़ ये कि अल्लाह तआला ने क़ुरान करीम में बहुत सी जगहों पर यह बात वाज़ेह तौर पर बयान कर दी कि अल्लाह तआला की इताअत के साथ रसूल की भी इताअत ज़रूरी है और अल्लाह तआला

की इताअत रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की के बेगैर मुमकिन ही नहीं है।

क़ुरान करीम के मुफस्सिरे अव्वल हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

अल्लाह तआला अपने पाक कलाम में फरमाता है "**यह किताब हमने आपकी तरफ उतारी है कि लोगों की जानिब जो हुकुम नाज़िल फरमाया गया है आप उसे खोल खोल कर बयान कर दें, शायद कि वह गौर व फिक्र करें।**" (सूरह नहल 46) इसी तरह फरमाने इलाही है "**यह किताब हमने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर इसलिए उतारी है ताकि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनके लिए हर उस चीज़ को वाज़ेह कर दें जिसमें वह इख्तिलाफ कर रहे हैं।**" अल्लाह तआला ने इन दोनों आयात में वाज़ेह तौर पर बयान फरमा दिया कि क़ुरान करीम के मुफस्सिरे अव्वल हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं और अल्लाह तआला की तरफ से नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर यह ज़िम्मेदारी दी गई है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उम्मते मुस्लिमा के सामने क़ुरान करीम के अहकाम व मसाइल खोल खोल कर बयान करें और हमारा यह ईमान है कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने अक़वाल व अफआल के ज़रिया क़ुरान करीम के अहकाम व मसाइल बयान करने की ज़िम्मेदारी बहुस्न खूबी अंजाम दी। सहाबा, ताबेईन और तबे ताबेईन के ज़रिये हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अक़वाल व अफआल यानी हदीसे नबवी के ज़खीरा से क़ुरान करीम की पहली अहम बुनियादी तफसीर इंतिहाई क़ाबिले एतेमाद

ज़राए से उम्मते मुस्लिमा से पहुंची है, लिहाज़ा क़ुरान फहमी हदीस के बेगैर मुमकिन ही नहीं है।

तारीख का सबसे लम्बा सफर हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नाम

तारीख के सबसे लम्बे सफर (मेराज) का ज़िक्र अल्लाह तआला ने अपने पाक कलाम में बयान फरमाया जिसमें आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को आसमानों की सैर कराई गई। मस्जिदे हराम से मस्जिदे अक़सा के सफर को इसरा कहते हैं। और यहाँ से जो सफर आसमानों की तरफ हुआ उसका नाम मेराज है। इस वाक़या का ज़िक्र सूरह नजम की आयात में भी है। सूरह नज्म की आयात 13-18 में वज़ाहत है कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने (इस मौक़े पर) बड़ी बड़ी निशानियां मुलाहज़ा फरमायीं।

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नमाज़

अल्लाह तआला का प्यार भरा खिताब हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से है कि आप रात के बड़े हिस्से में नमाज़े तहज्जुद पढ़ा करें। “ऐ चादर में लिपटने वाले! रात का थोड़ा हिस्सा छोड़ कर बाक़ी रात में (इबादत के लिए) खड़े हो जाया करो। रात का आधा हिस्सा या आधे से कम या उससे कुछ ज़्यादा और क़ुरान करीम की तिलावत इतमिनान से साफ साफ करो।” (सूरह मुज़म्मिल 1-4) इसी तरह सूरह मुज़म्मिल की आखिरी आयत में अल्लाह तआला फरमाता है “ऐ पैगम्बर! तुम्हारा परवरदिगार जानता है कि तुम दो तिहाई रात के क़रीब और कभी आधी रात और कभी एक तिहाई रात (तहज्जुद

की नमाज़ के लिए) खड़े होते हो और तुम्हारे साथियों (सहाबा-ए-किराम) में से भी एक जमाअत (ऐसा ही करती है)।"
उम्मुल मोमेनीन हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फरमाती हैं कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रात को क़याम फरमाते, यानी नमाज़े तहज्जुद अदा करते यहां तक कि आप के पांव मुबारक में वरम आ जाता। (बुखारी) सिर्फ एक दो घंटे नमाज़ पढ़ने से पैरों में वरम नहीं आता है बल्कि रात के एक बड़े हिस्से में अल्लाह तआला के सामने खड़े होने, तवील रुकू और सजदा करने की वजह से वरम आ जाता है, चुनांचे सूरह बक़रह और सूरह आले इमरान जैसी लम्बी लम्बी सूरतें आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक रिकात में पढ़ा करते थे और वह भी बहुत इतमिनान व सुकून के साथ।

नमाज़े तहज्जुद के अलावा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पांच फ़र्ज़ नमाजें भी खुशू व खुज़ू के साथ अदा करते थे। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सुन्नत और नफल, नमाज़े इशराक़, नमाज़े चाशत, तहिय्यतुल मस्जिद और तहिय्यतुल वज़ू का भी एहतेमाम फरमाते और फिर खास खास मौक़ा पर नमाज़ ही के ज़रिया अल्लाह तआला से रुजू फरमाते। सूरज गरहन या चांद गरहन होता तो मस्जिद तशरीफ ले जाकर नमाज़ में मशगूल हो जाते। कोई परेशानी या तकलीफ पहुंचती तो मस्जिद को रुख करते। सफर से वापसी होती तो पहले मस्जिद तशरीफ ले जाकर नमाज़ अदा करते और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इतमिनान व सुकून के साथ नमाज़ पढ़ा करते थे।

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अखलाक़

अल्लाह तआला क़ुरान करीम में अपने नबी के अखलाक़ के मुतअल्लिक़ फरमाता है "**और यक़ीनन तुम अखलाक़ के आला दर्जे पर हो**" (सूरह क़लम 4) हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अखलाक़ के मुतअल्लिक़ सवाल किया गया तो आप ने फरमाया आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अखलाक़ कुरानी तालीमात के ऐन मुताबिक़ था। (सही बुखारी व मुस्लिम) हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया मुझे बेहतरीन अखलाक़ की तकमील के लिए भेजा गया है। (मुसनद अहमद) हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि मैंने दस साल हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत की, मुझे कभी किसी बात पर उफ तक भी फरमाया, न किसी काम के करने पर यह फरमाया कि क्यूं किया? और इसी तरह न कभी किसी काम के न करने पर यह फरमाया कि क्यूं नहीं किया? हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अखलाक़ में तमाम दुनिया से बेहतर थे, नीज़ खिलक़त के एतेबार से भी आप बहुत खुबसूरत थे। मैंने कभी कोई रेशमी कपड़ा या खालिस रेशम और नर्म चीज़ ऐसी नहीं छुई जो हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बाबरकत हथेली से ज़्यादा नर्म हो और मैंने कभी किसी क़िस्म का मुशक या कोई अतर हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पसीने की खुशबू से ज़्यादा खुशबूदार नहीं सूंघा। (तिर्मिज़ी) हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फरमाती हैं कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने दस्ते मुबारक से अल्लाह के रास्ते में जिहाद के अलावा कभी किसी को नहीं मारा, न कभी किसी खदिम को न किसी औरत

(बीवी, बांदी वगैरह) को। (तिर्मिज़ी) हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फरमाती हैं कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम न तो तबअन फहशगो थे न बतकल्लुफ फहश बात फरमाते थे, न बाजारों में खिलाफे वकार बातें करते थे। बुराई का बदला बुराई से नहीं देते थे बल्कि माफ फरमा देते थे और इसका तज़किरा भी नहीं फरमाते थे। (तिर्मिज़ी) हज़रत हसन बिन अली रज़ियल्लाहु अन्हुमा फरमाते हैं कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तीन बातों से अपने आपको अलाहदा फरमा रखा था, झगड़े से, तकब्बुर से और बेकार बातों से और तीन बातों से लोगों को बचा रखा था, न किसी की बुराई करते, न किसी को ऐब लगाते और न ही किसी के ऐबों की तलाश करते थे। (तिर्मिज़ी) हमें चाहिए कि हम अपने नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अखलाक़े हमीदा को पढ़ें और उनको अपनी ज़िन्दगी में लाने की हर मुमकिन कोशिश करें।

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की घरेलू ज़िन्दगी

क़ुरान करीम रोज़े क़यामत तक के लिए लोगों से मुखातिब है "**ऐ ईमान वालो! तुम्हारे लिए यह हलाल नहीं कि रसूल अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद उनकी बीवियों में से किसी से निकाह करो।**" (सूरह अहज़ाब 53) यानी अज़वाजे मुतहहरात (नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बीवियां) तमाम ईमान वालों के लिए मां (उम्मुल मोमेनीन) का दर्जा रखती हैं। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने चंद निकाह फरमाए। इनमें सिर्फ हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा कुवांरी थीं, बाक़ी सब बेवा या तलाक़याफ्ता। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सबसे

पहला निकाह 25 साल की उम्र में हज़रत खदीजा रज़ियल्लाहु अन्हा से किया। हज़रत खदीजा रज़ियल्लाहु अन्हा की उम्र निकाह के वक़्त 40 साल थी, यानी हज़रत खदीजा रज़ियल्लाहु अन्हा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से उम्र में 15 साल बड़ी थीं। नीज़ वह नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के निकाह करने से पहले दो शादियां कर चुकी थीं और उनके पहले शौहर से बच्चे भी थे।

जब नबी अकरम सललल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्र 50 साल हुई तो हज़रत खदीजा रज़ियल्लाहु अन्हा का इंतिक़ाल हो गया। इस तरह नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी पूरी जवानी (25 से 50 साल की उम्र) सिर्फ एक बेवा औरत हज़रत खदीजा रज़ियल्लाहु अन्हा के साथ गुज़ार दी।

हज़रत सौदा रज़ियल्लाहु अन्हा जो अपने शौहर के साथ मुसलमान हुई थीं उनकी मां भी मुसलमान हो गई थीं, मां और शौहर के साथ हिजरत करके हबशा चली गईं थीं, वहां उनके शौहर का इंतिक़ाल हो गया। जब उनका बज़ाहिर दुनियावी सहारा न रहा तो नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत खदीजा रज़ियल्लाहु अन्हा की वफात के बाद नबूवत के दसवें साल उनसे निकाह कर लिया। उस वक़्त आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्र 50 साल और हज़रत सौदा रज़ियल्लाहु अन्हा की उम्र 55 साल थी और यह इस्लाम में सबसे पहली बेवा औरत थीं। हज़रत खदीजा रज़ियल्लाहु अन्हा के इंतिक़ाल के बाद तक़रीबन तीन या चार साल तक सिर्फ हज़रत सौदा रज़ियल्लाहु अन्हा ही आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ रहीं, क्यूंकि हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा की रुखसती निकाह के तीन या चार साल बाद मदीना में हुई। गरज़ तक़रीबन 55 साल की उम्र

तक आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ सिर्फ एक ही औरत रही और वह भी बेवा।

उसके बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने चंद निकाह किए। यह निकाह किसी शहवत को पूरी करने के लिए नहीं किए कि शहवत 50 से 55 साल की उम्र के बाद अचानक ज़ाहिर हो गई हो, बल्कि सियासी व दीनी व इजतिमाई असबाब को सामने रखकर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह निकाह किए। अगर शहवत पूरी करने के लिए आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम निकाह फरमते तो कुवांरी लड़कियों से शादी करते, नीज़ हदीस में आता है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने किसी औरत से शादी नहीं की और न किसी बेटी का निकाह कराया मगर अल्लाह की तरफ से हज़रत जिबरइल अलैहिस्सलाम वही ले कर आए।

खुलासा कलाम

अल्लाह तआला ने क़ुरान करीम में जगह जगह अपने हबीब मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के औसाफे हमीदा बयान फरमाए हैं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम न सिर्फ अपने ज़माने के लोगों के लिए बल्कि क़यामत तक आने वाले तमाम इंसानों के लिए नबी व रसूल बना कर भेजे गए हैं और नबूवत का सिलसिला आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर खत्म कर दिया गया है, यानी अब क़यामत तक कोई नबी नहीं आएगा, यही शरीअते मोहम्मदिया (यानी उलूमे क़ुरान व हदीस) कल क़यामत तक आने वाले तमाम इंसानों के लिए मशअले राह है। गरज़ ये कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को आलमी रिसालत से नवाज़ा गया है। इतने अज़ीम व

बुलंद मक़ाम पर फाएज़ होने के बावजूद आपको मुख्तलिफ तरीकों से सताया गया, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िन्दगी का बेशतर जिस्सा तकलीफों में गुज़रा, मगर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कभी सब्र का दामन नहीं छोड़ा, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रिसालत की अहम ज़िम्मेदारी को इस्तिक़ामत के साथ बहुस्न खूबी अंजाम देते रहे। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इबादत, मामलात, अखलाक़ और मुआशरत सारे इंसानों के लिए नमूना है। हमें हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के उसवए हसना से यह सबक लेना चाहिए कि घरेलू या मुल्की या आलमी सतह पर जैसे भी हालात हमारे ऊपर आएं हम उन पर सब्र करें और अपने नबी के नक़्शे क़दम पर चलते हुए अल्लाह तआला से अपना तअल्लुक़ मज़बूत करें। हम अपने नबी के तरीक़े पर उसी वक़्त ज़िन्दगी गुज़ार सकते हैं जब हमें अपने नबी की सीरत मालूम हो, लिहाज़ा हम खुद भी सीरत की किताबों को पढ़ें और अपने बच्चों को भी सीरते नबवी पढ़ाने का एहतेमाम करें।

अल्लाह तआला हमें अपने हबीब मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नक़्शे क़दम पर ज़िन्दगी गुज़ारने वाला बनाए, आमीन।

हुज़ूर अकरम सलल्लाहु अलैहि वसल्लम आखिरी नबी है

अल्लाह तआला ने हूज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को खातमुल अम्बिया वलमुरसलीन बना कर भेजा, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद नबूवत व रिसालत का दरवाजा हमेशा के लिए बन्द कर दिया गया, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को दीने कामिल अता किया गया, चुनांचे क़यामत तक सिर्फ और सिर्फ शरीअते मोहम्मदिया (यानी क़ुरान व हदीस और उनसे माखूज़ उलूम) ही इंसानों के लिए मशअले राह हैं। हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर सिलसिला नबूवत व रिसालत के इख्तिताम की एक वाज़ेह दलील यह भी है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम क़यामत तक पूरी इंसानियत के लिए पैगम्बर बना कर भेजे गए, अल्लाह तआला ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आलमी रिसालत को अपने पाक कलाम में बहुत बार बयान फरमाया है, सिर्फ तीन आयात पेशे खिदमत है।

“**ऐ रसूल! उनसे कहो कि ऐ लोगो! मैं तुम सबकी तरफ उस अल्लाह का भेजा हुआ रसूल हूँ जिसके क़ब्ज़े में तमाम आसमानों और ज़मीनों की सलतनत है।**” (सूरह आराफ 158)

“**और (ऐ पैगम्बर) हमने तुम्हें सारे ही इंसानों के लिए ऐसा रसूल बना कर भेजा है जो खुशखबरी भी सुनाए और खबरदार भी करे।**” (सूरह सबा 28)

“**और (ऐ पैगम्बर) हमने तुम्हें सारे जहानों के लिए रहमत ही रहमत बना कर भेजा है।**” (सूरह अम्बिया 107)

मेरे दीनी भाईयों!

इब्तिदाये इस्लाम से लेकर आज तक पूरी उम्मते मुस्लिमा क़ुरान व हदीस की रौशनी में मुत्तफिक़ है कि नबूवत का सिलसिला आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर खत्म हो गया। तक़रीबन चैदह सौ सालों से करोड़ों मुसलमान इस अक़ीदा पर क़ायम हैं। लाखों मुहद्दिसीन, मुफस्सेरीन, फुक़हा व उलमा ने क़ुरान व हदीस की तफसीर व तशरीह करते हुए वाज़ेह फरमा दिया कि नबूवत व रिसालत का सिलसिला खत्म हो गया और अब क़यामत तक सिर्फ और सिर्फ शरीअते मोहम्मदिया ही नाफ़ीज़ रहेगी। गरज़ ये कि मुसलमानों के तमाम मकातिबे फिक्र, आम व खास, आलिम व जाहिल, शहरी व देहाती, मुसलमान ही नहीं बल्कि बाज़ गैर मुस्लिम हज़रात भी जानते हैं कि मुसलमानों का यह अक़ीदा है कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आखिरी नबी व रसूल हैं और अब कोई नबी या रसूल पैदा नहीं होगा। वक़्तन फवक़्तन नबूवत का दावा करने वाले पैदा होते रहते हैं, लेकिन पूरी उम्मते मुस्लिमा ने एक साथ मुद्दइए नबूवत से भरपूर मुक़ाबला करके अपने नबी का दिफा किया और इस्लाम के परचम को बुलंद किया।

क़ुरान करीम की बहुत सी आयात में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आखिरी नबी होने का ज़िक्र मौजूद है, यहां तक कि हज़रत मौलाना मुफती मोहम्मद शफी रहमतुल्लाह अलैह ने अपनी किताब (खत्मे नबूवत) में तक़रीबन एक सौ आयाते कुरानिया, 210 अहादीसे नबविया, इज़माए उम्मत और सैकड़ों अक़वाले सहाबा और ताबेइन व अइम्मए दीन से मसअलए खत्मे नबूवत को मुदल्लल

किया है। बाज़ उलमा ने तो क़ुरान करीम की हर सूरत से खत्म नबूवत को साबित किया है। मैं इख्तिसार की वजह से सिर्फ एक आयत पेश कर रहा हूं। "**मुसलमानो! मोहम्मद तुम मर्द में से किसी के बाप नहीं हैं, लेकिन वह अल्लाह के रसूल हैं और तमाम नबियों में से सबसे आखिरी नबी हैं।**" (सूरह अहज़ाब 40)

ज़मानए जाहिलियत में मुतबन्ना (मुंह बोले बेटे) को हक़ीक़ी बेटा समझा जाता था। इस आयत के शुरू में इसी की तरदीद की कि मुंह बोले बेटे हक़ीक़ी बेटे के हुकुम में नहीं हैं, लिहाज़ा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु के बाप नहीं हैं। उसके बाद अल्लाह तआला इरशाद फरमाता है "आप अल्लाह के रसूल और आखिरी नबी हैं।" मेरे इस मुख्तसर मज़मून का तअल्लुक इस मज़कूरा बाला आयत में इसी इबारत से है। इससे साफ साफ मालूम हो गया कि दीने इस्लाम और नेमते नबूवत व रिसालत हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर तमाम हो चुकी है, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद किसी नबी की गुंजाइश और ज़रूरत नहीं है, जैसा कि अल्लाह तआला ने दूसरी जगह इरशाद फरमाया "हमने तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन कामिल कर दिया और अपनी नेमत तुम पर पूरी कर दी।" (सूरह माइदा 3)
अल्लाह तआला रब्बुल आलमीन है, यानी क़यामत तक आने वाले तमाम इंसान व जिन्नात और पूरी कायनात का पालने वाला है, इसी तरह हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सिर्फ अरबों के लिए या अपने ज़माने के लोगों के लिए या सिर्फ मुसलमानों के लिए नबी व रसूल बना कर नहीं भेजे गए, बल्कि आप सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम क़यामत तक आने वाले तमाम इंसानों के लिए नबी व रसूल हैं और क़यामत तक अब कोई नबी या रसूल पैदा नहीं होगा। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम भी नुज़ूल के बाद शरीअते मोहम्मदिया ही पर अमल करेंगे और इसी की लोगों को दावत देंगे।

अल्लाह तआला के कलाम के साथ हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इरशादत भी दीने इस्लाम का अहम हिस्सा हैं, बल्कि हम हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अक़वाल व अफआल के बेगैर अल्लाह तआला के कलाम को समझ नहीं सकते हैं। अल्लाह तआला ने सैकड़ों आयात में अपनी इताअत के साथ रसूल की इहताअत का हुकुम दिया है। गरज़ ये कि क़ुरान करीम के साथ हदीसे नबवी शरीअते इस्लामिया का अहम माखज़ है। अहादीस के ज़खीरा में हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सैकड़ों इरशादात मौजूद हैं जिनमें वज़ाहत मौजूद है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद कोई नबी या रसूल नहीं आएगा और यह इरशादात मुतवातिर तौर पर उम्मत के पास पहुंचे हैं, चुनांचे आयाते क़ुरानिया और अहादीसे नबविया की रौशनी में पूरी उम्मते मुस्लिमा का इत्तिफाक़ है कि जिस तरह आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाए बेगैर कोई इंसान मुसलमान नहीं हो सकता इसी तरह आपको आखिरी नबी तसलीम किए बेगैर भी इंसान मोमिन नहीं बन सकता है। हदीस की किताबों में हुज़ूर अकरम सल्ल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सैकड़ों अक़वाल खत्मे नबूवत पर वाज़ेह तौर पर दलालत करते हैं, यहां सिर्फ दो अहादीस पेशे खिदमत है।

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया मेरी मिसाल मुझसे पहले अम्बिया के साथ ऐसी है जैसे किसी शख्स ने घर बनाया और उसको बहुत उम्दा और आरास्ता व पैरास्ता बनाया, मगर उसके गोशा में एक ईंट की जगह तामीर से छोड़ दी, पस लोग उसके देखने को जूक़ दर जूक़ आते हैं और खुश होते हैं और कहते जाते हैं कि यह एक ईंट भी क्यों न रख दी गई (ताकि मकान की तामीर पूरी हो जाती) चुनांचे मैंने उस जगह को भर दिया और मुझसे ही नबूवत की कमी पूरी हुई और मैं ही नबियों में आखिरी नबी हूं और मुझ पर तमाम रसूल खत्म कर दिए गए। (सही मुस्लिम, तिर्मीज़ी, नसई, मुसनद अहमद) हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक मिसाल देकर खत्मे नबूवत के मसअला को रोज़े रौशन की तरह वाज़ेह फरमा दिया।

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया बनी इसराइल के सियासत खुद उनके अम्बिया अलैहिमुस्सलाम किया करते थे, जब किसी नबी की वफात होती थी तो अल्लाह तआला किसी दूसरे नबी को उनका खलीफा बना देता था, लेकिन मेरे बाद कोई नबी नहीं, अलबत्ता खुलफा होंगे और बहुत होंगे। (बुखारी व मुस्लिम)

क़ुरान व हदीस की रौशनी में खैरुल क़ुरून से आज तक पूरी उम्मते मुस्लिमा का इत्तिफाक़ है कि नबूवत व रिसालत का सिलसिला आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर खत्म हो गया, अब कोई नबी पैदा नहीं होगा। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह तआला के

आखिरी नबी और क़यामत तक पूरी इंसानियत के पैगम्बर हैं। सिर्फ और सिर्फ शरीअते मोहम्मदिया (यानी क़ुरान व हदीस और उनसे माखूज़ उलूम) ही इंसानों के लिए मशअले राह है।

बेमिसाल अदीब अरबी हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जवामिउल कलिम (अकवाले ज़र्रीं)

फसाहत व बलागत के पैकर और बेमिसाल अदीबे अरब हज़रत मोहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि मुझे जवामिउल कलिम से नवाज़ा गया है। (सही बुखारी) जिसका हासिल यह है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम छोटे से जुमले में बड़े वसी मानी को बयान करने की क़ुदरत रखते थे। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बेशुमार खुसूसियात में से एक अहम तरीन खुसूसियत यह भी है कि जिस वक़्त आप पर पहली वही नाज़िल हुई और आपसे पढ़ने के लिए कहा गया तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने "मा अना बिक़ारी" कह कर माज़रत चाही, लेकिन अल्लाह तआला की जानिब से ऐसी खासुल खास तरबियत हुई कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के क़ौल व अमल को रहती दुनिया तक उसवा बना दिया गया। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अक़वाल ज़र्रीं से फायदा उठाने वाले हज़रात बड़े बड़े अदीब व फसीह व बलीग बन कर दुनिया में चमके। आपकी ज़बाने मुबारक से निकले बाज़ जुमले रहती दुनिया तक अरबी ज़बान के मुहावरे बन गए। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के वाज़ व नसीहत, खुतबे, दुआ और रसाइल से अरबी ज़बान को अल्फ़ाज़ के नए ज़खीरे के साथ एक मुंफरिद उसलूब भी मिला।

यह एक मोजज़ा ही तो है कि "मा अना बिक़ारी" कहने वाला शख्स कुछ ही अरसा बाद एक मौक़ा पर इरशाद फरमाता है "मैं अरब में सबसे ज़्यादा फसीह हुं, इसकी वजह यह है कि मैं क़बीला कुरैश से हूं

और मेरी रिज़ाअत क़बीला बनी साद में हुई।" (आफाएक़ फी गरीबिल हदीस लिज्जमखशरी) यह दोनों क़बीले उस वक़्त अपनी ज़बान व अदब में खुसूसी मक़ाम रखते थे। इसी तरह हज़रत अबू बकर सिद्दीक रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक मरतबा हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से फरमाया "मैं सर जमीन अरब बहुत घूम चुका हूँ, बड़े बड़े फुसहा के कलाम को सुना हूँ, लेकिन आपसे ज़्यादा फसीह किसी शख्स को नहीं पाया। आपको किसने अदब सिखाया?" हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जवाब में इरशाद फरमाया कि "मुझ मेरे रब ने अदब सिखाया और बेहतरीन अदब से नवाजा।"

मज़कूरा हदीस की सनद पर उलमा ने कुछ कलाम किया है, मगर इसमें वारिद मानी व मफहूम को सबने तसलीम किया है।

गरज़ ये कि अल्लाह तआला की जानिब से फसाहत व बलागत का ऐसा मेयार आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अता किया गया जिसकी नज़ीर क़यामत तक मिलना मुमकिन नहीं है और आपके अक़वाले जर्रीं इंसानियत के लिए मशअले राह हैं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के खुतबे खास कर हज्जतुल विदा के मौक़े पर दिया गया आपका आखिरी अहम खुतबा न सिर्फ जवामिउल कलिम में से है बल्कि हुक़ूक़े इंसानी का बुनियादी मन्शूर भी है। इस खुतबा-ए-मुबारका में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आज से चैदह सौ साल पहले मुख्तसर व जामे अल्फ़ाज़ में इंसानियत के लिए ऐसे उसूल पेश किए जिनपर अमल करके आज पूरी दुनिया में अमन व अमान क़ायम किया जा सकता है।

जहां हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अक़वाल जर्रीं को खुसूसी अहमियत हासिल है, वहीं शरीअते इस्लामिया में इन अक़वाल

जर्रीं को याद करके महफूज़ करने की भी खास फज़ीलत आई हैं चुनांचे हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया "जो शख्स मेरी उम्मत के फायदा के वास्ते दीन के काम की चालीस अहादीस याद करेगा अल्लाह तआला उसको क़यामत के दिन आलिमों और शहीदों की जमाअत में उठाएगा और फरमाएगा कि जिस दरवाज़े से चाहे जन्नत में दाखिल हो जाए।" यह हदीस हज़रत अली, हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद, हज़रत मआज़ बिन जबल, हज़रत अबू दरदा, हज़रत अबू हुरैरा, हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास, हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर, हज़रत जाबिर और हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हुम से रिवायत है और हदीस की मुख्तलिफ किताबों में लिखी है। बाज़ उलमा ने हदीस की सनद में कुछ कलाम किया, मगर हदीस में मज़कूरा सवाब के हुसूल के लिए सैकड़ों उलमा ने अपने अपने तर्ज़ पर चालीस अहादीस जमा की हैं। सही मुस्लिम की सबसे मशहूर शरह लिखने वाले इमाम नववी की चालीस अहादीस पर मुशतमिल किताब "अलअरबईन नौविया" पूरी दुनिया में काफी मक़बूल हुई है।
सही बुखारी व सही मुस्लिम में वारिद हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चालीस फरमान पेशे खिदमत हैं जिनमें इल्म व मारिफत के खज़ाने भर दिए गए हैं और यह आला अखलाक और तहज़ीब व तमद्दुन के जर्रीं उसूल हैं। लिहाजा हमें चाहिए कि इन अहादीस को याद करके इन पर अमल करें और दूसरों को पहुंचाएं ताकि गैर मुस्लिम हज़रात भी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सही तालीमात से वाक़िफ हो इस्लाम से मुतअल्लिक़ अपने शक व शुबहात दूर कर सकें।

1) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया तमाम आमाल का दारोमदार नियत पर है। (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

2) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कबीरा गुनाह अल्लाह के साथ किसी को शरीक ठहराना है, वालिदैन की नाफरमानी करना, किसी बेगुनाह को क़त्ल करना और झूटी गवाही देना है। (सही बुखारी)

3) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया सात हलाक करने वाले गुनाह से बचो। सहाबा ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! वह सात बड़े गुनाह कौन से हैं (जो इंसान को हलाक करने वाले हैं)? हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया शिर्क करना, जादू करना, किसी शख्स को नाहक़ क़त्ल करना, सूद खाना, यतीम के माल को हड़पना, मैदाने जंग से भागना, पाक दामन औरतों पर तोहमत लगाना। (सही बुखारी व मुस्लिम)

4) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया मुनाफिक़ की तीन अलामतें (निशानी) हैं, झूट बोलना, वादा खिलाफी करना, अमानत में खयानत करना। (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

5) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया तुममें सबसे बेहतर शख्स वह है जो क़ुरान सीखे और खिखाए। (सही बुखारी)

6) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया अल्लाह के नज़दीक सब अमलों में वह अमल ज़्यादा महबूब है जो दायमी हो अगरचे थोड़ा हो। (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

7) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया मैं आखिरी नबी हूं, मेरे बाद कोई नबी पैदा नही होगा। (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

8) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया पाक रहना आधा ईमान है। (सही मुस्लिम)

9) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया अल्लाह के नज़दीक सबसे महबूब जगह मस्जिदें हैं। (सही मुस्लिम)

10) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया जिसने मुझ पर एक मरतबा दरूद भेजा अल्लाह तआला उसपर 10 मरतबा रहमतें नाज़िल फरमाएगा। (सही मुस्लिम)

11) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया मोमिन एक बिल से दोबारा डसा नहीं जाता है। (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

12) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया पहलवान शख्स वह नहीं जो लोगों को पछाड़ दे बल्कि पहलवान वह शख्स है जो गुस्सा के वक़्त अपने नफ्स पर काबू रखे। (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

13) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया मुसलमान के मुसलमान पर पांच हक़ हैं। सलाम का जवाब देना, मरीज़ की अयादत करना, जनाज़ा के साथ जाना, उसकी दावत क़बूल करना, छींक का जवाब यरहमुकुमुल्लाह कह कर देना। (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

14) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया अल्लाह उस शख्स पर रहम नहीं करता जो लोगों पर रहम नहीं करता। (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

15) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया ज़ुल्म क़यामत के रोज़ अंधेरों की सूरत में होगा। (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

16) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया चुगलखोर जन्नत में नहीं जाएगा। (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

17) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया दुनिया में ऐसे रहो जैसे कोई मुसाफिर या राहगुज़र रहता है। (सही बुखारी)

18) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया रिशता तोड़ने वाला जन्नत में नहीं जाएगा। (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

19) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया अगर कोई शख्स (रोज़ा रख कर भी) झूट बोलना और उस पर अमल करना नहीं छोड़ता तो अल्लाह तआला को उसकी कोई ज़रूरत नहीं कि वह अपना खाना पीना छोड़ दे। (सही बुखारी)

20) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया इंसान के झूटा होने के लिए इतना ही काफी है कि जो बात सुने (बेगैर तहक़ीक़ के) लोगों से बयान करना शुरू कर दे। (सही मुस्लिम)

21) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया वह शख्स जन्नत में नही जाएगा जिसका पड़ोसी उसकी तकलीफों से महफूज़ न हो। (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

22) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया तुम में से वह शख्स मेरे नज़दीक ज़्यादा महबूब है जो अच्छे अखलाक़ वाला हो। (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

23) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया सदक़ा देने से माल में कमी नहीं आती और जो बन्दा दरगुज़र करता है अल्लाह तआला उसकी इज़्ज़त बढ़ाता है और जो बन्दा अल्लाह के लिए आजिज़ी इख्तियार करता है उसका दर्जा बुलंद करता है। (सही मुस्लिम)

24) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया अगर कोई शख्स अपने घर वालों पर खर्च करता है तो वह भी सदक़ा है, यानी उसपर भी अजर मिलेगा। (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

25) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया ऐ नौजवान की जमाअत! तुम में से जो भी निकाह की इस्तिताअत रखता हो उसे निकाह कर लेना चाहिए, क्योंकि यह नज़र को नीची रखने वाला और शरमगाहों की हिफाज़त करने वाला है और जो कोई निकाह की इस्तिताअत न रखता हो उसे चाहिए कि रोज़े रखे, क्योंकि यह उसके लिए नफसानी खाहिशात में कमी का बाइस होगा। (सही बुखारी)

26) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया औरत से निकाह (आम तौर पर) चार चीजों की वजह से किया जाता है। उसके माल की वजह से, उसके खानदान के शर्फ की वजह से, उसकी खुबसूरती की वजह से और उसके दीन की वजह से। तुम दीनदार औरत से निकाह करो, अगरचे गर्द आलूद हों तुम्हारे हाथ,

यानी शादी के लिए औरत में दीनदारी को ज़रूर देखना चाहिए, चाहे तुम्हें यह बात अच्छी न लगे। (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

27) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया हलाल वाज़ेह है, हराम वाज़ेह है। उनके दरमियान कुछ मुशतबह चीजें हैं जिनको बहुत सारे लोग नहीं जानते। जिस शख्स ने शुबहा वाली चीजों से अपने आपको बचा लिया उसने अपने दीन और इज़्ज़त की हिफाज़त की और जो शख्स मुशतबा चीजों में पड़ेगा वह हराम चीजों में पड़ जाएगा उस चरवाहे की तरह जो दूसरे की चरागाह के करीब बकरियां चराता है, क्योंकि बहुत मुमकिन है कि उसका जानवर दूसरे की चरागाह से कुछ चरले। अच्छी तरह सुन लो कि हर बादशाह की एक चरागाह होती है, याद रखो कि अल्लाह की ज़मीन में अल्लाह की चरागाह उसकी हराम करदा चीजें हैं और सुन लो कि जिस्म के अंदर एक गोशत का टुकड़ा है। जब वह संवर जाता है तो सारा जिस्म संवर जाता है और जब वह बिगड़ जाता है तो पूरा जिस्म बिगड़ जाता है, सुन लो कि यह (गोशत का टुकड़ा) दिल है। (सही बुखारी)

28) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया अल्लाह की कसम! मुझे तुम्हारे लिए गरीबी का खौफ नहीं है बल्कि मुझे खौफ है कि पहली क़ौमों की तरह कहीं तुम्हारे लिए दुनिया यानी माल व दौलत खोल दी जाए और तुम उसके पीछे पड़ जाओ, फिर वह माल व दौलत पहले लोगों की तरह तुम्हें हलाक कर दे। (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

29) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया अल्लाह तआला बन्दा की मदद करता रहता है जबतक बन्दा अपने भाई की मदद करता रहे। (सही मुस्लिम)

30) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया जब अमानतों में खयानत होने लगे तो बस क़यामत का इंतिज़ार करो। (सही बुखारी)

31) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया हराम खाने पीने और पहनने वालों की दुआऐं कहां से क़बूल हों। (सही मुस्लिम)

32) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया मिसकीन और बेवा औरत की मदद करने वाला अल्लाह के रास्ते में जिहाद करने वाले की तरह है। (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

33) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया तुम्हें अपने कमज़ोरों के तुफैल से रिज़्क़ दिया जाता है और तुम्हारी मदद की जाती है। (सही बुखारी)

34) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया अल्लाह तआला ऐसे शख्स पर रहम करे जो बेचते वक़्त, खरीदते वक़्त और तक़ाज़ा करते वक़्त (क़र्ज़ वगैरह का) फैयाज़ी और वुसअत से काम लेता है। (सही बुखारी)

35) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया खाओ, पीयो, पहनो और सदक़ा करो, लेकिन फुज़ूलखर्ची और तकब्बुर के बेगैर (यानी फुज़ूलखर्ची और तकब्बुर के बेगैर खूब अच्छा खाओ, पीयो, पहनो और सदक़ा करो)। (सही बुखारी)

36) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया रश्क दो ही आदमियों पर हो सकता है, एक वह जिसे अल्लाह ने माल दिया और उसे माल को राहे हक़ में लुटाने की पूरी तौफीक़ मिली हुई है और दूसरा वह जिसे अल्लाह ने हिकमत दी है और वह उसके ज़रिया फैसला करता है और उसकी तालीम देता है। (सही बुखारी)

37) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया मोमिन की मिसाल उनकी दोस्ती और इत्तिहाद और शफक़त में बदन की तरह है। बदन में से जब किसी हिस्सों को तकलिफ होती है तो सारा बदन नींद न आने और बुखार आने में शरीक होता है। (सही मुस्लिम)

38) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया आपस में बुग्ज़ न रखो, हसद न करो, पीछे बुराई न करो, बल्कि अल्लाह के बन्दे और आपस में भाई बन कर रहो और किसी मुसलमान के लिये जाएज़ नहीं कि अपने किसी भाई से तीन दिन से ज़्यादा नाराज़ रहे। (सही बुखारी)

39) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया (सच्चा) मुसलमान वह है जिसके हाथ और ज़बान (के ज़रर) से दूसरे मुसलमान महफूज़ रहें। मुहाजिर वह है जो उन कामों को छोड़ दे जिनसे अल्लाह ने मना किया है। (सही बुखारी)

40) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया हर चीज़ में भलाई फ़र्ज़ है, लिहाज़ा जब तुम (किसी को क़िसासन) क़त्ल करो तो अच्छी तरह क़त्ल करो और ज़बह करो तो अच्छी तरह ज़बह करो और तुम में से हर एक को अपनी छुरी तेज़ कर लेनी चाहिए और अपने जानवर को आराम देना चाहिए। (सही मुस्लिम)

खातमुन्नबिय्यीन व सैयदुल मुरसलीन हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मज़कूरा बाला इरशादात की रौशनी में हम इंशाअल्लाह बड़े बड़े गुनाह खास कर शिर्क, वालिदैन की नाफरमानी, क़त्ले नफ्स, चुगलखोरी, जादू, सूद, ज़ुल्म व ज़्यादती, वादा खिलाफी, अमानत में खयानत, क़ता रहमी, पड़सियों को तकलीफ पहुंचाना, हराम और मुशतबा चीजों का इस्तेमाल, फुज़ूलखर्ची, तकब्बुर, हसद और बुग्ज़ जैसी मुहलिक बुराइयों से अपने आपको महफूज़ रखेंगे जो हमारे मुआशरे में नासूर बन गई हैं और अपने नबी की तालीमात के मुताबिक़ सिर्फ और सिर्फ अल्लाह की खुशनूदी हासिल करने के लिए नेक आमाल करेंगे और अपने अखलाक़ को बेहतर बना कर इस्तिक़ामत के साथ दुनियावी फानी ज़िन्दगी में ही उखरवी दायमी ज़िन्दगी की तैयारी करने की हर मुमकिन कोशिश करेंगे। अल्लाह तआला हमें फसाहत व बलागत के पैकर और बेमिसाल अदीबे अरब हज़रत मोहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जवामिउल कलिम (अकवाले जर्रीं) को समझ कर पढ़ने वाला, उनके मुताबिक़ अमल करने वाला और उनके क़ीमती पैगामात को दूसरों तक पहुंचाने वाला बनाए, आमीन।

मुख्तसर सीरते नबवी
सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लाहु अलैहि वसल्लम

हमारे नबी हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मक्का में सोमवार के रोज़ 9 रबीउल अव्वल (571 इस्वी) को पैदा हुए।

अभी मां के पेट में ही थे कि आपके वालिद अब्दुल्लाह का इंतिक़ाल हो गया।

जब आपकी उम्र 6 साल की हुई तो आपकी वालिदा आमेना का इंतिक़ाल हो गया।

जब 8 साल 2 माह 10 दिन के हुए तो आपके दादा अब्दुल मुत्तलिब भी फौत हो गए।

जब 13 साल के हुए तो चाचा अबू तालिब के साथ तिजारत की गरज़ से मुल्के शाम रवाना हुए मगर, रास्ता से ही वापस आ गए।

जवान हो कर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कुछ दिनों तिजारत की।

25 साल की उम्र में हज़रत खदीजा (रज़ियल्लाहु अन्हा) से आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शादी हुई, शादी के वक़्त हज़रत खदीजा (रज़ियल्लाहु अन्हा) की उम्र 40 साल थी।

35 साल की उम्र में जब क़बीला कुरैश में काबा की तामीर पर झगड़ा हुआ तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस झगड़े का बेहतरीन हल पेश किया जिससे सारा मसअला ही हल हो गया, जिस पर सबने आपको सादिक और अमीन के लक़ब से नवाज़ा।

40 साल की उम्र में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को नबूवत अता की गई।

तीन साल तक नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम चुपके चुपके लोगों को इस्लाम की दावत देते रहे, फिर खुल्लम खुल्ला इस्लाम की दावात देने लगे।

खुल्लम खुल्ला इस्लाम की दावत देने पर मुसलमानों को बहुत ज़्यादा सताया जाने लगा, 2 साल तक मुसलमानों को बहुत तकलिफें दी गईं।

मुसलमानों ने तंग आकर मक्का से चले जाने का इरादा किया, चुनांचे 5 नबूवत में सहाबा की एक जमाअत हबशा हिजरत कर गई।

6 नबूवत, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चाचा हमज़ा और उनके तीन दिन बाद हज़रत उमर फारूक मुसलमान हुए। (रज़ियल्लाहु अन्हुमा)

इन दोनों के ईमान लाने से पहले मुसलमान छुप छुप कर नमाज़ पढ़ा करते थे, अब खुल कर नमाज़ पढ़ने लगे।

7 नबूवत, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के खिलाफ क़ुरैश ने आपस में एक अहद नामा लिखा कि कोई शख्स मुसलमानों और हाशमी क़बीला के साथ लेन देन और रिश्ता नाता नहीं करेगा, इस ज़ुल्म की वजह से मुसलमान और हाशमी क़बीले के लोग तक़रीबन तीन साल तक एक पहाड़ी की खोह में बन्द रहे।

10 नबूवत, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चचा अबू तालिब और उम्मुल मोमेनीन हज़रत खदीजा (रज़ियल्लाहु अन्हा) का इंतिक़ाल हुआ, आपको बहुत ज़्यादा रंज व गम हुआ।

10 नबूवत, चचा अबू तालिब के इंतिक़ाल के बाद कुफ्फारे मक्का ने खुल कर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तकलीफ देनी शुरू कर दी।

10 नबूवत, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ताइफ जा कर लोगों के सामने इस्लाम की दावत दी, लेकिन वहां पर भी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बहुत सताया गया।

11 नबूवत, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के वाज़ व नसीहत पर मदीना के छः हज़रात मुसलमान हुए।

27 रजब 12 नबूवत, 51 साल 5 महीना की उम्र में नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मेराज हुई, मुसलमानों पर पांच नमाजें फ़र्ज़ हुईं।

12 नबूवत, मौसमे हज में 18 शख्स मदीना से मक्का आए, उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हाथ पर इस्लाम क़बूल किया।

13 नबूवत, 2 औरतें और 73 मर्द मदीना से मक्का आए, उन्होंने रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हाथ पर इस्लाम क़बूल किया और उन्होंने नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मदीना चलने की दरखास्त की, नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मदीना हिजरत करने के लिए राज़ी हो गए।

13 नबूवत, (पहली रबीउल अव्वल) आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मदीना हिजरत फरमाने के लिए मक्का से रवाना हुए।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सफरे हिजरत में मदीना के करीब बनू उमर बिन औफ की बस्ती क़ुबा में चंद रोज़ का क़याम फरमाया और मस्जिदे क़ुबा की बुनियाद रखी, क़ुबा से मदीना जाते हुए बनू सालिम बिन औफ की आबादी में पहुंच कर उस मक़ाम पर जुमा पढ़ाया जहां अब मस्जिद (मस्जिदे जुमा) बनी हुई है।

1 हिजरी, मदीना पहुंचकर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहाबा-ए-किराम के साथ मिलकर मस्जिदे नबवी तामीर फरमाई, ज़ुहर, असर और इशा की नमाज़ में अब तक फ़र्ज़ रिकात की तादाद 2 थी, मदीना पहुंचकर 4 रिकात हो गइ, मुहाजेरीन सहाबा का अंसार सहाबा के साथ भाई चारा क़ायम किया गया, मदीना के यहूदियों और आस पास के रहने वाले क़बीलों से अमन और दोस्ती के अहदनामे हुए।

2 हिजरी, नमाज़ के लिए अज़ान दी जाने लगी, काबा (बैतुल्लाह) की तरफ रूख करके नमाज़ पढ़ी जाने लगी।

2 हिजरी, रमज़ान के रोज़े फ़र्ज़ हुए।

3 हिजरी, ज़कात फ़र्ज़ हुई।

4 हिजरी, शराब पीना हराम हुआ।

5 हिजरी, औरतो को परदा करने का हुकुम हुआ।

6 हिजरी, सुलह हुदैबिया हुई, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उमरह की अदाएगी के बेगैर मदीना वापस आ गए, उस वक़्त के मशहूर बादशाहों को नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस्लाम की दावत दी, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दावत पर बादशाहों और हुकुमरानों के अलावा अरब के बड़े बड़े क़बीले मुसलमान हुए।

7 हिजरी, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उमरह की क़ज़ा की, क्योंकि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम 6 हिजरी में सुलह हुदैबिया की वजह से उमरह अदा नहीं कर सक थे।

8 हिजरी, मक्का फतह हुआ, खाना काबा को बुतों से पाक व साफ किया गया।

9 हिजरी, हज फ़र्ज़ हुआ, हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ (रज़ियल्लाहु अन्हु) की सरपरस्ती में सहाबा-ए-किराम की एक जमाअत ने हज अदा किया, हज़रत अली (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने मैदाने हज में नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हुकुम से एलान किया कि अब आइन्दा कोई काफिर खाना काबा के अन्दर दाखिल नहीं होगा।

10 हिजरी, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तक़रीबन एक लाख चैबीस हज़ार सहाबा-ए- किराम के साथ हज (हज्जतुल विदा) अदा किया।

11 हिजरी, 63 साल और पांच दिन की उम्र में 12 रबीउल अव्वल को सोमवार के रोज़ आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इस दारेफानी से कूच फरमा गए।

गरज़ नबूवत के बाद आप सल्लहु अलैहि वसल्लम तक़रीबन 23 साल हयात से रहे, 13 साल मक्का में और 10 साल मदीना में।

गज़वात- नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मदीना हिजरत करने के बाद दुशमनों के साथ 2 हिजरी से 9 हिजरी के दौरान आठ साल में बहुत सी जंगें हुईं जिनमें से मशहूर जंगें यह हैं: जंगे बदर 2 हजरी, जंगे उहद 3 हिजरी, जंगे खंदक़ 5 हिजरी, जंगे खैबर 5 हिजरी, जंगे फतह 8 हिजरी, जंगे हुनैन 8 हिजरी, जंगे तबूक 9 हिजरी।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अज़वाजे मुतहहरात

अज़वाजे मुतहहरात (नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बीवियों) के मुतअल्लिक़ अल्लाह तआला अपने पाक कलाम (सूरह अहज़ाब 32) में इरशाद फरमाता है "**ऐ नबी की बीवियों तुम आम औरतों की तरह नहीं हो, तुम बुलंद मक़ाम की हामिल हो। तुम्हारी एक गलती पर दो गुना अज़ाब दिया जाएगा। और इसी तरह तुम में से जो कोई अल्लाह और उसके रसूल की फरमाबरदारी करेगी और नेक काम करेगी हम उसे अज्र (भी) दोहरा देंगे और उसके लिए हमने बेहतरीन रोज़ी तैयार कर रखी है।**" जैसा कि सूरह अहज़ाब 30 और 31 में मज़कूर है।

क़ुरान करीम, रोज़े क़यामत तक के लिए लोगों से मुखातब है "**ऐ ईमान वालो! तुम्हारे लिए यह हलाल नहीं है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद उनकी अज़वाजे मुतहहरात में से किसी से निकाह करो।**" (सूरह अहज़ाब 53) यानी अज़वाजे मुतहहरात (नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बीवियाँ) तमाम ईमान वालों के लिए माँ (उम्मुल मोमिनीन) का दर्जा रखती हैं।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने चंद निकाह फरमाए। इनमें से सिर्फ हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा कुवांरी थीं, बाक़ी सब बेवा या मुतल्लक़ा थीं। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सबसे पहला निकाह 25 साल की उम्र में हज़रत खदीजा

रज़ियल्लाहु अन्हा से किया। हज़रत खदीजा रज़ियल्लाहु अन्हा की उम्र निकाह के वक़्त चालीस साल थी, यानी हज़रत खदीजा रज़ियल्लाहु अन्हा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से उम्र में 15 साल बड़ी थीं। नीज़ वह नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से निकाह करने से पहले दो शादियां कर चुकी थीं और उन के पहले शौहरों से बच्चे भी थे। जब नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्र पचास साल की हुई तो हज़रत खदीजा रज़ियल्लाहु अन्हा का इंतिक़ाल हो गया। इसी तरह नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी पूरी जवानी (25 से 50 साल की उम्र) सिर्फ एक बेवा औरत हज़रत खदीजा रज़ियल्लाहु अन्हा के साथ गुज़ार दी।

50 से 60 साल की उम्र में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने चंद निकाह किए। यह निकाह किसी शहवत को पूरी करने के लिए नहीं किए कि शहवत 50 साल की उम्र के बाद अचानक ज़ाहिर हो गई हो। अगर शहवत पूरी करने के लिए आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम निकाह फरमाते तो कुवांरी लड़कियों से शादी करते। नीज़ हदीस में आता है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने किसी औरत से शादी नहीं की और न किसी बेटी का निकाह कराया मगर अल्लाह की तरफ से हज़रत जिबरइल अलैहिस्सलाम वही ले कर आए, बल्कि चंद सियासी व दीनी व इजतिमाई असबाब को सामने रख कर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह निकाह किए। इन सियासी व दीनी व इजतिमाई असबाब का बयान मज़मून के आखिर में आ रहा है।

सबसे पहले नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अज़वाजे मुतहहरात का मुख्तसर तआरूफ

1) **"उम्मुल मोमेनीन हज़रत खदीजा रज़ियल्लाहु अन्हा"** नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पहली बीवी हैं। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दियानत, कमाल और बरकत को देख कर उन्होंने खुद शादी की दरख्वास्त की थी। निकाह के वक़्त आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्र पचीस साल और हज़रत खदीजा रज़ियल्लाहु अन्हा की उम्र चालीस साल थी। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की चारों बेटियां (ज़ैनब, रुक़ैय्या, उम्मे कुलसूम और फातिमा) और इब्राहिम के अलावा दो बेटे (क़ासिम और अब्दुल्लाह) हज़रत खदीजा रज़ियल्लाहु अन्हा ही से पैदा हुए। हज़रत फातिमा के अलावा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सारी औलाद आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िन्दगी में ही इंतिक़ाल फरमा गई थी। हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा का इंतिक़ाल नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इंतिक़ाल के 6 माहीने बाद हो गया था। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पहली बीवी हज़रत खदीजा रज़ियल्लाहु अन्हा के इंतिक़ाल के वक़्त आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्र 50 साल थी। हज़रत खदीजा रज़ियल्लाहु अन्हा का इंतिक़ाल नबूवत के दसवीं साल हुआ, उस वक़्त हज़रत खदीजा रज़ियल्लाहु अन्हा की उम्र 65 साल थी। हज़रत खदीजा रज़ियल्लाहु अन्हा की सच्चाई और गमगुसारी को नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनकी वफात के बाद भी हमेशा याद फरमाते थे।

2) **"उम्मुल मोमेनीन हज़रत सौदा रज़ियल्लाहु अन्हा"** यह अपने शौहर (सकरान बिन अमर) के साथ मुसलमान हुई थीं, उनकी मां भी मुसलमान हो गई थीं, मां और शौहर के साथ हिजरत करके हबशा चली गईं थीं। वहां उनके शौहर का इंतिक़ाल हो गया। जब उनका कोई बज़ाहिर दुनियावी सहारा न रहा तो नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत खदीजा रज़ियल्लाहु अन्हा की वफात के बाद नबूवत के दसवें साल इनसे निकाह कर लिया। उस वक़्त आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्र 50 साल और हज़रत सौदा रज़ियल्लाहु अन्हा की उम्र 55 साल थी और यह इस्लाम में सबसे पहली बेवा औरत थीं। हज़रत खदीजा रज़ियल्लाहु अन्हा के इंतिक़ाल बाद तक़रीबन चार साल तक सिर्फ हज़रत सौदा रज़ियल्लाहु अन्हा ही आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ रहीं, क्यूंकि हज़रत आइशा की रुखसती निकाह के तीन या चार साल बाद मदीना में हुई। गरज़ तक़रीबन 55 साल की उम्र तक आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ सिर्फ एक ही औरत रही और वह भी बेवा। हज़रत सौदा का इंतिक़ाल 54 हिजरी में हुआ।

3) **"उम्मुल मोमेनीन हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा"** यह पहले खलीफा हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की बेटी हैं। हज़रत अबू बकर सिद्दसीक़ की आरज़ू थी कि मेरी बेटी नबी के घर में हो। चुनांचे हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा का निकाह नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ मक्का ही में हो गया था। मगर नबी करमी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के घर (मदीना) में 2 हिजरी को आयीं, यानी 3, 4 बाद रुखसती हुई। उस वक़्त नबी

अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्र 55 साल थी। जैसे बाप ने इस्लाम की बड़ी बड़ी खिदमात अंजाम दी थीं बेटी भी ऐसी ही आलिमा व फाज़िला हुईं कि बड़े बड़े सहाबा-ए-किराम उनसे मसाइल पूछा करते थे। 2210 अहादीस की रिवायत उनसे है। हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के बाद सबसे ज़्यादा अहादीस हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से ही मरवी है। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सिर्फ हज़रत आइशा ही कुवांरी बीवी थीं बाक़ी सब बेवा या मुतल्लक़ा थीं। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हज़रत आइशा से बहुत ज़्यादा मोहब्बत करते थे। हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा के हुजरा में ही आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफात हुई और इसी में मदफून हैं। हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा का 57 या 58 हिजरी में इंतिक़ाल हुआ।

4) “**उम्मुल मोमेनीन हज़रत हफसा रज़ियल्लाहु अन्हा**” दूसरे खलीफा हज़रत उमर फारूक रज़ियल्लाहु अन्हु की बेटी हैं। उन्होंने अपने पहले शौहर के साथ हबशा और फिर मदीना की तरफ हिजरत की थी। उनके शौहर जंगे उहद में ज़ख्मी हो गए थे और ज़ख्मों से ताब न लाकर इंतिक़ाल फरमा गए थे। इस तरह हज़रत हफसा रज़ियल्लाहु अन्हा बेवा हो गईं तो नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनसे 3 हिजरी में निकाह फरमा लिया। उस वक़्त आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्र 56 साल की थी। हज़रत हफसा रज़ियल्लाहु अन्हा बहुत ज़्यादा इबादत गुज़ार थीं। हज़रत हफसा रज़ियल्लाहु अन्हा का इंतिक़ाल 41 या 45 हिजरी में हुआ।

5) **"उम्मुल मोमेनीन हज़रत ज़ैनब बिन्ते ख़ुज़ैमा रज़ियल्लाहु अन्हा"** इनका पहला निकाह तुफैल बिन हारिस से फिर उबैदा बिन हारिस से हुआ था। यह दोनों नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम के हक़ीक़ी चचेरे भाई थे। तीसरा निकाह हज़रत अब्दुल्लाह बिन जहश से हुआ था, यह नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के फूफीज़ाद भाई थे वह जंगे उहद में शहीद हुए। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा के तीसरे शौहर के इंतिक़ाल के बाद इनसे 3 हिजरी में निकाह कर लिया था। उस वक़्त आप सल्लल्लहु अलैहि वसल्लम की उम्र 56 साल की थी। वह निकाह के बाद सिर्फ तीन माहीने ज़िन्दा रहीं। यह गरीबों की इतनी मदद और परवरिश किया करती थीं कि इनका लक़ब उम्मुल मसाकीन (मिसकीनों की मां) पड़ गया था।

6) **"उम्मुल मोमेनीन हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा"** इनका पहला निकाह हज़रत अबू सलमा रज़ियल्लाहु अन्हु से हुआ था, जो नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के फूफीज़ाद भाई थे। इन्होंने अपने शौहर के साथ हबशा और फिर मदीना की तरफ हिजरत की थी। इनके शौहर हज़रत अबू सलमा रज़ियल्लाहु अन्हु जंगे उहद के जख्मों से वफात हो गई थी। चार बच्चे यतीम छोड़े। जब कोई ज़ाहिरी दुनियावी सहारा न रहा तो नबी अकम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बेकस बच्चों और उनकी हालत पर रहम खाकर इनसे 3 हिजरी में निकाह कर लिया। निकाह के वक़्त आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्र 56 साल और हज़रत उम्मे

सलमा की उम्र 65 साल थी। 58 या 61 हिजरी में हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा का इंतिक़ाल हो गया। उम्महातुल मोमेनीन में सबसे आखिर में इन्हीं का इंतिक़ाल हुआ।
गरज़ ये कि हज़रत हफसा, हज़रत ज़ैनब बिन्ते ख़ुज़ैमा और हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हुन के शौहर जंगे उहद (3 हिजरी) में शहीद हुए, या जख्मों की ताब न लाकर इंतिक़ाल फरमा गए तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इन बेवा औरतों से इनके लिए दुनियावी सहारे के तौर पर निकाह फरमा लिया।

7) **"उम्मुल मोमेनीन हज़रत ज़ैनब बिन्ते जहश"** यह नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सगी फूफीज़ाद बहन थीं। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इनका निकाह कोशिश करके अपने मुंह बोले बेटे (आज़ाद करदा गुलाम) हज़रत ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु से करा दिया था। लेकिन शौहर की हज़रत ज़ैनब के साथ नहीं बनी और बीवी को छोड़ दिया। अगरचे नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु को बहुत समझाया, मगर दोनों का मिलाप नहीं हो सका। हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा की इस मुसीबत का बदला अल्लाह ने यह दिया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ उनका निकाह 5 हिजरी में हो गया, यानी उस वक़्त आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्र 58 साल थी। ज़मानए जाहिलियत में मुंह बोले बेटे को हक़ीक़ी बेटे की तरह समझ कर उसकी तलाक़ शुदा या बेवा औरत से निकाह करना जाएज़ नहीं समझते थे। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु की मुतल्लक़ा औरत से निकाह करके उम्मते

मुस्लिमा को यह तालीम दी कि मुंह बोले बेटे का हुकुम हक़ीक़ी बेटे की तरह नहीं है, यानी मुंह बेले बेटे की मुतल्लक़ा या बेवा औरत से शादी की जा सकती है। याद रखें कि बाप अपने हक़ीक़ी बेटे की मुतल्लक़ा या बेवा औरत से कभी भी शादी नही कर सकता। हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा का इंतिक़ाल 20 हिजरी में हज़रत उमर फारूक रज़ियल्लाहु अन्हु के ज़मानए खिलाफत में हुआ।

8) **"उम्मुल मोमेनीन हज़रत जुवैरिया रज़ियल्लाहु अन्हा"** लड़ाई में पकड़ी गई थीं और हज़रत साबित बिन क़ैस रज़ियल्लाहु अन्हु के हिस्से में आईं, हज़रत साबित बिन क़ैस रज़ियल्लाहु अन्हु 20 साल के नौजवान थे। हज़रत साबित बिन क़ैस रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत जुवैरिया रज़ियल्लाहु अन्हा से उनको आज़ाद करने के लिए कुछ पैसा मांगा। हज़रत जुवैरिया रज़ियल्लाहु अन्हा माली तआवुन के लिए नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में हाज़िर हुईं और यह भी ज़ाहिर किया कि मैं मुसलमान हो चुकी हूं। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सारी रक़म अदा करके उनको आज़ाद करा दिया, फिर फरमाया कि बेहतर है कि मैं तुम्हारे साथ निकाह कर लूँ। चुनांचे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ उनका निकाह 5 हिजरी में हो गया, यानी उस वक़्त आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्र 58 साल की थी। जब लशकर ने यह सुना कि सारे कैदी नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के रिशतेदार बन गए तो सहाबा-ए-किराम ने सब क़ैदियों को आज़ाद कर दिया। इस तरह नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इस छोटी सी तदबीर ने 100 से ज़्यादा इंसानों को लौन्डी व गुलाम बनाए जाने से

बचा दिया। नीज़ हज़रत जुवैरिया रज़ियल्लाहु अन्हा के साथ निकाह करने की वजह से क़बीला बनु मुस्तलक की एक बड़ी जमाअत ने क़बूल कर लिया। (याद रखें कि इस्लाम ने ही अरबों में ज़मानए जाहिलियत से जारी इंसानों को गुलाम व लौंडी बनाने का रिवाज रफ्ता रफ्ता खत्म किया है) हज़रत जुवैरिया रज़ियल्लाहु अन्हा का इंतिक़ाल 50 हिजरी में हुआ।

9) **"उम्मुल मोमेनीन हज़रत सफिया बिन्ते हैय बिन अखतब रज़ियल्लाहु अन्हा"** इनका तअल्लुक़ यहूदियों के क़बीला बनु नज़ीर से है। हज़रत हारून अलैहिस्सलाम की औलाद में से हैं। इनके बाप, भाई और इनके शौहर को जंग में क़त्ल कर दिया गया था। यह क़ैद हो कर आईं। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इनको इख्तियार दिया कि चाहें इस्लाम ले आएं या अपने मज़हब पर बाक़ी रहें। अगर इस्लाम लाती हैं तो मैं निकाह करने के लिए तैयार हूं वरना इनको आज़ाद कर दिया जाएगा, ताकि अपने खानदान के साथ जा मिलें। हज़रत सफिया रज़ियल्लाहु अन्हा अपने खानदान के लोगों में वापसी के बजाए इस्लाम क़बूल करके नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से निकाह करने के लिए तैयार हो गईं। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इनको आज़ाद कर दिया, फिर 7 हिजरी में इनसे निकाह कर लिया, निकाह के वक़्त नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्र 60 साल थी। हज़रत सफिया रज़ियल्लाहु अन्हा का इंतिक़ाल 50 हिजरी में हुआ।

10) **"उम्मुल मोमेनी हज़रत उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु अन्हा"** हज़रत सुफयान उमवी रज़ियल्लाहु अन्हु की बेटी हैं। जिन दिनों इनके वालिद नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ लड़ाई लड़ रहे थे यह मुसलमान हुई थीं। इस्लाम के लिए बड़ी बड़ी लकलीफें उठाईं, फिर शौहर को लेकर हबशा की तरफ हिजरत की, वहां जा कर उनका शौहर मुरतद हो गया। ऐसी सच्ची और ईमान में पक्की औरत के लिए यह कितनी बड़ी मुसीबत थी कि इस्लाम के वास्ते बाप, भाई, खानदान और अपना मुल्क छोड़ा था, परदेस में खाविन्द का सहारा था, उसकी बेदीनी से वह भी जाता रहा। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ऐसी साबिरा औरत के साथ हबशा ही में 7 हिजरी में निकाह किया, यानी उस वक़्त आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्र 60 साल थी। 44 हिजरी में हज़रत उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु अन्हा का इंतिक़ाल हो गया।

11) **"उम्मुल मोमेनीन हज़रत मैमूना रज़ियल्लाहु अन्हा"** इनके दो निकाह हो चुके थे। इनकी एक बहन हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु के, एक बहन हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु के और एक बहन हज़रत जाफर तैयार रज़ियल्लाहु अन्हु के घर में थीं। एक बहन हज़रत खालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु की मां थीं। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने चचा हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु के कहने पर 7 हिजरी में हज़रत मैमूना रज़ियल्लाहु अन्हा से निकाह कर लिया। निकाह के वक़्त आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्र 60 साल थी। 51 हिजरी में हज़रत मैमूना रज़ियल्लाहु अन्हा की वफात हुई।

इन अज़वाजे मुतहहरात में से हज़रत खदीजा रज़ियल्लाहु अन्हा और हज़रत ज़ैनब बिन्ते ख़ुज़ैमा रज़ियल्लाहु अन्हा का इंतिक़ाल आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िन्दगी में हो गया था, बाक़ी सबका इंतिक़ाल आप सल्ललल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफात के बाद हुआ।

यह सब निकाह उस आयत से पहले हो चुके थे जिसमें एक मुसलमान के वास्ते बीवियों की तादाद ज़्यादा से ज़्यादा (सारी बीवियों के दरमियान इंसाफ की शर्त के साथ) चार तक मुक़र्रर की गई है। यह भी याद रखें कि अल्लाह तआला ने नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बीवियों को दूसरों के लिए हराम क़रार दिया है जैसा कि मज़मून के शुरू में गुज़र चुका है, नीज़ सूरह अहज़ाब 52 में अल्लाह तआला इरशाद फरमात है "**इसके बाद और औरतें आपके लिए हलाल नहीं हैं और न यह दुरुस्त है कि इनके बदले और औरतों से निकाह करो अगरचे उनकी सूरत अच्छी भी लगती हो।**" यानी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इन अज़वाजे मुतहहरात के अलावा (जिनकी तादाद इस आयत के नुज़ूल के वक़्त 9 थी) दूसरी औरतों से निकाह करने या उनमें से किसी को तलाक़ देकर उसकी जगह किसी और से निकाह करने से मना फरमा दिया। इस आयत के नाज़िल होने के बाद हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कोई दूसरा निकाह भी नहीं किया।

याद रखें कि हदीस में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तमाम निकाह अल्लाह के हुकुम से ही किए, नीज़ अरबों में एक

से ज़्यादा शादी करने का आम रिवाज था, नीज़ सही बुखारी की हदीस में है कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को चालीस मर्द की ताक़त दी गई थी। गौर फरमाएं कि चालीस मर्द की ताक़त रखने के बावजूद नबी करम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पूरी जवानी उस बेवा औरत के साथ गुज़ार दी जो पहले दो शादियां कर चुकी थीं, नीज़ उनके पहले शौहरों से बच्चे भी थे। उसके बाद तीन चार साल एक दूसरी बेवा हज़रत सौदा रज़ियल्लाहु अन्हा के साथ गुज़ार दिए। इस तरह 55 साल की उम्र तक आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ सिर्फ एक बेवा औरत रही।

50 से 60 साल की उम्र में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने चंद निकाह किए जिनके सियासी व दीनी व इजतिमाई चंद असबाब यह हैं।

1) खलीफए अव्वल हज़रत अबू बकर सिद्दीक रज़ियल्लाहु अन्हु की बेटी हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा, दूसरे खलीफा हज़रत उमर फारूक रज़ियल्लाहु अन्हु की बेटी हज़रत हफसा रज़ियल्लाहु अन्हा से आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने निकाह किए। तीसरे खलीफा हज़रत उसमान रज़ियल्लाहु अन्हु और चौथे खलीफा हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी साहबजादियों का निकाह किया। गरज़ ये कि निकाह के ज़रिये (आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफात के बाद आने वाले) चारों खुलफा के साथ दामाद या ससुर का रिशता क़ायम हो गया, जिससे सहाबा के दरमियान तअल्लुक़ मज़बूत और मुस्तहकम हुआ और उम्मत में इत्तिहाद व इत्तिफाक़ पैदा हुआ।

2) जंगों में बाज़ सहाबा किराम शहीद हुए या कुफ्फारे मक्का ने मुसलमान औरतों को तलाक़ दे दी तो नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन बेवा या मुतल्लक़ा औरतों पर शफक़त व करम का मामला फरमाया और उनसे निकाह कर लिया, ताकि उन बेवा या मुतल्लक़ा औरतों को किसी हद तक दिली तसकीन मिल सके, नीज़ इंसानियत को बेवा और मुतल्लक़ा औरतों से निकाह करने की तरगीब दी।

3) नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सारे निकाह बेवा या मुतल्लक़ा औरतों से किए, लेकिन सिर्फ एक निकाह कुवांरी लड़की हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हु से किया, उन्होंने नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सोहबत में रह कर मसाइल से अच्छी तरह वाक़फियत हासिल की। अरबी मुहावरा है "छोटी उम्र में इल्म हासिल करना पत्थर पर नक्श की तरह होता है।" तक़रीबन 2210 अहादीस हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से मरवी हैं। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इंतिक़ाल के 42 साल बाद हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा का इंतिक़ाल हुआ, यानी नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफात के बाद 42 साल तक उलूमे नबूवत को उम्मते मोहम्मदिया तक पहुंचाती रहीं।

4) यहूद व नसारा में से जो हज़रात मुसलमान हुए उनके साथ आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने शफक़त व रहमत का मामला फरमाया। चुनांचे हज़रत सफिया रज़ियल्लाहु अन्हा मुसलमान हुईं तो

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनको आज़ाद किया और उनकी रज़ामंदी पर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनसे शादी की। इसी तरह हज़रत मारिया रज़ियल्लाहु अन्हा जो ईसाई थीं, ईमान लाईं तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इनको इज़्ज़त देकर इन्हें अपने साथ रखा। आपके बेटे इब्राहिम हज़रत मारिया रज़ियल्लाहु अन्हा से ही पैदा हुए।

गरज़ नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मर्द होने की हैसियत से सिर्फ एक निकाह किया और वह हज़रत खदीजा रज़ियल्लाहु अन्हु से किया और पूरी जवानी इन्हीं बेवा औरत के साथ गुज़ार दी। अलबत्ता बाक़ी निकाह रसूल होने की हैसियत से किए जिसकी तफसील ऊपर गुज़र चुकी है।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की औलाद

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सारी औलाद आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पहली बीवी हज़रत खदीजा रज़ियल्लाहु अन्हा से मक्का में पैदा हुईं सिवाए आपके बेटे हज़रत इब्राहिम के, वह हज़रत मारिया क़िबतिया से मदीना में पैदा हुए।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तीन बेटे

1) कासिम 2) अब्दुल्लाह 3) इब्राहिम

क़ासिम - मक्का में नबूवत से पहले पैदा हुए। दो साल छः महीने के हुए तो उनका इंतिक़ाल हो गया। बाज़ हजरात ने लिखा है कि कासिम 7 महीने की उम्र में ही अल्लाह को प्यारे हो गये थे। मक्का में मदफून हैं। इन्हीं की तरफ निसबत करके आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अबुल क़ासिम कहा जाता है।

अब्दुल्लाह - मक्का में नबूवत के बाद पैदा हुए। दो साल से कम उम्र ही में उनका इंतिक़ाल हो गया। मक्का में मदफून हैं। इनको तय्यब व ताहिर भी कहा जाता है। इन्हीं की मौत पर किसी शख्स ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अबतर कहा (वह शख्स जिसकी कोई औलाद न हो) तो सूरह अलकौसर नाज़िल हुई, जिस में अल्लाह तआला ने फरमाया कि तेरा दुशमन ही बे औलाद रहेगा।

इब्राहिम - इनकी पैदाइश मदीना में 8 हिजरी में हुई। इब्राहिम की पैदाइश पर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और सहाबा-ए-किराम बहुत खुश हुए। सात दिन के होने पर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनका अक़ीक़ा किया, बाल मुंडवाए, बालों के वज़न के बराबर मिसकीनों को सदक़ा दिया और बालों को दफन कर दिया।

10 हिजरी में 16 या 18 महीने की उम्र में बीमारी की वजह से इब्राहिम का इंतिक़ाल हो गया। इब्राहिम के इंतिक़ाल पर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम काफी रंजीदा व मगमूम हुए। मदीना के मशहूर कब्रिस्तान (अलबक़ी) में मदफून हैं। इन्हीं के इंतिक़ाल के दिन सूरज गरहन हुआ, लोगों ने समझा कि इब्राहिम की मौत की वजह से यह सूरज गरहन हुआ है तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया सूरज और चांद अल्लाह तआला की निशानियों में से दो निशानियां हैं यह किसी की जिन्दगी या मौत पर गरहन नहीं होते हैं।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की चार बेटियां

1) ज़ैनब 2) रुक़य्या

3) उम्मे कुलसूम 4) फातिमा

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तीन बेटियां आपकी हयाते मुबारका ही में इंतिक़ाल फरमा गईं, अलबत्ता हज़रत फातिमा का इंतिक़ाल आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफात के छः महीने बाद हुआ। चारों बेटियां मदीना के मशहूर कब्रिस्तान (अलबक़ी) में मदफून हैं।

ज़ैनब - आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सबसे बड़ी साहबजादी हैं। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्र जब 30 साल की थी यह पैदा हुईं। उनके शौहर हज़रत अबुल आस बिन रबी थे। उनसे दो बच्चे अली और उमामा पैदा हुए। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मदीना हिजरत करने के बाद हज़रत ज़ैनब अपने शौहर के साथ काफी दिनों तक मक्का ही में मुक़ीम रहीं। जब

इस्लाम ने मुशरेकीन के साथ निकाह करने को हराम क़रार दिया तो हज़रत ज़ैनब ने अपने शौहर से अपने वालिद के पास जाने की ख्वाहिश ज़ाहिर की, क्योंकि वह उस वक़्त तक ईमान नहीं लाए थे। चुनांचे हज़रत ज़ैनब काफी तकलीफों और परेशानियों से गुज़र कर मदीना अपने वालिद के पास पहुंचीं। कुछ दिनों के बाद हज़रत अबुल आस बिन रबी भी ईमान ले आए, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत ज़ैनब का हज़रत अबुल आस बिन रबी के साथ दोबारा निकाह कर दिया। लेकिन मदीना पहुंचकर हज़रत ज़ैनब सिर्फ 7 या 8 महीने ही जिन्दा रहीं, चुनांचे 30 साल की उम्र में ही 8 हिजरी में इंतिक़ाल फरमा गईं।

रुक़य्या - आप ल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दूसरी सहाबज़ादी हैं। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्र जब 33 साल की थी यह पैदा हुईं। इस्लाम से पहले उनका निकाह अबू लहब के बेटे उतबा से हुआ था। जब सूरह तब्बत नाज़िल हुई तो बाप के कहने पर उतबा ने हज़रत रुक़य्या को तलाक दे दी। फिर उनकी शादी हज़रत उसमान बिन अफ्फान रज़ियल्लाहु अन्हु से हुई। उनसे एक बेटा अब्दुल्लाह पैदा हुआ जो बचपन में ही इंतिक़ाल फरमा गया। हज़रत रुक़य्या 2 हिजरी में इंतिक़ाल फरमा गईं। इंतिक़ाल के वक़्त हज़रत रुक़य्या की उम्र तक़रीबन 20 साल थी।

उम्मे कुलसूम - आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तीसरी साहबज़ादी हैं। इस्लाम से पहले उनका निकाह अबू लहब के दूसरे बेटे उतैबा के साथ हुआ था। जब सूरह तब्बत नाज़िल हुई तो तो अबू

लहब के कहने पर उस बेटे ने भी हज़रत उम्मे कुलसूम को तलाक दे दी। हज़रत रुक़य्या के इंतिक़ाल के बाद उनकी शादी हज़रत उसमान बिन अफ्फान से हुई। 9 हिजरी में इंतिक़ाल फरमा गईं। इंतिक़ाल के वक़्त हज़रत उम्मे कुलसूम की उम्र तक़रीबन 25 साल थी। हज़रत उम्मे कुलसूम के इंतिक़ाल के वक़्त आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया था कि अगर मेरे पास कोई दूसरी लड़की (गैर शादी शुदा) होती तो मैं उसका निकाह भी हज़रत उसमान गनी से कर देता।

फातिमा ज़ोहरा - आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सबसे छोटी साहबज़ादी हैं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हज़रत फातिमा से बहुत मोहब्बत फरमाते थे। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्र जब 35 या 41 साल थी यह पैदा हुईं। इनका निकाह मदीना में हज़रत अली बिन अबू तालिब के साथ हुआ। सुबहानल्लाह, अलहमदु लिल्लाह, अल्लाहु अकबर की तसबीहात हज़रत फातिमा की दिन भर की थकान को दूर करने के लिए अल्लाह तआला की तरफ से हज़रत जिबरईल अलैहिस्सलाम नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास ले कर आए थे। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इंतिक़ाल के छः महीने बाद हज़रत फातिमा 23 या 29 साल की उम्र में इंतिक़ाल फरमा गईं।

हज़रत फातिमा बिन्ते नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की औलाद

1) हसन 2) हुसैन
3) ज़ैनब 4) उम्मे कुलसूम

हज़रत हसन - रमज़ान 3 हिजरी में पैदा हुए। हज़रत हसन सर से सीने तक नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुशाबह थे। हज़रत जिबरईल अलैहिस्सलाम हसन नाम को जन्नत के रेशम में लपेट कर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में ले कर आए थे और हुसैन हसन से माखूज़ है। हज़रत अली की शहादत के बाद 41 हिजरी में आपके हाथ पर बैत की गई और अमीरुल मोमेनीन का लक़ब दिया गया। रबीउल अव्वल 41 हिजरी में हज़रत मआविया से सुलह कर ली। इस तरह हज़रत हसन 6 महीने और 20 दिन अमीरुल मोमेनीन रहे। हज़रत हसन को ज़हर दिया गया, 40 दिन तक ज़हर से मुतअस्सिर रहे और रबीउल अव्वल 49 हिजरी में इंतिक़ाल फरमा गए। मदीना (अलबक़ी) में मदफून हैं।

हज़रत हुसैन - 4 हिजरी में पैदा हुए। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत हसन की तरह हज़रत हुसैन का भी अक़ीक़ा किया। हज़रत हुसैन सीने से टांगों तक नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुशाबह थे। 10 मुहर्रमुल हराम जुमा के दिन 61 हिजरी में मुल्के इराक़ में कूफा शहर के क़रीब मैदाने करबला में शहीद हुए।

हज़रत उम्मे कुलसूम - यह हज़रत उमर फारूक रज़ियल्लाहु अन्हु की अहलिया है। इनसे हज़रत ज़ैद और हज़रत रुक़य्या पैदा हुए।

हज़रत ज़ैनब -इनका निकाह हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफर बिन अबी तालिब के साथ हुआ। उनसे जाफर, औनुल अकबर, उम्मे कुलसूम और अली पैदा हुए।

हज़रत ज़ैनब बिन्ते नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की औलाद

1) अली रज़ियल्लाहु अन्हु
2) उमामा रज़ियल्लाहु अन्हु

हज़रत अली बिन ज़ैनब - इनके वालिद हज़रत अबुल आस रज़ियल्लाहु अन्हु हैं जो उनकी वालिदा हज़रत ज़ैनब के खालाज़ाद भाई थे।

हज़रत उमाम बिनते ज़ैनब - नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनसे बहुत मोहब्बत फरमाते थे। नमाज़ के दौरान कभी कभी वह अपने नाना के कंधे पर बैठ जाती थीं। हज़रत फातिमा के इंतिक़ाल के बाद हज़रत फातिमा की वसीयत के मुताबिक़ अमीरुल मोमेनीन हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने इनसे निकाह फरमा लिया था।

लिबासुन नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

पहला बाब: लिबास

यह मक़ाला सैयदुल अम्बिया व सैयदुल बशर हज़रत मोहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिबास के बयान में है। इस मक़ाला को लिखने का अहम मक़सद व गरज़ यह है कि हम अपने लिबास में हत्तल इमकान नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तरीक़े को इख्तियार करें और वह लिबास जिसकी वज़ा क़ता और पहनना गैर मसनून है इससे परहेज़ करें। अल्लाह तआला ने नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तरीक़े को कल क़यामत तक आने वाले तमाम इंसानों के लिए नमूना बनाया है जैसा कि क़ुरान करीम में इरशाद है "तुम सब के लिए रसूलुल्लाह सल्लल्लहु अलैहि वसल्लम की ज़ात में बेहतरीन नमूना है।" (सूरह अहज़ाब 21)

लिबास मसदर है जिसके मानी मलबूस (यानी पोशाक) के जैसा कि किताब जिसके मानी मकतूब। लिबास का लफ्ज़ अमामा, टोपी, क़मीस, जुब्बा, चादर, तहबन्द, पाजामा और जो कुछ पहनने में आए सबको शामिल है।

अल्लाह तआला ने लिबास के मुतअल्लिक़ क़ुरान करीम में इरशाद फरमाया "**ऐ आदम अलैहिस्सलाम की औलाद हमने तुम्हारे लिए लिबास बनाया जो तुम्हारी शरमगाहों को भी छुपाता है और मौजिबे ज़ीनत भी है और बेहतरीन लिबास तक़वा का है।**" (सूरह आराफ 26) तक़वा से मुराद वह लिबास है जिसमें हया हो। दूसरे मक़ाम पर

अल्लाह तआला ने इरशाद फरमाया "**और तुम्हें ऐसी पोशाकें दीं जो तुम्हें गर्मी से बचाती हैं।**" (सूरह नहल 81)

क़ुरान व सुन्नत की रौशनी में उलमा-ए-किराम ने लिखा है कि इंसान अपने इलाक़े की आदात व अतवार के लिहाज़ से चंद शराएत के साथ कोई भी लिबास पहन सकता है, क्यूंकि लिबास में असल जवाज़ है जैसा कि सूरह आराफ 32 में अल्लाह तआला ने बयान फरमाया कि लिबास और खाने की चीजों में वही चीज़ हराम है जिसको अल्लाह तआला ने हराम कार दिया है।

दूसरा बाब: शरई लिबास के चंद बुनियादी शराएत

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अक़वाल व अफआल की रौशनी में उलमा-ए-किराम लिबास के बाज़ हस्बे ज़ैल शराएत लिखें हैं।

1) मर्द हज़रात के लिए ऐसा लिबास पहनना फ़र्ज़ है जिससे नाफ से लेकर घुटने तक जिस्म छुप जाए और ऐसा लिबास पहनना सुन्नत है जिससे हाथ, पैर और चेहरे के अलावा पूरा जिस्म छुप जाए। औरतों के लिए ऐसा लिबास पहनना फ़र्ज़ है जिससे हाथ, पैर और चेहरे के अलावा उनका पूरा जिस्म छुप जाए।

   नोट - यहां लिबास का बयान है न कि परदे का, गरज़ ये कि गैर महरम के सामने औरत को चेहरा ढांकना ज़रूरी है

2) लिबास नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तालीमात के खिलाफ न हो। (मसलन मर्द हज़रात के लिए रेशमी कपड़े और खालिस सुर्ख या ज़र्द रंग का लिबास)

3) ऐसा तंग या हलका लिबास न हो जिससे जिस्म के आज़ा नज़र आएं।

4) मर्द हज़रात का लिबास औरतों के मुशाबह और औरतों का लिबास मर्द के मुशाबह न हो।

5) मर्द हज़रात का लिबास ज़्यादा रंगीन और औरतों का लिबास ज़्यादा खुशबू वाला न हो।

6) मर्द हज़रात का लिबास टखनों से ऊपर जबकि औरतों का लिबास टखनों से नीचे हो।

7) कुफ्फार व मुशरेकीन के मजहबी लिबास से मुशाबहत न हो।

तीसरा बाब : आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का पसंदीदा लिबास "सफेद पोशाक"

उम्मते मुस्लिमा इस बात पर मुत्तफिक़ है कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सफेद कपड़ों को बहुत पसंद फरमाते थे। बहुत सी अहादीस में इसका तज़किरा मिलाता है, यहां इख्तिसार की वजह से सिर्फ 2 हदीसें ज़िक्र कर रहा हूं।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कपड़ों में से सफेद को इख्तियार करो, क्यूंकि वह तुम्हारे कपड़ों में बेहतरीन कपड़े हैं और सफेद कपड़ों में ही अपने मुर्दे को कफन दिया करो। (तिर्मिज़ी, अबू दाउद, इब्ने माजा, मुसनद अहमद और सही इब्ने हिब्बान)

हज़रत समुरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया सफेद पहनो, क्यूंकि

वह बहुत पाकीज़ा, बहुत साफ और बहुत अच्छा है और इसी में अपने मुर्दे को कफन दिया करो। (नसई, तिर्मिज़ी, इब्ने माजा)

ज़्यादा पाकीज़ा इसलिए कि वह बहुत जल्दी मैले हो जाते हैं, इसीलिए ज़्यादा धोए जाते हैं बरखिलाफ रंगीन कपड़ों के, क्यूंकि देर से धोए जाने की वजह से उनमें ज़्यादा गंदगी होती है। अच्छे इसलिए कि तबियते सलीमा इनकी तरफ मैलान करती है। (अशअतुल लमआत)

शैख फक़ीह फक़ीह अबुल लैस समरकंदी ने अपनी किताब "बुस्तानुल आरफीन" में और फिक़ह हनफी की मशहूर व मारूफ किताब "रद्दुल मुख्तार" के मुसन्निफ अल्लामा शामी ने लिखा है कि रंगों में पसंदीदा रंग सफेद है और सफेद लिबास पहनना सुन्नत है।

चौथा बाब रंगीन लिबास के मुतअल्लिक़ आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इरशादात व अमल

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ज़्यादा तर सफेद लिबास पहना करते थे अगरचे दूसरे रंग के कपड़े भी अप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस्तेमाल किए हैं। रंगीन लिबास चादर या इबा या जुब्बा की शकल में उमूमन हुआ करता था क्यूंकि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की क़मीस और तहबंद उमूमन सफेद हुआ करती थी।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर बिन अलआस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इनको खालिस ज़र्द रंग के कपड़ों में मलबूस देखा तो फरमाया कि यह काफिरों का लिबास है, इसको न पहनो। (मुस्लिम 2077) एक

रिवायत में है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि इनको जला डालो।

हज़रत इमरान बिन हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया न तो मैं अरगवानी घोड़े पर सवार हूंगा और न पीले रंग के कपड़े पहनूंगा जो रेशमी हाशिये वाले हों और फरमाया कि खबरदार रहो कि मर्द की खुशबू वह खुशबू है जिसमें रंग न हो और औरतों की खुशबू वह खुशबू है जिसमें खुशबू न हो रंग हो। (मिशकात 375) अरगवान एक सुर्ख रंग का फूल है, अब हर सुर्ख रंग को अरगवानी कहा जाता है वही यहां मुराद है।

हज़रत अबी रिमशा रिफाअह रज़ियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि मैंने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को दो सब्ज़ कपड़ों में मलबूस देखा। (अबू दाउद, तिर्मिज़ी)

हज़रत बरा रज़ियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का क़द दरमियानी था, एक मरतबा मैंने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सुर्ख धारियों वाली चादर में मलबूस देखा। मैंने कभी भी इससे ज़्यादा खुबसूरत मनज़र नहीं देखा। (बुखारी व मुस्लिम)

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवात है कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सुर्ख धारियों वाली यमनी चादर को बहुत पसंद फरमाते थे। (बुखारी व मुस्लिम)

(**वज़ाहत**) बाज़ रिवायात में आया है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सुर्ख पोशाक इस्तेमाल की है, जबकि दूसरे अहादीस में

मर्द को सुर्ख और पीले कपड़े पहनने से नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मना फरमाया है। इस बज़ाहिर तज़ाद की मुहद्दिसीन व उलमा ने यह तौजीह बयान की है कि खालिस सुर्ख या खालिस पीले कपड़े नहीं पहनने चाहिए, अलबत्ता सुर्ख या पीले रंग की धारियों वाले (डिज़ाइन वाले) कपड़े पहने जा सकते हैं।

पांचवां बाब: आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की क़मीस

हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा फरमाती हैं कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कपड़ों में क़मीस ज़्यादा पसंद थी। (तिर्मिज़ी, अबू दाउद)

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की क़मीस के जो औसाफ अहादीस में बयान किये गये हैं उनमें से बाज़ नीचे लिखी जा रही हैं।

1) आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की क़मीस का रंग आम तौर पर सफेद हुआ करता था। (अबू दाउद, इब्ने माजा, नसई, मुसनद अहमद, सही इब्ने हिब्बान)

2) आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की क़मीस तक़रीबन आधी पिंडली तक हुआ करती थी। (अबू दाउदु, इब्ने माजा)

3) आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की क़मीस की आसतीन आम तौर पर पहुंचे तक हुआ करती थी। (अबू दाउद जिल्द 2 पेज 203, तिर्मिज़ी) कभी कभी उंगलियों के सिरे तक।

4) आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की क़मीस और क़मीस की आस्तीन कुशादा हुआ करती थी।

छठा बाब: आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अमामा

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अमामा अक्सर औकात सफेद ही हुआ करता था और कभी सियाह और कभी सब्ज़। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अमामा आम तौर पर 6 या 7 गज़ लम्बा हुआ करता था।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब अमामा बांधते तो उसे दोनों कंधों के दरमियान डालते थे। यानी अमामा शरीफ का "शिमला" दोनों कंधों के दरमियान लटकता रहता था। (मिशकात 374)

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि फतहे मक्का के दिन नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इस हाल में मक्का में दाखिल हुए कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सर पर सियाह अमामा था। (मुस्लिम, तिर्मिज़ी)

हज़रत जाफर बिन अमर बिन हुरैस अपने वालिद रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत करते हैं कि मैंने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सर मुबारक पर सियाह अमामा देखा। (तिर्मिज़ी)

(नोट) शिमला लटकाना मुस्तहब है और सुनने ज़वाएद में से है। शिमला की कम से कम मिक़दार चार अंगुल है और ज़्यादा से ज़्यादा एक हाथ है।

सातवां बाब: आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की टोपी

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आम तौर पर सफेद टोपी पहना करते थे। वतन में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सर से चिपकी हुई टोपी पहना करते थे, अलबत्ता आप सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम के सफर की टोपी उठी हुई होती थी। अल्लामा इबनुल क़य्यिम रहमतुल्लाह अलैह अपनी बुलंद पाया किताब "ज़ादुल मआद फी हदयि खैरिल इबाद" में लिखते हैं कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अमामा बांधते थे और उसके नीचे टोपी भी पहनते थे, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अमामा के बेगैर भी टोपी पहनते थे और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम टोपी पहने बेगैर भी अमामा बांधते थे। सउदी अरब के तमाम शैख का फतवा भी यही है कि टोपी नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत और तमाम मुहद्दिसीन व मुफस्सेरीन, फुक़हा व उलमाए सालेहीन का तरीक़ा है नीज़ टोपी पहनना इंसान की ज़ीनत है और क़ुरान करीम (सूरह आराफ 31) की रौशनी में नमाज़ में ज़ीनत मतलूब है, लिहाज़ा हमें नमाज़ टोपी पहन कर ही पढ़नी चाहिए। हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने गुलाम नाफे को खुले सर नमाज़ पढ़ते देखा तो बहुत गुस्सा हुए और कहा कि अल्लाह तआला ज़्यादा मुस्तहिक़ है कि हम उसके सामने ज़ीनत के साथ हाज़िर हों। इमाम अबू हनीफा ने खुले सर नमाज़ पढ़ने को मकरूह क़रार दिया है। मौजूदा ज़माना के मुहद्दिस शैख नासिरुद्दीन अलबानी ने भी अपनी किताब "तमामुल मिन्नत" के पेज 164 पर लिखा है कि ज़ेरे बहस मसअला में मेरी राय यह है कि खुले सर नमाज़ पढ़ना मकरूह है।

आठवां बाब: आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का जुब्बा

हज़रत असमा बिन्ते अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि उन्होंने एक तयालसी किसरवानिया जुब्बा मुबारक निकाला जिसका गिरेबान रेशम का था और उसके दोनों दामन रेशम से सिले हुए थे

और फरमाया कि यह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का जुब्बा है जो उम्मुल मोमेनीन हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा के पास था, जब वह वफात पा गईं तो उसे मैंने ले लिया। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उसे पहना करते थे। अब हम उसे बीमारियों के लिए धोते हैं और उससे शिफा हासिल करते हैं। (मिशकात 374)

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने रूमी और शामी ऊनी जुब्बों का भी इस्तेमाल किया है। (बुखारी व मुस्लिम)

नवां बाब: आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इज़ार (यानी तहबंद व पाजामा वगैरह)

इज़ार उस लिबास को कहते हैं जो जिस्म के निचले हिस्से में पहना जाता हे। आम तौर पर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तहबन्द का इस्तेमाल फरमाते थे, कभी कभी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पाजामा भी इस्तेमाल किया है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का तहबन्द नाफ के ऊपर से आधी पिंडली तक रहा करता था। सहाबा-ए-किराम भी आम तौर पर तहबन्द इस्तेमाल करते थे और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इजाज़त से पाजामा भी पहनते थे।

हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया मुसलमान का लिबास आधी पिंडली तक रहना चाहिए। आधी पिंडली और टखनों के दरमियान इजाज़त है। लिबास का जितना हिस्सा टखनों से नीचे हो वह जहन्नम की आग में है। (अबू दाउद, इब्ने माजा)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया लिबास का जितना हिस्सा टखनों से नीचे हो वह जहन्नम की आग में है। (बुखारी 10/218)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि नबी अकम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया लटकाना तहबन्द, क़मीस और अमामा में पाया जाता है, जिसने इनमें से किसी लिबास को बतौर तकब्बुर टखनों से नीचे लटकाया अल्ला तआला क़यामत के दिन उसकी जानिब नज़रे रहमत नहीं फरमाएगा। (अबू दाउद, नसई)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि जो हुकुम नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पाजामा के मुतअल्लिक़ फरमाया वही हुकुम क़मीस का भी है। (अबू दाउद)

मज़कूरा व दूसरी अहादीस की रौशनी में उलमा ने इस मसअला की मज़कूरा शकलें इस तरह ज़िक्र फरमाई हैं।

आधी पिंडली तक लिबास: नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत।

टखनों तक लिबास: रुख्सत यानी इजाज़त

तकब्बुर के बेगैर टखनों से नीचे लिबास: मकरूह

तकब्बुराना टखनों से नीचे लिबास: हराम

औरतों का लिबास टखनों से नीचा होना चाहिए

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया जो शख्स बतौर तकब्बुर अपना कपड़ा घसीटे अल्लाह तआला क़यामत के दिन उसकी जानिब नज़रे रहमत नहीं फरमाएगा। हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा ने सवाल किया कि औरतें अपने दामन का क्या करें? तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया वह (आधी पिंडली से) एक बालिशत नीचे लटकाएं। हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा ने दोबारा सवाल किया कि अगर फिर भी उनके क़दम खुले रहें? तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया वह (आधी पिंडली से) एक ज़िरा (शरई पैमाना जो तक़रीबन 30 सेंटीमीटर का होता है) नीचे लटकालें, लेकिन इससे ज़्यादा नहीं। (अबू दाउद, तिर्मिज़ी)

दसवां बाब: आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिबास में दरमियाना रवी

रसूल अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आला व उमदा क़ीमती लिबास भी पहने हैं मगर इनकी आदत नहीं डाली। हर क़िस्म का लिबास बेतकल्लुफ पहन लेते थे।

हजत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि रसूल अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमया जिसने दुनिया में शोहरत का कपड़ा पहना, बरोज़े क़यामत अल्लाह तआला उसे ज़िल्लत का कपड़ा पहनाएगा। (अबू दाउद)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि हमारे सामने उम्मुल मोमेनीन हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने एक पैवन्द लगी हुई चादर और मोटा तहबन्द निकाला फिर फरमाया कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रूह मुबारक इन दोनों में कब्ज़ की गई। (बुखारी जिल्द 2 पेज 865, मुस्लिम)

उम्मुल मोमेनीन हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फरमाती हैं कि मुझसे रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया ऐ आइशा! अगर तुम मुझसे मिलना चाहती हो तो तुम्हें दुनिया से इतना काफी हो जैसे सवार मुसाफिर का तोशा और अमीरों की मजलिस से अपने आपको बचाओ और किसी कपड़े को पुराना न समझो यहां तक कि उसको पैवन्द लगा लो। (तिर्मिज़ी 1780) यह इंतिहाई क़िनाअत के तालीम है कि पैवन्द लगे कपड़े पहनने में आर (बोझ) न हो।

हज़रत अमर बिन शुऐब अपने वालिद और वह उनके दादा से रिवायत करते हैं कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया अल्लाह तआला पसंद करता है कि उसकी नेमतों का असर बन्दे पर ज़ाहिर हो। (तिर्मिज़ी 2820) (यानी अगर माल अल्लाह तआला ने दिया हो तो अच्छे कपड़े पहनने चाहिएं)

हज़रत मआज़ बिन अनस रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया जिस शख्स ने अल्लाह तआला के डर से लिबास में फुजूल खर्ची से अपने आपको बचाया हालांकि वह इस पर क़ादिर था तो कल क़यामत के रोज़ अल्लाह तआला तमाम इंसानों के सामने इसको बुलाएगा और

जन्नत के ज़ेवरात में से जो वह चाहेगा उसको पहनाया जाएगा। (तिर्मिज़ी 2483)

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि एक शख्स नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में गंदे कपड़े पहने हुए हाज़िर हुआ। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया क्या उस शख्स को कोई चीज़ नहीं मिली कि यह अपने कपड़े धो सके? (नसई, मुसनद अहमद)

गरज़ ये कि हसबे इस्तिताअत फुज़ूल खर्ची के बेगैर अच्छे व साफ सुथरे लिबास पहनने चाहिएं।

ग्यारहवां बाब: लिबास के मुतअल्लिक़ आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बाज़ सुन्नतें

- दायीं तरफ से कपड़ा पहनना सुन्नत है:

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब क़मीस पहनते तो दायीं तरफ से शुरू फरमाते। (तिर्मिज़ी जिल्द1 पेज 302) इस तरह कि पहले दायां हाथ दाएं आस्तीन में डालते फिर बायां हाथ बाएं आस्तीन में डालते।

- नया लिबास पहनने की दुआ:

हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब नया कपड़ा पहनते तो इसका नाम रखते अमामा या क़मीस या चादर फिर यह दुआ पढ़ते "ऐ मेरे अल्लाह! तेरा शुक्र है कि तूने मुझे यह पहनाया, मैं इस कपड़े की खैर और जिसके लिए यह बनाया गया है उसकी खैर मांगता हूं

और इसकी और जिसके लिए यह बनाया गया उसके शर से पनाह मांगता हूं।" (अबू दाउद, तिर्मिज़ी)

- पाजामा पहनने का तरीक़ा

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तालीमात में है कि पाजामा या शलवार बैठ कर पहनें। बाज़ अहादीसे ज़ईफा में खड़े होकर पाजामा वगैरह पहनने पर सख्त वईद आई है, मसलन जिसने बैठ कर अमामा बांधा या खड़े हो पाजामा या शलवार पहनी तो अल्लाह तआला उसे ऐसी मुसीबत में मुबतला फरमाएगा जिसकी कोई दवा नहीं। यह हदीस शैख शाह अब्दुल हक़ ने अपनी किताब "कशफुल इलतिबास फी इस्तिहबाबिल लिबास" में ज़िक्र की है। हमारे उलमा हमेशा एहतियात पर अमल करते हैं, लिहाज़ा एहतियात इसी में है कि हम अपना पाजामा वगैरह बैठ कर पहनें अगरचे खड़े होकर पहनना भी जाएज़ है।

- बालों की चादर

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फरमाती हैं कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब एक मरतबा सुबह को मकान से तशरीफ ले गए तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बदन पर सियाह बालों की चादर थी। (शमाइले तिर्मिज़ी)

बारहवां बाब: रेशमी लिबास के मुतअल्लिक़ आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इरशादात

रेशमी लिबास पहनना मर्द के लिए हराम है, अलबत्ता 2 या 3 या 4 अंगुल रेशमी हाशिया वाले कपड़े मर्द हज़रात के लिए जाएज़ हैं, नीज़

खारिश और खुजली के इलाज के लिए रेशमी लिबास का इस्तेमाल मर्द हज़रात के लिए जाएज़ है।

हज़रत उमर फारूक रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया जिस मर्द ने दुनिया में रेशमी कपड़े पहने वह आखिरत में रेशमी कपड़ों से महरूम कर दिया जाएगा। (बुखारी व मुस्लिम)

हज़रत उमर फारूक रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया दुनिया में सिर्फ वही मर्द रेशमी कपड़े पहन सकता है जिसके लिए आखिरत में कोई हिस्सा नहीं। (बुखारी व मुस्लिम)

हज़रत अबू मुसा अशअरी रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया रेशमी कपड़े और सोने के ज़ेवरात मेरी उम्मत के मर्द हज़रात पर हराम हैं। (तिर्मिज़ी 1720)

हज़रत उमर फारूक रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने रेशम के पहनने से मना फरमाया है मगर एक या दो या तीन या चार उगलियों की मिक़दार। (बुखारी)

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत ज़ुबैर और हज़रत अब्दुर रहमान बिन औफ रज़ियल्लाहु अन्हुमा को खारिश के इलाज के लिए रेशम के कपड़े पहनने की इजाज़त अता फरमाई। (बुखारी व मुस्लिम)

तेरहवां बाब: लिबास में कुफ्फार व मुशरेकीन से मुशाबहत

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आम तौर पर (यानी लिबास और गैर लिबास में) कुफ्फार और मुशरेकीन से मुशाबहत करने से मना फरमाया है, चुनांचे नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का फरमान अहादीस की किताबों में मौजूद है जिसने जिस क़ौम की मुशाबहत इख्तियार की वह उनमें से हो जाएगा। (अबू दाउद 4031)

- लिबास में खास तौर से मुशाबहत करने से मना फरमाया गया है

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर बिन अलआस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इनको खालिस ज़र्द रंग के कपड़ों में मलबूस देखा तो फरमाया कि यह काफिरों का लिबास है इसको न पहनो। (मुस्लिम 2077)

खलीफा सानी हज़रत उमर फारूक रज़ियल्लाहु अन्हु ने आज़रबाइजान के मुसलमानों को पैगाम भेजा कि ऐश परस्ती और मुशरिकों के लिबास से बचो। (मुस्लिम 2609)

चैदहवां बाब: मर्दों और औरतों के लिबास में मुशाबहत

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया अल्लाह की लानत हो उन मर्दों पर जो औरतों से (लिबास या कलाम वगैरह में) मुशाबहत करते हैं, इसी तरह लानत हो उन औरतों पर जो मर्दों की (लिबास या कलाम वगैरह में) मुशाबहत करती हैं। (बुखारी)

पन्दरहवां बाब: पैंट व शर्ट और कुर्ता व पाजामा का मुवाज़ना

जैसा कि बयान किया जा चुका है कि लिबास में असल जवाज़ है, इंसान अपने इलाक़ा की आदात व अतवार के मुताबिक़ चंद शराएत के साथ कोई भी लिबास पहन सकता है, इन शराएत में से यह भी है कि कुफ्फार व मुशरेकीन का लिबास न हो। पैंट व शर्ट यक़ीनन मुसलमानों की ईजाद नहीं है, लेकिन अब यह लिबास आम हो गया है, चुनांचे मुस्लिम और गैर मुस्लिम सब इसको इस्तेमाल करते हैं। लिहाज़ा पैंट व शर्ट मुन्दर्जा बाला शराएत के साथ इस्तेमाल करना बिला कराहियत जाएज़ है, अलबत्ता पैंट शर्ट के मुक़ाबले कुर्ता व पाजामा को चंद असबाब की वजह से फौक़ियत हासिल है।

1) कुर्ता व पाजामा आम तौर पर सफेद या सफेद जैसे रंगों पर मुशतमिल होता है जबकि पैंट शर्ट आम तौर पर रंगीन होती है। अहादीसे सहीहा की रौशनी में उम्मते मुस्लिमा मुत्तफिक़ है कि अल्लाह तआला के हबीब नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सफेद पोशाक ज़्यादा पसंद फरमाते थे, नीज़ आम तौर पर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का लिबास सफेद ही हुआ करता था।

2) क़यामत तक आने वाले इंसानों के नबी हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को क़मीस बहुत पसंद थी। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की क़मीस के जो औसाफ अहादीस में मिलते हैं वह शर्ट के बजाए मौजूदा ज़माने के कुर्ते (सौब / क़मीस) में ज़्यादा मौजूद हैं।

3) अगरचे इस वक़्त पैंट शर्ट का लिबास मुस्लिम व गैर मुस्लिम सब में राएज हो चुका है, लेकिन सारी दुनिया तसलीम करती है कि पैंट शर्ट की इब्तिदा मुस्लिम कल्चर की देन नहीं, जबकि कुर्ता

पाजामा की बुनियादें नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माने से हैं, कुर्ता यानी नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के क़मीस का ज़िक्र कर चुका हूं, जहां तक पाजामा का तअल्लुक़ है तो नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हमेशा तहबन्द का इस्तेमाल फरमाते थे। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पाजामा इस्तेमाल किया या नहीं इसके मुतअल्लिक़ बाज़ मुहक़्क़िक़ीन ने इख्तिलाफ किया है लेकिन तमाम मुहक़्क़िक़ीन व मुहद्दिसीन व फुक़हा व उलमा मुत्तफिक़ हैं कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पाजामा खरीदा था और सहाबा-ए-किराम आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इजाज़त से पाजामा पहनते थे।

4) किसी ज़माना में दुनिया के किसी कोने में उलमा व फुक़हा की जमाअत ने पैंट शर्ट को अपना लिबास नहीं बनाया।

(वज़ाहत) मौजूदा ज़माना के पाजामा और सहाबा-ए-किराम के ज़माना के पाजामा में फ़र्क़ मुमकिन है मगर दोनों की बुनियाद व असास एक होने की वजह से इंशाअल्लाह फज़ीलत हासिल होगी जैसा कि सहाबा-ए-किराम और मौजूदा ज़माना की मसाजिद में ज़रूर फ़र्क़ मिलेगा मगर बुनियाद व मक़ासिद एक होने की वजह से मौजूदा ज़माना की मसाजिद को वह फज़ीलत ज़रूर हासिल होगी जिसका तज़किरा नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़बाने मुबारक से हुआ है।

किसी मुअय्यन शख्स के तंग पाजामा का किसी मुअय्यन शख्स की कुशादा पैंट से मुवाज़ना करके फैसला करना सही नहीं होगा, क्यूंकि

आम तौर पर पैंट पाजामा के मुक़ाबले में तंग होती है और जिस्म की साख्त के हिसाब से बनाई जाती है।

अल्लाह तआला हम सबको नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पाक सुन्नतों के मुताबिक़ लिबास पहनने वाला बनाए, आमीन।

अमामा अमामा या टोपी पहनना नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत व आदते करीमा

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हर हर अदा एक सच्चे और शैदाई उम्मती के लिये सिर्फ क़ाबिले इत्तिबा ही नही बल्कि मर मिटने के क़ाबिल है, चाहे उस का ताल्लुक़ इबादत से हो या रोज़मर्रा के आदात व अतवार मसलन खाना या लिबास वगैरह से। हर उम्मती को हत्तल इमकान कोशिश करनी चाहिए कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हर सुन्नत को अपनी ज़िन्दगी में दाखिल करे और जिन सुन्नतों पर अमल करना मुशकिल हो उनको भी अच्छी और मोहब्बत भरी निगाह से देखे और अमल न करने पर अफसोस करे।

उम्मते मुस्लिमा मुत्तफिक़ है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आम तौर पर अमामा या टोपी का इस्तेमाल फरमाते थे जैसा कि नीचे की अहादीस में उलमा-ए-उम्मत के अक़वाल मौजूद हैं।

अमामा से मुतअल्लिक़ अहादीस

हज़रत अमर बिन हुरैस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने लोगों को खुतबा दिया तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के (सर के) ऊपर काला अमामा था। (मुस्लिम)

बहुत से सहाबा-ए-किराम मसलन हज़रत जाबिर और हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि हुज़ूर

अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फतहे मक्का के दिन मक्का में दाखिल हुए तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सर पर काला अमामा था। (मुस्लिम, तिर्मिज़ी, इब्ने माजा)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने (मरज़ुल वफात) में खुतबा दिया तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम (के सर) पर काला अमामा था। (शमाइले तिर्मिज़ी, बुखारी)

हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब नया कपड़ा पहनते तो इसका नाम रखते अमामा या क़मीस या चादर, फिर यह दुआ पढ़ते "ऐ मेरे अल्लाह! तेरा शुक्र है कि तूने मुझे यह पहनाया, मैं इस कपड़े की खैर और जिसके लिए यह बनाया गया है उसकी खैर मांगता हूं और उसकी और जिसके लिए यह बनाया गया है उसके शर से पनाह मांगता हूं।" (तिर्मिज़ी) मालूम हुआ कि अमामा भी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिबास में शामिल था।

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को वज़ू करते देखा, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर क़ितरी अमामा था। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अमामा के नीचे अपना हाथ दाखिल फरमाया और सर के अगले हिस्से का मसह फरमाया और अमामा को नहीं खोला। (अबू दाउद)

क़ितरी - यह एक क़िस्म की मोटी खुरदुरी चादर होती है, सफेद ज़मीन पर सुर्ख धागे के मुस्ततील बने होते हैं।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया मुहरिम (यानी हज या उमरह का इहराम बांधने वाला मर्द) कुर्ता, अमामा, पाजामा और टोपी नहीं पहन सकता है। (बुखारी व मुस्लिम) मालूम हुआ कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माना में अमामा आम तौर पर पहना जाता था।

गरज़ ये कि हदीस की कोई भी मशहूर किताब दुनिया में ऐसी मौजूद नहीं है, जिसमें आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अमामा का ज़िक्र कई मरतबा वारिद न हुआ हो।

अमामा का साइज़

अमामा के साइज़ के मुतअल्लिक़ मुख्तलिफ अक़वाल मिलते हैं, अलबत्ता ज़्यादा तहक़ीक़ी बात यही है कि अमामा का कोई मुअय्यन साइज़ मसनून नहीं है, फिर भी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अमामा आम तौर पर 5 या 7 गज़ लम्बा हुआ करता था, 12 गज़ तक का सुबूत मिलता है।

अमामा का रंग

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अमामा अक्सर सफेद या सियाह हुआ करता था, अलबत्ता कभी कभी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम किसी दूसरे रंग का भी अमामा इस्तेमाल करते थे। सियाह

अमामा से मुतअल्लिक़ बाज़ अहादीस मज़मून में गुज़र चुकी हैं, जबकि मुस्तदरक हाकिम और तबरानी वगैरह में नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सफेद अमामा का तज़किरा मौजूद है, नीज़ आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सफेद कपड़ों को बहुत पसंद फरमाते थे, बहुत सी अहादीस में इसका तज़किरा मौजूद है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कपड़ों में से सफेद को इख्तियार किया करो, क्यूंकि वह तुम्हारे कपड़ों में बेहतरीन कपड़े हैं और सफेद कपड़ों में ही अपने मुर्दे को कफन दिया करो। (तिर्मिज़ी, अबू दाउद, इब्ने माजा, मुसनद अहमद व सही इब्ने हिब्बान)

हज़रत समरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया सफेद लिबास पहनो, क्यूंकि वह बहुत पाकीज़ा, बहुत साफ और बहुत अच्छा है और इसी में अपने मुर्दे को कफन दिया करो। (नसई, तिर्मिज़ी, इब्ने माजा)

अमामा में शिमला लटकाना

शिमला लटकाना मुस्तहब है और सुनने ज़वाएद में से है। शिमला की मिक़दार के सिलसिला में बाज़ अहादीस से मालूम होता है कि यह 4 अंगुल हो तो बेहतर है।

हज़रत अमर बिन हुरैस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब अमामा बांधते तो उसे दोनों

कंधों के दरमियान डालते थे। यानी अमामा का शिमला दोनों कंधों के दरमियान लटका रहता था। हज़रत नाफे (हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के शागिर्द) फरमाते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह भी ऐसा ही किया करते थे। (तिर्मिज़ी)

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हु फरमाती हैं कि एक आदमी तुर्की घोड़े पर सवार अमामा पहने हुए हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु के पास आया। उसने दोनों कंधों के दरमियान अमामा का किनारा लटका रखा था। मैंने उनके मुतअल्लिक़ हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा तो फरमाया तुमने उनको देख लिया था, वह जिबरइल अलैहिस्सलाम थे। (मुस्तदरक हाकिम)

अमामा और नमाज़

अमामा पहन कर नमाज़ पढ़ने की क्या खास फज़ीलत है? इस बारे में बहुत सी अहादीस हदीस की किताबों में ज़िक्र की गई हैं, मगर वह आम तौर पर ज़ईफ या मौज़ू हैं मसलन अमामा पहनना अरबों का ताज है। (दैलमी) अमामा बांधा करो, तुम्हारी बुरदबारी बढ़ जाएगी। (बैहक़ी, मुस्तदरक हाकिम) अमामा लाज़िम पकड़ लो, यह फरिशतों की निशानी है और पीछे लटकाया करो। (बैहक़ी, तबारी, दैलमी) अमामा के साथ 2 रिकातें बेगैर अमामा के 70 रिकातों से अफज़ल हैं। (दैलमी) अमामा के साथ जुमा बेगैर अमामा के 70 जुमा से अफज़ल है। (दैलमी)

उलमा व फुक़हा ने लिखा है कि अमामा पहन कर नमाज़ पढ़ने की अगरचे कोई खास फज़ीलत अहादीसे सहीहा में नहीं आई है, लेकिन चूंकि अमामा पहनना नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत व आदते करीमा है और सहाबा-ए-किराम व ताबेईन व तबे ताबईन भी आम तौर पर अमामा पहना करते थे, नीज़ यह किसी दूसरी क़ौम का लिबास नहीं बल्कि मुसलमानों का शेआर है और इंसानों के लिए ज़ीनत है। लिहाज़ा हमें अमामा उतार कर नमाज़ पढ़ने का एहतेमाम नहीं करना चाहिए, बल्कि आम हालात में भी अमामा या टोपी पहननी चाहिए और अमामा या टोपी पहन कर ही नमाज़ अदा करनी चाहिए, अगरचे अमामा या टोपी पहनना वाजिब या सुनन्ते मुअक्कदा नहीं है।

जब नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अमामा का इस्तेमाल करना साबित है जिस पर उम्मते मुस्लिमा मुत्तफिक़ हैं तो कोई खास फज़ीलत साबित न भी हो तब भी महज़ नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और सहाबा-ए-किराम का अमल करना भी उसकी फज़ीलत के लिए काफी है, मसलन सफेद लिबास नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पसंद था, इसलिए सफेद लिबास पहनना अफज़ल होगा, खाह किसी खास फज़ीलत और सवाब की कसरत का सुबूत मिलता हो या न हो।

अमामा को टोपी पर बांधना

हज़रत रुकाना रज़ियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि मैंने नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सुना फरमा रहे थे कि हमारे और

मुशरेकीन के दरमियान फ़र्क़ टोपी पर अमामा बांधना है। (तिर्मिज़ी) बाज़ मुहद्दिसीन ने इस हदीस की सनद में आए एक रावी को ज़ईफ क़रार दिया है।

टोपी से मुतअल्लिक़ अहादीस

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सफेद टोपी पहनते थे। (तबरानी) अल्लामा सुयूति ने अलजामिउस सगीर में लिखा है कि इस हदीस की सनद हसन है। अलजामिउस सगीर की शरह लिखने वाले शैख अली अज़ीज़ी ने लिखा है कि कि इस हदीस की सनद हसन है। (अस सिराजुल मुनीर लिशरहिल जामिउस सगीर जिल्द 4 पेज 112) हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सफेद टोपी पहनते थे। (अलमोजमुल कुबरा लित तबरानी) इस हदीस की सनद में आए एक रावी हज़रत अब्दुल्लाह बिन खेराश हैं, इब्ने हिब्बान ने इनकी तौसीक़ की है नीज़ फरमाया कि बसा औक़ात गलती करते हैं। (मजमउज़ ज़वाएद जिल्द 2 पेज 124)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया मुहरिम (यानी हज या उमरह का इहराम बांधने वाला मर्द) कुर्ता, पाजामा और टोपी पहन सकता है। (बुखारी व मुस्लिम) मालूम हुआ कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माने में टोपी आम तौर पर पहनी जाती थी।

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सफर में कान वाली टोपी पहनते थे और हज़र में पतली यानी शामी टोपी। (अबू शैख असबहानी ने इसको रिवायत किया है) शैख अब्दुर रऊफ मनावी ने लिखा है कि टोपी के बाब में यह सब से उमदा सनद है। (फैजुल क़दीर शरहुल जामे अस सगीर जिल्द 5 पेज 246)

अबू कबशा अनमारी रज़ियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि सहाबा-ए-किराम की टोपीयां फैली हुई और चिपकी हुई होती थीं। (तिर्मिज़ी)

हज़रत खालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु जंगे यरमूक के मौक़ा पर टोपी गुम हो गई तो हज़रत खालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने साथियों से कहा कि मेरी टोपी तलाश करो। तलाश करने के बावजूद भी टोपी न मिल सकी। हज़रत खालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा कि दोबारा तलाश करो, चुनांचे टोपी मिल गई। तब हज़रत खालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फरमाया कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उमरह की अदाएगी के बाद बाल मुंडवाए तो सब सहाबा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाल लेने के लिए टूट पड़े तो मैंने नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सर के अगले हिस्से के बाल तेज़ी से ले लिए और उन्हें अपनी इस टोपी में रख लिया, चुनांचे मैं जब भी लड़ाई में शरीक होता हूं तो यह टोपी मेरे साथ रहती है, इन्हीं की बरकत से मुझे फतह मिलती है (अल्लाह तआला के हुकुम से)। (रवाहु हाफिज अलबैहक़ी फी दलाइलिन नबूवत जिल्द 3 पेज 229)

इमाम बुखारी ने अपनी किताब में एक बाब बांधा हैं “बाबुस सुजूद अलस सौब फी शिद्दतिल हर्र” यानी सख्त गर्मी में कपड़े पर सजदा करने का हुकुम जिसमें हज़रत हसन बसरी का क़ौल ज़िक्र किया है कि गर्मी की शिद्दत की वजह से सहाबा किराम अपनी टोपी और अमामा पर सजदा किया करते थे।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि एक शहीद वह है जिसका ईमान उमदा हो और दुशमन से मुलाकात के वक़्त अल्लाह तआला के वादों की तसदीक़ करते हुए बहादुरी से लड़े और शहीद हो जाए उसका दर्जा इतना बुलंद होगा कि लोग क़यामत के दिन उसकी तरफ अपनी निगाह इस तरह उठाएंगे। यह कह कर हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने या हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने जो हदीस के रावी हैं अपना सर उठाया यहां तक कि सर से टोपी गिर गई। (तिर्मिज़ी)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने गुलाम नाफे को नंगे सर नमाज़ पढ़ते देखा तो बहुत गुस्सा हुए और कहा कि अल्लाह तआला ज़्यादा मुस्तहिक़ है कि हम उसके सामने ज़ीनत के साथ हाज़िर हों।

हज़रत ज़ैद बिन जुबैर और हज़रत हिशाम बिन उरवह रहमतुल्लाह अलैहिम फरमाते हैं कि उन्होंने हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (के सर) पर टोपी देखी। (मुसन्नफ इब्ने अबी शैबा)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन सईद रहमुतुल्लाह अलैह फरमाते हैं कि उन्होंने हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु (के सर) पर सफेद मिस्री टोपी देखी। (मुसन्नफ इब्ने अबी शैबा)
हज़रत अशअस रहमतुल्लाह अलैह के वालिद फरमाते हैं कि हज़रत मुसा अशअरी रज़ियल्लाहु अन्हु बैतुल खला से निकले और उन (के सर) पर टोपी थी। (मुसन्नफ इब्ने अबी शैबा)

(वज़ाहत) हदीस की इस मशहूर किताब "मुसन्निफ इब्ने अबी शैबा" में बहुत से सहाबा-ए-किराम की टोपीयों का तज़किरा किया गया है, इनमें से इख्तिसार की वजह से मैंने सिर्फ तीन सहाबा-ए-किराम की टोपी का तज़किरा यहां किया है।

टोपी से मुतअल्लिक़ बाज़ उलमा-ए-उम्मत के अक़वाल

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और सहाबा-ए-किराम की टोपियों का तज़किरा इस मुख्तसर मज़मून में करना मुशकिल है लिहाज़ा इन्ही चंद अहादीस पर इकतिफा करता हूं, अलबत्ता बाज़ उलमा व फुक़हा के अक़वाल का ज़िक्र करना मुनासिब समझता हूं।

हज़रत इमाम अबू हनीफा की राय है कि नंगे सर नमाज़ पढ़ने से नमाज़ तो अदा हो जाएगी मगर ऐसा करना मकरूह है। फिक़ह हनफी की बेशुमार किताबों में यह मसअला मज़कूर है। अल्लामा इबनुल क़य्यिम रमतुल्लाह अलैह ने लिखा है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अमामा बांधते थे और उसके नीचे टोपी भी पहनते थे, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अमामा के बेगैर भी टोपी

पहनते थे और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम टोपी पहने बेगैर भी अमामा बांधते थे। (ज़ादुल मआद फी हदयि खैरिल इबाद)

शैख नासिरुद्दीन अलबानी रहमतुल्लाह अलैह की राय है कि नंगे सर नमाज़ पढ़ने से नमाज़ तो अदा हो जाएगी, मगर ऐसा करना मकरूह है। (तमामुल मिन्नह पेज 164)
शैख इबनुल अरबी रहमतुल्लाह अलैह फरमाते हैं कि टोपी अम्बिया और सालेहीन के लिबास से है। सर की हिफाज़त करती है और अमामा को जमाती है। (फैज़ुल क़दीर)

हिन्द व पाकिस्तान व बंगलादेश व अफगानिस्तान के जमहूर उलमा फरमाते हैं कि नंगे सर नमाज़ पढ़ने से नमाज़ तो अदा हो जाएगी मगर ऐसा करना मकरूह है।
एक अहले हदीस आलिमे दीन ने लिखा है कि नंगे सर नमाज़ हो जाती है, सहाबा-ए-किराम से जवाज़ मिलता है मगर बतौर फैशन लापरवाही और तअस्सुब की बिना पर मुस्तक़िल के लिए यह आदत बना लेना जैसा कि आज कल धड़ल्ले से किया जा रहा है हमारे नज़दीक सही नहीं है। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने खुद यह अमल नहीं किया। (मजल्ला अहले हदीस सुहदरा, पाकिस्तान जिल्द 15 शुमारा 22, बहावाला किताब “टोपी व पकगड़ी से या नंगे सर नमाज़”)
अहले हदीस आलिम मौलाना सैयद मोहम्मद दाउद गज़नवी ने लिखा है कि सर आज़ाए सतर में से नहीं है, लेकिन नमाज़ में सर नंगे रखने के मसअला को इस लिहाज़ से बल्कि आदाबे नमाज़ के लिहाज़

से देखना चाहिए और आगे कंधों को ढांकने पर दलालत करने वाली बुखारी व मोअत्ता इमाम मालिक की रिवायत और मोअत्ता की शरह ज़रकानी (व तमहीद), इब्ने अब्दुल बर, बुखारी की शरह फतहुल बारी, ऐसे ही शैखुल इस्लाम इमाम इब्ने तैमिया की किताबुल अखयारात और इमाम इब्ने क़ुदामा की अलमुगनी से तसरीहात व इक़तिबासात नक़ल करके साबित किया है कि कंधे भी अगरचे आज़ाए सतर में से नहीं हैं, इसके बावजूद नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक कपड़ा होने की शकल में नंगे कंधों से नमाज़ पढ़ने से मना फरमाया है। इसी तरह सर भी अगरचे आज़ाए सतर में से न सही लेकिन आदाबे नमाज़ में से यह भी एक अदब है कि बिला वजह नंगे सर नमाज़ न पढ़ी जाए और इसे ही ज़ीनत का तकाज़ा क़रार दिया है। इब्तिदाए अहदे इस्लाम को छोड़ कर जब कि कपड़ों की क़िल्लत थी उसके बाद इस आजिज़ की नज़र से कोई ऐसी रिवायत नहीं गुज़री जिसमें सराहतन मज़कूर हो कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने या सहाबा-ए-किराम ने मस्जिद में और वह भी नमाज़ बाजमाअत में नंगे सर नमाज़ पढ़ी हो, चेजाएकि मामूल बना लिया हो। इस रस्म को जो फैल रही है बन्द करना चाहिए। अगर फैशन की वजह से नंगे सर नमाज़ पढ़ी जाए तो नमाज़ मकरूह होगी। (फतावा उलमाए अहले हदीस, जिल्द 4 पेज 290-291, बहावाला किताब टोपी व पकगड़ी से या नंगे सर नमाज़)

एक दूसरे अहले हदीस आलिम मौलाना मोहम्मद इसमाइल सलफी ने लिखा है कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम, सहाबा-ए-किराम और अहले इल्म का तरीक़ वही है जो अब तक मसाजिद में

मुतवारिस है और मामूल बिहा है। कोई मरफू हदीस सही मेरी नज़र से नहीं गुज़री जिससे नंगे सर नमाज़ की आदत का जवाज़ साबित हो, खुसूसन बाजमाअत फराएज़ में बल्कि आदत मुबारक यही थी कि पूरे लिबास से नमाज़ अदा फरमाते थे। सर नंगा रखने की आदत और बिला वजह ऐसा करना अच्छा काम नहीं है। यह काम फैशन के तौर पर रोज़ बरोज़ बढ़ रहा है और यह भी नामुनासिब है। अगर लतीफ हिस से तबीअत महरूम न हो तो नंगे सर नमाज़ वैसे ही मकरूह मालूम होती है। ज़रूरत और इज़तिरार का बाब इससे अलग है। (फतावा उलमाए अहले हदीस, जिल्द 4 पेज 286-289, बहावाला किताब टोपी व पकगड़ी से या नंगे सर नमाज़)

सउदी अरब के तमाम शैख का फतवा भी यही है कि टोपी नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत और तमाम मुहद्दिसीन व मुफस्सेरीन व उलमा व सालेहीन का तरीक़ा है, नीज़ टोपी पहनना इंसान की ज़ीनत है और क़ुरान करीम (सूरह आराफ 31) की रौशनी में नमाज़ में ज़ीनत मतलूब है, लिहाज़ा हमें टोपी पहन कर ही नमाज़ पढ़नी चाहिए। यह फतावे सउदी अरब के शैख की वेबसाइट पर पढ़े और सुने जा सकते हैं। सउदी अरब की मौजूदा हुकूमत के निज़ाम के तहत किसी भी हुकूमत के दफ्तर में किसी भी सउदी बाशिन्दा का मामला उसी वक़्त क़बूल किया जाता है जबकि वह टोपी और रुमाल के ज़रिये सर ढांककर हुकूमत के दफ्तर में जाए। सउदी अरब के खास और आम का मामूल भी यही है कि वह आम तौर सर ढांक कर ही नमाज़ अदा करते हैं।

(पहला नुक्ता)

इन दिनों उम्मते मुस्लिमा की एक छोटी सी जमाअत हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु की एक हदीस को बुनियाद बना कर नंगे सर नमाज़ पढ़ने की बज़ाहिर तरगीब देने लगती है "नबी अकरम सल्लललाहु अलैहि वसल्लम कभी कभी अपनी टोपी उतार कर उसे अपने सामने बतौर सुतरा रख लेते थे।" (इब्ने असाकिर) इस हदीस से दर्जे ज़ैल असबाब की बिना पर नंगे सर नमाज़ पढ़ने की किसी भी फज़ीलत पर इस्तिदलाल नहीं किया जा सकता है।

1) यह रिवायत ज़ईफ है नीज़ इस रिवायत को ज़िक्र करने में इब्ने असाकर अकेले हैं यानी हदीस की मशहूर व मारूफ किसी किताब में भी यह हदीस मज़कूर नहीं है।

2) और अगर "अला वजहित तनज़्ज़ुल" इस रिवायत को सही मान भी लिया जाए तब भी यह मुतलक नंगे सर नमाज़ पढ़ने के जवाज़ के लिए दलील नहीं बन सकती, बल्कि इस हदीस के ज़ाहिरी अल्फाज़ बता रहे हैं कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ऐसा एक अहम ज़रूरत के वक़्त किया, जब ऐसी कोई चीज़ मुयस्सर न आई जिसे बतौर सुतरा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने सामने रख लेते और अहादीस में सुतरा की काफी अहमियत आई है। इस हदीस से ज़्यादा से ज़्यादा यह साबित हो सकता है कि मर्द हज़रात के लिए नमाज़ में टोपी या अमामा से सर का ढांकना वाजिब नहीं है जिस पर उम्मते मुस्लिमा मुत्तफिक़ है।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से नंगे सर सिर्फ हज या उमरह के इहराम की सूरत में ही नमाज़ पढ़ना साबित है। रहा कोई

चीज़ न मिलने की वजह से सुतरा के लिए अपने आगे टोपी का रखना तो पहली बात यह अमल आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दूसरे अहम हुकुम को पूरा करने के लिए किया। दूसरी बात इस हदीस में इसका ज़िक्र नहीं कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने नंगे सर नमाज़ पढ़ी। मुमकिन है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ऊंची वाली टोपी जो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सफर में पहनते थे इसको सुतरा के तौर पर इस्तेमाल किया हो और अमामा या सर से चिपकी हुई टोपी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सर पर हो, क्यूंकि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दो या तीन क़िस्म की टोपी का तज़किरा अहादीस व सीरत व तारीख की किताबों में आता है।

इस हदीस के अलावा इब्ने असाकिर में वारिद एक मक़ूला से भी इस छोटी से जमाअत ने इस्तिदलाल किया है "मसाजिद में नंगे सर आओ और अमामा बांध कर आओ, बेशक अमामा तो मुसलमानों का ताज हैं" लेकिन मुहद्दिसीन ने इस मक़ूला को हदीस नहीं बल्कि मौज़ू व मदघड़त बात शुमार किया है और अगर यह मक़ूला हदीस मान भी लिया जाए तो इसका बुनियादी मक़सद यही है कि हमें मस्जिद में अमामा बांधकर आना चाहिए।

(दूसरा नुक्ता)

बाज़ हज़रात टोपी का इस्तेमाल तो करते हैं, मगर उनकी टोपियां पुरानी, बोसीदा और काफी मैली नज़र आती हैं। हम अपने लिबास व मकान और दूसरी चीजों पर अच्छी खासी रक़म खर्च करते हैं, मगर टोपियां पुरानी और बोसीदा ही इस्तेमाल करते हैं। मेरे अज़ीज़ भाई!

सर को ढांकना ज़ीनत है जैसाकि मुफस्सेरीन व मुहद्दिसीन व उलमा ने किताबों में लिखा है और नमाज़ में अल्लाह तआला के हुकुम के मुताबिक़ ज़ीनत मतलूब है, नीज़ टोपी या अमामा का इस्तेमाल इस्लामी शेआर है, इससे आज भी मुसलमानों की पहचान होती है, लिहाज़ा हमें अच्छी व साफ सुथरी टोपी का ही इस्तेमाल करना चाहिए।

(तीसरा नुक्ता)

नमाज़ के वक़्त अमामा या टोपी पहननी चाहिए, लेकिन अमामा या टोपी पहनना वाजिब नहीं है, लिहाज़ा अगर किसी शख्स ने अमामा या टोपी के बेगैर नमाज़ शुरू कर दी तो नमाज़ पढ़ते हुए उस शख्स पर टोपी या रुमाल वगैरह नहीं रखना चाहिए, क्यूंकि इसकी वजह से आम तौर पर नमाज़ी की नमाज़ से तवज्जोह हटती है (चाहे थोड़े वक़्त के लिए ही क्यूं न हो) अलबत्ता नमाज़ शुरू करने से पहले उसको अमामा या टोपी पहनने की तरगीब देनी चाहिए।

(खुलासा कलाम)

अमामा या टोपी नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत है (क्यूंकि अहादीस व सीरत व तारीख की किताबों में जहां जहां भी आम ज़िन्दगी के मुतअल्लिक़ नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सर पर कपड़े होने या न होने का ज़िक्र आया है आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सर पर अमामा या टोपी का तज़किरा 99 फीसद वारिद हुआ है) सहाबा, ताबेईन, तबे ताबेईन, मुहद्दिसीन, फुक़हा और उलमा-ए-किराम अमामा या टोपी का इस्तेमाल फरमाते

थे, नीज़ हमेशा से और आज भी यह मुसलमानों की पहचान है। लिहाज़ा हम सबको अमामा या टोपी या सिर्फ टोपी का इस्तेमाल हर वक़्त करना चाहिए। अगर हर वक़्त टोपी पहनना हमारे लिए दुशवार हो तो कम से कम नमाज़ के वक़्त टोपी लगा कर ही नमाज़ पढ़नी चाहिए। नंगे सर नमाज़ पढ़ने से नमाज़ अदा तो हो जाएगी, मगर फुक़हा व उलमा की एक बड़ी जमाअत की राय है कि नंगे सर नमाज़ पढ़ने की आदत बनाना सही नहीं है, हत्ताकि बाज़ फुक़हा व उलमा ने बहुत सी अहादीस, हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु जैसे जलीलु क़दर सहाबी का अपने शागिर्द हज़रत नाफे को तालीम और सहाबा-ए-किराम के ज़माना से उम्मते मुस्लिमा के मामूल की रौशनी में नंगे सर नमाज़ पढ़ने को मकरूह क़रार दिया है, जिनमें से शैख नोमान बिन साबित इमाम अबू हनीफा और शैख नासिरुद्दीन अलबानी का नाम क़ाबिले ज़िक्र है। आखिरुज़ ज़िक्र शैख अलबानी साहब का तज़किरा इस वजह से किया गया है कि इन दिनों जो हज़रात नंगे सर नमाज़ पढ़ने की बात करते हैं उनमें से बाज़ आम तौर पर अहकाम व मसाइल में शैख नासिरुद्दीन अलबानी के अक़वाल को हर्फे आखिर समझते हैं। नंगे सर नमाज़ के मुतअल्लिक़ उन्होंने वाज़ेह तौर पर लिखा है और उनके अक़वाल कैसिटों में रिकार्ड हैं कि नंगे सर नमाज़ पढ़ना मकरूह है।

हम हिन्द व पाक के रहने वाले सउदी अरब में मुक़ीम आम तौर पर फैशन की वजह से टोपी के बेगैर नमाज़ पढ़ते हैं, हालांकि सउदी अरब में 12,13 के क़याम के दौरान मैंने किसी भी सउदी आलिम या खतीब या मुफ्ती या मुस्तक़िल इमाम को सर खोल कर नमाज़ पढ़ते या खुतबा देते हुए नहीं देखा, बल्कि उनको हमेशा सर ढांकते हुए ही

देखा। न सिर्फ खास बल्कि सउदी अरब की अवाम भी आम तौर पर सर ढांक ही नमाज़ अदा करती है।

(वज़ाहत)

यह मज़मून सिर्फ मर्द हज़रात के सर ढांकने के मुतअल्लिक़ लिखा गया है, रहा औरतों के सर ढ़ांकने का मसअला तो उम्मते मुस्लिमा मुत्तफिक़ है कि औरतों के लिए सर ढांकना ज़रूरी है, इसके बेगैर उनकी नमाज़ ही अदा नहीं होगी।

हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शान में गुस्ताखी नाकाबिले बर्दाश्त

हिन्दु महासभा के लीडर के जरिया सैयदुल बशर व नबियों के सरदार हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के खिलाफ गुस्ताखाना कलेमात कहे जाने पर उसको जुर्म के कठहरे में खड़ा करके उसके खिलाफ कार्यवाही की जानी चाहिए, क्योंकि मुसलमान हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शान में गुस्ताखी को बर्दाश्त नहीं कर सकते हैं और इस तरह के वाकयात से मुल्क में अमन व अमान के बजाये अफरातफरी, अदमे रवादारी और अदमे तहम्मुल में इजाफा होगा, जिससे मुल्क में तरक्की के बजाये अदमे इस्तिहकाम पैदा होगा, लोगों में नफरत और अदावत पैदा होगी।

पूरी दुनिया के अरबाब इल्म व दानिश का मौकिफ है कि किसी शख्स की तौहीन व तहकीर का राय की आजादी से कोई तअल्लुक नहीं है, क्योंकि तकरीबन हर मुल्क में शहरियों को यह हक हासिल है कि वह अपनी हितक इज्जत की सूरत में अदालत से रुजू करें और हितक इज्जत करने वालों को कानून के मुताबिक सजा दिलवायें। सवाल यह है कि किसी शख्स की हितक इज्जत करने वाले को कानूनन मुजरिम तसलीम किया जाता है, तो मजाहिब के पेशवाओं और खास तौर पर अंबिया-ए-कराम के लिए यह हक क्यों तसलीम नहीं किया जा रहा है और मजहबी रहनुमाओं की तौहीन व तहकीर को राय की आजादी कह कर जराएम की फेहरिस्त से निकाल कर हूकूक की फेहरिस्त में कैसे शामिल किया जा रहा है? यह आजादी राय नहीं बल्कि सिर्फ और सिर्फ इस्लाम मुखालिफ तंजीमों और हुकूमतों की इंतिहा पसंदी और फिक्री दहशतग्रदी है।

इस्लाम ने हमेशा दुनिया में अमन व सलामती कायम करने की ही दावत दी है। जिसकी जिन्दा मिसाल हिन्दुस्तान के अहवाल हैं कि मुख्तलिफ हिन्दु तंजीमें मुल्क के अमन व अमान को नेस्त व नाबूद करने पर तुली हैं मगर मुसलमान अपने जज्बात पर काबू रख कर यही कोशिश कर रहा है कि मुल्क में चैन और सुकून बाकी रहे।

पूरी उम्मते मुस्लिमा मुत्तफिक है और दूसरे मजाहिब भी इसकी तायीद करते हैं कि हजरात अम्बिया-ए-कराम की तौहीन व तहकीर संगीन तरीन जुर्म है। इसलिए कि इसमें मजहबी पेशवाओं की तौहीन के साथ साथ उनके करोड़ों पैरूकारों के मजहबी जज्बात को मजरूह करने और अमन व अमान को खतरे में डालने के जराएम भी शामिल हो जाते हैं जिससे इस जुर्म की संगीनी में बेपनाह इजाफा हो जाता है। कुरान व सुन्नत और दूसरे मजाहिब में इसकी सजा मौत ही बयान की गई है क्योंकि इससे कम सजा में न हजरात अम्बिया-ए-कराम के इहतिराम के तकाजे पूरे होते हैं और न ही उनके करोड़ों पैरूकारों के मजहबी जज्बात की जायज हद तक तसकीन हो पाती है।

हाँ! यह बात मुसल्लम है कि मौत की सजा देने की आथोरिटी सिर्फ हूकूमत वक्त को ही हासिल है क्योंकि आम आदमी के कानून को हाथ में लेने से मुआशरा में लाकानूनियत और अफरातफरी को ही फरोग मिलेगा। लिहाजा हूकूमत वक्त की जिम्मेदारी है कि तौहीन व तहकीर के अमल को संगीन जुर्म करार देकर मुजरिमों के खिलाफ जरूरी कार्यवाई करे।

उम्मते मुस्लिमा का इत्तिफाक है कि हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शान में गुस्ताखी करने वाले शख्स को कतल

किया जायगा। अल्लामा इबने तैमिया ने 3 जिल्दों पर मुशतमिल अपनी किताब में इस मौजू पर कुरान व हदीस के दलाएल की रौशनी में तफसीली बहस की है। गिलाफे काबा से लिपटे हुए तौहीने रिसालत के मुरतकिब को कतल करने का हूकूम हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दिया। हजरत अनस रजी अल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि फतहे मक्का के दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मक्का में तशरीफ फरमा थे। किसी ने अर्ज किया (आपकी शान में तौहीन करने वाला) इबने खत्तल काबा के परदों से लिपटा हुआ है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया उसे कतल कर दो। (सही बुखारी) यह अब्दुल बिन खत्तल मुरतद था जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हिजू में शेर कह कर हूजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शान में तौहीन करता था। उसने दो गाने वाली लौंडियाँ इसलिए रखी हुई थी कि वह हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हिजू में अशआर गाया करें। जब हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसके कतल का हूकूम दिया तो उसे गिलाफे काबा से बाहर निकाल कर बांधा गया और मस्जिदे हराम में मकामे इब्राहिम और जमजम के कुऐं के दरमयान उसकी गरदन उड़ा दी गई। (फतहुल बारी) उस दिन एक साअत के लिए हरमे मक्का को हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए हलाल करार दिया गया था। मस्जिदे हराम में मकामे इब्राहिम और जमजम के कुऐं के दरमयान यानी बैतुल्लाह से सिर्फ चंद मीटर के फासला पर उसको कतल किया जाना इस बात की दलील है कि गुस्ताखे रसूल बाकी मुरतदीन से बदरे जहां बदतर बद हाल है।

पूरी इंसानियत को यह भी अच्छी तरह मालूम होना चाहिए कि हर मुसलमान के दिल में हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मोहब्बत दुनिया की हर चीज से ज्यादा है क्योंकि शरीअते इस्लामिया की तालिमात के मुताबिक हर मुसलमान का हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आपकी सुन्नतों से मोहब्बत करना लाजिम और जरूरी है। नीज हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जिन्दगी में ऐसी औसाफे हमीदा बयक वक्त मौजूद थीं जो आज तक न किसी इंसान की जिन्दगी में मौजूद रही हैं और न ही उन औसाफे हमीदा से मुत्तसिफ कोई शख्स इस दुनिया में आयेगा। आपकी चंद सिफात यह हैं।

इज्ज व इंकिसारी, अफव दर गुजर, हमसायों का ख्याल, लोगों की खिदमत, बच्चों पर शफकत, औरतों का इहतिराम, जानवरों पर रहम, अदल व इंसाफ, गुलाम और यतीम का ख्याल, शुजाअत व बहादुरी, इस्तिकामत, जुहद व किनाअत, सफाई मामलात, सलाम में पहल, सखावत व फैयाजी, मेहमान नवाजी।

हजरत अनस रजी अल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया तुममें से कोई उस वक्त तक कामिल मोमिन नहीं हो सकता जब तक मैं उसको अपने बच्चों, अपने मां बाप और सब लोगों से ज्यादा महबूब न हो जाऊं। (सही मुस्लिम व बुखारी) एक मरतबा हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हजरत उमर रजी अल्लाहु अन्हु का हाथ पकड़े हुए थे। हजरत उमर रजी अल्लाहु अन्हु ने अर्ज किया या रसूलुल्लाह! आप मुझे हर चीज से ज्यादा अजीज हैं सिवाए मेरी अपनी जान के। हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया नहीं, उस जात

की कसम जिसके कब्जा में मेरी जान है (ईमान उस वक्त तक पूरा नहीं हो सकता) जब तक मैं तुम्हें अपनी जान से भी ज्यादा अजीज न हो जाऊं। हजरत उमर रजी अल्लाहु अन्हु ने अर्ज किया वल्लाह! अब आप मुझे मेरी अपनी जान से भी ज्यादा अजीज हैं। हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया उमर! अब बात हुई। (सही बुखारी)

हिन्दुस्तान की मौजूदा सूरते हाल को सामने रख कर मैं तमाम मुस्लमानों से यही दरखास्त करता हूं कि अपने जज्बात को काबू में रख कर हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तालिमात को अपनी अम्ली जिन्दगी में लायें और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पैगाम को दूसरों तक पहुंचाने में अपनी सलाहियतें लगायें।

नबी बनाये जाने से लेकर वफात तक आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बेशुमार तकलिफें दी गईं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ऊपर ऊंटनी की ओझड़ी डाली गई। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ऊपर घर का कूडा डाला गया। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को काहिन, जादुगर और मजनु कह कर मजाक उड़ाया गया। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बेटियों को तलाक दी गई। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का तीन साल तक बायेकाट किया गया। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर पत्थर बरसाये गये। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अपना शहर छोड़ना पड़ा। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जंगे उहद के मौका पर जख्मी किए गए। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को जहर दे कर मारने की कोशिश की गई। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कभी एक दिन में दोनों वक्त पेट भर कर खाना नहीं खाया। आप

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भूक की शिद्दत की वजह से अपने पेट पर दो पत्थर बांधे। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के घर में दो दो महीने तक चुल्हा नहीं जला। आप सल्लल्लाहु अलैहि के ऊपर पत्थर की चट्टान गिरा कर मारने की कोशिश की गई। हजरत फातिमा रजी अल्लाहु अन्हा के सिवा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सारी औलाद आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने वफात हुई। गर्जकि सैयदुल अम्बिया व सैयदुल बशर को मुख्तलिफ तरीकों से सताया गया मगर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कभी सबर का दामन नहीं छोड़ा। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रिसालत की अहम जिम्मेदारी को इस्तिकामत के साथ बहुसन खुबी अंजाम देते रहे, हमें इन वाक्यात से यह सबक लेना चाहिए कि घरैलू या मूल्की या आलमी सतह पर जैसे भी हालात हमारे ऊपर आयें हम उनपर सबर करें और अपने नबी के नकशे कदम पर चलते हुए अल्लाह से अपना तअल्लुक मजबूत करें।

लेखक का परिचय

मौलाना डाक्टर मोहम्मद नजीब क़ासमी का तअल्लुक़ सम्भल (यूपी) के इल्मी घराने से है, उनके दादा मशहूर मुहद्दिस, मुक़र्रिर और स्वतंत्रता सेनानी **मौलाना मोहम्मद इसमाईल सम्भली** (रह) थे जिन्होंने मुख्तलिफ मदरसों में तक़रीबन 17 साल बुखारी शरीफ का दर्स दिया, जबकि उनके नाना मुफ्ती मुशर्रफ हुसैन सम्भली (रह) थे जिन्होंने मुख्तलिफ मदरसों में इफता की ज़िम्मेदारी निभाने के साथ साथ बुखारी व हदीस की दूसरी किताबें भी पढ़ाईं।

डाक्टर नजीब क़ासमी ने इब्तिदाई तालीम सम्भल में ही हासिल की, चुनांचे मिडिल स्कूल पास करने के बाद अरबी तालीम का आगाज़ किया। इसी बीच 1986 में यूपी बोर्ड से हाई स्कूल भी पास किया। 1989 में दारुल उलूम देवबन्द में दाखिला लिया। दारुल उलूम देवबन्द के क़याम के दौरान यूपी बोर्ड से इन्टरमीडिएट का इमतिहान पास किया। 1994 में दारुल उलूम देवबन्द से फरागत हासिल की। दारुल उलूम देवबन्द से फरागत के बाद जामिया मिल्लिया इस्लामिया, दिल्ली से B.A (Arabic) और तरजुमे के दो कोर्स किए, उसके बाद दिल्ली यूनिवार्सिटी से M.A. (Arabic) किया।

जामिया मिल्लिया इस्लामिया, दिल्ली के अरबी विभाग की जानिब से मौलाना डाक्टर मोहम्मद नजीब क़ासमी को "अल जवानिबुल अदबिया वल बलागिया वल जमालिया फिल हदीसिन नबवी" यानी हदीस के अदबी व बलागी व जमाली पहलू पर दिसम्बर 2014 में डाक्टरेट की डिग्री से सम्मानित किया गया। डाक्टर मोहम्मद नजीब क़ासमी ने प्रोफेसर डाक्टर शफीक अहमद खां नदवी भूतपूर्व सदर अरबी विभाग और प्रोफेसर रफीउल इमाद फायनान की अंतर्गत में

अरबी ज़बान में 480 पृष्ठों पर मुशतमिल अपना तहक़ीक़ी मक़ाला पेश किया। डाक्टर मोहम्मद नजीब क़ासमी ने बहुत सी किताबें उर्दू, हिन्दी और अंग्रेजी जबानों में तहरीर की है। 1999 से रियाज़ (सऊदी अरब) में बरसरे रोज़गार हैं। कई सालों से रियाज़ शहर में हज तरबियती कैम्प भी मुनअक़िद कर रहे हैं। उनके मज़ामीन उर्दू अख़बारों में प्रकाशित होते रहते हैं।

मौलाना डाक्टर मोहम्मद नजीब क़ासमी की वेब साइट (www.najeebqasmi.com) को काफी मक़बूलियत हासिल हुई है जिसकी मोबाइल ऐप (Deen-e-Islam) तीन जबानों (उर्दू, हिन्दी और अंग्रेजी) में है जिसमें मुख्तलिफ इस्लामी मौज़ूआत पर मज़ामीन के साथ उनकी किताबें और बयानात हैं।

हज व उमरह से मुतअल्लिक़ खुसूसी ऐप (Hajj-e-Mabroor) भी तीन ज़बानों (उर्दू, हिन्दी और अंग्रेजी) में है, जिन से सफर के दौरान हत्ताकि मक्का, मिना, मुज़दल्फा और अरफात में भी इस्तिफादा किया जा सकता है।

हिंदुस्तान और पाकिस्तान के मश्हूर उलमा, दीनी इदारों और मुख्तलिफ मदरसों ने दोनों Apps (दुन्या की पहली मोबाइल ऐपस) की ताईद में खुतूत तहरीर फरमा कर अवाम व खवास से दोनों Apps से फायदा उठाने की अपील की है।

http://www.najeebqasmi.com/
najeebqasmi@gmail.com
MNajeeb Qasmi - Facebook
Najeeb Qasmi - YouTube
Whatsapp: 00966508237446

First Islamic Mobile Apps on the world in 3 languages:
Deen-e-Islam & Hajj-e-Mabroor

AUTHOR'S BOOKS

IN URDU LANGUAGE:

حج مبرور، مختصر حج مبرور، حی علی الصلاۃ، عمرہ کا طریقہ، تحفۂ رمضان، معلومات قرآن، اصلاحی مضامین جلد ۱،
اصلاحی مضامین جلد ۲، قرآن وحدیث: شریعت کے دو اہم ماخذ، سیرت النبی ﷺ کے چند پہلو،
زکوٰۃ وصدقات کے مسائل، فیملی مسائل، حقوق انسان اور معاملات، تاریخ کی چند اہم شخصیات، علم وذکر

IN ENGLISH LANGUAGE:

Quran & Hadith - Main Sources of Islamic Ideology
Diverse Aspects of Seerat-un-Nabi
Come to Prayer, Come to Success
Ramadan - A Gift from the Creator
Guidance Regarding Zakat & Sadaqaat
A Concise Hajj Guide
Hajj & Umrah Guide
How to perform Umrah?
Family Affairs in the Light of Quran & Hadith
Rights of People & their Dealings
Important Persons & Places in the History
An Anthology of Reformative Essays
Knowledge and Remembrance

IN HINDI LANGUAGE:

क़ुरान और हदीस - इस्लामी आइडयोलॉजी के मैन सोर्स
सीरतुन नबी के मुख़्तलफि पहलू
नमाज़ के लिए आओ, सफलता के लिए आओ
रमज़ान - अल्लाह का एक उपहार
ज़कात और सदक़ात के बारे में गाइडैंस
हज और उमराह गाइड
मुख़्तसर हज्जे मबरूर
उमरह का तरीका
पारविारकि मामले क़ुरान और हदीस की रोशनी में
लोगों के अधकिार और उनके मामलात
महत्वपूर्ण वयक्ति और स्थान
सुधारात्मक निबंध का एक संकलन
इल्म और जिक्र

First Islamic Mobile Apps of the world in 3 languages
(Urdu, Eng.& Hindi) in iPhone & Android by Dr. Mohammad Najeeb Qasmi

DEEN-E-ISLAM HAJJ-E-MABROOR